

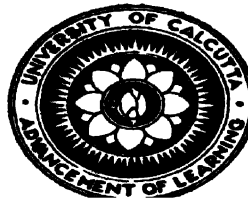
KĀVYĀDARŚA

SANSKRIT AND TIBETAN TEXTS

EDITED BY

ANUKUL CHANDRA BANERJEE, M.A

CALCUTTA UNIVERSITY



**PUBLISHED BY THE
UNIVERSITY OF CALCUTTA**

1939

Printed by
J. C. Sarkhel at the
CALCUTTA ORIENTAL PRESS Ltd.
9, Panchanan Ghosh Lane
CALCUTTA.

HUMBLY DEDICATED
TO
DR. SYAMAPRASAD MOOKERJEE,
M.A., B.L., D.LITT., M.L.A., BARRISTER-AT-LAW,
PRESIDENT,
COUNCIL OF POST-GRADUATE TEACHING IN ARTS,
IN TOKEN OF
ESTEEM AND GRATITUDE
OF THE EDITOR FOR THE KEEN PERSONAL
INTEREST ALWAYS EVINCED BY
HIM IN HIS TIBETAN STUDIES
AND RESEARCHES.

CONTENTS

Preface	...	xvii
---------	-----	------

CHAPTER I

	Sloka
मङ्गलाचरण (वग्ग'पैस'वह्ने'व)	1
वाक्प्रशंसा (क्खे'व'व'व'व'व')	3
काव्यप्रशंसा (क्ख'व'व'व'व'व')	5
दुष्टकाव्यनिन्दा (क्ख'व'व'व'व'व')	6
काव्यलक्षण (क्ख'व'व'व'व'व')	10
काव्यभेद (क्ख'व'व'व'व'व')	11
महाकाव्यलक्षण (क्ख'व'व'व'व'व')	14
गद्यकाव्यभेद (क्ख'व'व'व'व'व')	23
मिश्रकाव्यभेद (क्ख'व'व'व'व'व')	31
श्लेषगुण (क्ख'व'व'व'व'व')	41
श्लेषगुणलक्षण (क्ख'व'व'व'व'व')	43
प्रसादगुणलक्षण (क्ख'व'व'व'व'व')	45
समतागुणलक्षण (क्ख'व'व'व'व'व')	47

	Sloka
माधुर्यगुणलक्षण (स्त्रुव'व'श्रिद'यैव'द्व'चि' स'क'व'स)	51
अनुप्रास (द्वेस'सु'मिद)	55
यमक (त्रुद'द्व'द्व'व')	61
सौकुमार्यगुणलक्षण (श्रिद'द्व'व'लैव'व'श्रिद'यैव'द्व'चि' स'क'व'स)	69
अर्थव्यक्तिगुणलक्षण (द्वेव'व'स'द्व'यैव'द्व'चि' स'क'व'स)	72
उदारत्वगुणलक्षण (श्रु'क'द्व'श्रिद'यैव'द्व'चि' स'क'व'स)	76
ओजोगुणलक्षण (व'द्व'द्व'यैव'द्व'चि' स'क'व'स)	80
कान्तिगुणलक्षण (स'द्व'द्व'यैव'द्व'चि' स'क'व'स)	85
समाधिगुणलक्षण (द्विद'द्व'द्व'यैव'द्व'चि' स'क'व'स)	93
काव्यकारण (स्त्रुव'द्व'चि' श्रु)	103

CHAPTER II

अलङ्कारलक्षण (श्रु'चि' स'क'व'स)	1
स्वभावोक्ति (द्विद'व'लैव'द्व'चि')	8
उपमालक्षण (द्विद' स'क'व'स)	14
धर्मोपमा (द्वेस'चि' द्वि)	15
वस्तूपमा (द्वेस'द्व'चि' द्वि)	16
विपर्यासोपमा (व'द्व'चि' द्वि)	17

CONTENTS

vii

Sloka

अन्योन्योपमा (यङ्कुङ्गदये)	
नियमोपमा (देस'प'ङ्गि'दये)	19
अनियमोपमा (देस'सिङ्गदये)	20
समुच्चयोपमा (वसुन्धरा'पदि' दये)	21
अतिशयोपमा (सिङ्ग'प'दये)	22
उत्प्रेक्षितोपमा (र'प'वङ्ग'प'दये)	23
अद्भुतोपमा (सङ्ग'प'दये)	24
मोहोपमा (सङ्ग'प'दये)	25
संशयोपमा (स'सङ्ग'दये)	26
निर्णयोपमा (देस'प'दये)	27
श्लेषोपमा (सङ्ग'प'दये)	28
समानोपमा (सङ्ग'प'दये)	29
निन्दोपमा (सङ्ग'प'दये)	30
प्रशंस्तोपमा (वसुन्धरा'पदि' दये)	31
आचिन्त्यालोपमा (सङ्ग'प'दये)	32
विरोधोपमा (र'प'वङ्ग'प'दये)	33
प्रतिषेधोपमा (र'प'वङ्ग'प'दये)	34

	Śloka
चटूपमा (षट्संघर्षे)	... 35
तत्त्वाख्यानोपमा (दैर्घ्यवर्द्धेयस्य)	... 36
असाधारणोपमा (घृष्टस्यैवस्य)	... 37
अभूतोपमा (घृष्टस्यैवस्य)	... 58
असम्भावितोपमा (श्रद्धास्यैवस्य)	... 39
बहुपमा (षट्संघर्षे)	... 40
विक्रियोपमा (कृष्णस्यैवस्य)	... 41
मालोपमा (श्लेषस्यैवस्य)	... 42
वाक्यार्थोपमा (व्याख्यास्यैवस्य)	... 43
प्रतिबस्तूपमा (श्लेषस्यैवस्य)	... 46
तुल्ययोगोपमा (षट्संघर्षस्यैवस्य)	... 48
हेतूपमा (हेतुस्यैवस्य)	... 50
उपमादोषविचार (दोषस्यैवस्य)	... 51
उपमादोषकशब्द (दोषस्यैवस्य)	... 57
रूपकलक्षण (वाक्यस्यैवस्य)	... 65
समस्तरूपक (वाक्यस्यैवस्य)	... 65
व्यस्तरूपक (वाक्यस्यैवस्य)	... 66

	Sloka
समस्तव्यस्यरूपक (गज्जगस'उर'वसुस'द'स'वसुस'प) ...	67
सकलरूपक (सप्र'द'ग'गज्जगस'उर) ...	69
अवयवरूपक (ठ'गस'गज्जगस'उर) ...	71
अवयविरूपक (ठ'गस'उर'गु' गज्जगस'उर) ...	72
एकाङ्गरूपक (य'य'य'गज्जगस'उर) ...	74
युक्तरूपक (द'ग'गस'प'स'य'य' गज्जगस'उर) ...	76
अयुक्तरूपक (दे'स'स'ग'ग'य'य' गज्जगस'उर) ...	77
विषमरूपक (स'स'ग'ग'य'य' गज्जगस'उर) ...	78
सविशेषणरूपक (प्र'य'य'य' य'य'गज्जगस'उर) ...	80
विरुद्धरूपक (द'ग'य'य'य'य' गज्जगस'उर) ...	82
हेतुरूपक (गु'य' गज्जगस'उर) ...	84
श्लिष्टरूपक (सु'य'य' गज्जगस'उर) ...	86
उपमाव्यतिरेकरूपक (द'य'य'य'य'य'य' गज्जगस'उर) ...	87
आक्षेपरूपक (सु'य'य' गज्जगस'उर) ...	90
समाधानरूपक (स'ग'ग'य'य' गज्जगस'उर) ...	91
रूपकरूपक (गज्जगस'उर'गु' गज्जगस'उर) ...	92
तत्त्वापह्नवरूपक (दे'ग'ग'य'य'य'य' गज्जगस'उर) ...	93

दीपक (गणन्यसुदे)	...	96
मालादीपक (श्वेतवर्णं गणन्यसुदे)	...	106
विरुद्धार्थदीपक (रत्नवर्णं रत्नं गणन्यसुदे)	...	108
एकार्थदीपक (रत्नं गणन्यसुदे)	...	110
त्रिरुद्धार्थदीपक (श्वेतवर्णं रत्नं गणन्यसुदे)	...	112
आवृत्तिभेद (वज्रवर्णं रत्नं)	...	115
आक्षेपभेद (रत्नं रत्नं रत्नं)	...	119
धर्माक्षेप (रत्नं रत्नं रत्नं)	...	127
धर्म्याक्षेप (रत्नं रत्नं रत्नं)	...	128
कारणाक्षेप (रत्नं रत्नं रत्नं)	...	130
कार्याक्षेप (रत्नं रत्नं रत्नं)	...	133
अनुवृत्त्याक्षेप (रत्नं रत्नं रत्नं)	...	134
प्रभुत्वाक्षेप (रत्नं रत्नं रत्नं)	...	136
अनादराक्षेप (रत्नं रत्नं रत्नं)	...	138
आशीर्वाचनाक्षेप (रत्नं रत्नं रत्नं)	...	140
पक्षक्षेप (रत्नं रत्नं रत्नं)	...	142
सावित्र्याक्षेप (रत्नं रत्नं रत्नं)	...	144

	Śloka
यत्नाक्षेप (འབད་པས་ འགོག་པ)	... 146
परवशाक्षेप (གཞན་དབང་ འགོག་པ)	... 148
उपायाक्षेप (ཐབས་ཀྱིས་ འགོག་པ)	... 150
रोषाक्षेप (ཁྲོ་བས་ འགོག་པ)	... 152
अनुकोशाक्षेप (སྤྱིང་ཇེས་ འགོག་པ)	... 154
अनुशयाक्षेप (འགྱུད་པས་ འགོག་པ)	... 156
संशयाक्षेप (ཐེ་ཆོས་ འགོག་པ)	... 158
श्लिष्टाक्षेप (སྦྲ་བས་ འགོག་པ)	... 160
अर्थान्तराक्षेप (རོན་གཞན་ འགོག་པ)	... 162
हेत्वाक्षेप (ཀུས་ འགོག་པ)	... 164
अर्थान्तरन्यास (རོན་གཞན་བཀོད་པ)	... 166
अर्थान्तरन्यासभेद (རོན་གཞན་བཀོད་པའི་ དབྱེ་བ)	... 167
व्यतिरेक (ཁྲོག་པ་ཅན)	... 177
एकव्यतिरेक (གཅིག་གི་ ཁྲོག་པ་ཅན)	... 178
उभयव्यतिरेक (གཉི་གའི་ ཁྲོག་པ་ཅན)	... 180
सश्लेषव्यतिरेक (སྦྲ་བ་ཅན་གྱི་ ཁྲོག་པ་ཅན)	... 182
साक्षेपसहेतुव्यतिरेक (འགོག་པ་ཅན་དང་གདན་ཆོག་ས་ ཀྱི་ ཁྲོག་པ་ཅན)	... 183

प्रतीयमानसादृश्यव्यतिरेक (ह्येवमन्वयः स्यात् स्यात् स्यात्)	...	186
सादृश्यव्यतिरेकभेद (स्यात् स्यात् स्यात्)	...	189
विभावना (स्यात् स्यात्)	...	196
समासोक्ति (स्यात् स्यात्)	...	202
समासोक्तिभेद (स्यात् स्यात्)	...	205
अपूर्वसमासोक्ति (स्यात् स्यात्)	...	210
अतिशयोक्ति (स्यात् स्यात्)	...	211
अतिशयोक्तिप्रशंसा (स्यात् स्यात्)	...	217
उत्प्रेक्षा (स्यात् स्यात्)	...	218
उत्प्रेक्षाव्यञ्जकशब्द (स्यात् स्यात्)	...	231
हेतुभेद (स्यात् स्यात्)	...	232
सूक्ष्म (स्यात्)	...	257
लेश (स्यात्)	...	262
क्रम (स्यात्)	...	270
प्रेयरसवदूर्जस्विलक्षण (स्यात् स्यात्)	...	272
पर्यायोक्त (स्यात्)	..	292

Sloka

समाहित (गुरुन्तु-धन-व)	295
उदात्त (गुरु-के)	297
अपहृति (वसुन्तु-दे-र)	301
श्लेष (सु-व)	306
श्लेषमंद (सु-व-दे-र-व)	311
विशेषोक्ति (सु-व-व-व-व-व)	320
तुल्ययोगिता (सु-व-व-व-व-व)	327
विरोध (सु-व-व)	330
अप्रस्तुतप्रशंसा (सु-व-व-व-व-व-व)	337
व्याजस्तुति (सु-व-व-व-व-व)	340
निदर्शन (सु-व-व-व-व-व)	345
सहोक्ति (सु-व-व-व-व-व)	348
परिवृत्ति (सु-व-व-व-व-व)	348
आशिसु (सु-व-व-व-व-व)	354
संसृष्टि (सु-व-व-व-व-व)	356
संसृष्टिभेद (सु-व-व-व-व-व-व)	357

	Sloka
•प्रकल्पिता (२५'५६'१५'१६)	... 101
नामान्तरिता (३६'५'६५'५'१६)	... 102
निवृत्ता (५६'५'५)	... 102
समानशब्द (६५'५'५)	... 103
संमूढ (६६'५'५)	... 103
परिहारिका (७६'५'५'५)	... 104
एकच्छन्ना (८६'५'५'५)	... 104
उभयच्छन्ना (९६'५'५'५)	... 105
संकीर्णा (१०६'५'५'५)	... 105
दोषविभाग (११६'५'५'५'५)	... 125
अपार्थ (१२६'५'५)	... 128
व्यर्थ (१३६'५'५)	... 131
एकार्थ (१४६'५'५'५)	... 135
ससंशय (१५६'५'५'५)	... 139
अपक्रम (१६६'५'५'५)	... 144
शब्दहीन (१७६'५'५'५)	... 148
यतिभ्रष्ट (१८६'५'५'५'५)	... 152

वृत्तभङ्ग (श्लेषः श्लेषः १११११)	...	156
विसन्धि (सङ्कलनः श्लेषः १११११)	...	159
देशकालकलालोकन्यायागमविरोध (प्रुल'द'दुस'द'श्रु'कुल'द'द'द'द'द')	...	162
देशविरोधोदाहरण (प्रुल'द'द'द'द'द'द'द')	...	165, 166
कालविरोधोदाहरण (दुस'द'द'द'द'द'द')	...	167, 168
कलाविरोधोदाहरण (श्रु'कुल'द'द'द'द'द')	...	170
लोकविरोधोदाहरण (द'द'द'द'द'द'द')	...	172
न्यायविरोधोदाहरण (द'द'द'द'द'द')	...	174, 175
आगमविरोधोदाहरण (प्रुल'द'द'द'द')	...	177, 178
देशविरोधगुण (प्रुल'द'द'द'द')	...	180
कालविरोधगुण (दुस'द'द'द'द')	...	181
कलाविरोधगुण (श्रु'कुल'द'द'द')	...	182
लोकविरोधगुण (द'द'द'द'द')	...	183
न्यायविरोधगुण (द'द'द'द')	...	184
आगमविरोधगुण (प्रुल'द'द'द')	...	185

PREFACE

It is not without a feeling of joy that I am offering in the following pages a new edition of the *Kāvyaḍarśa* of Daṇḍin. It is on the basis of a Tibetan manuscript, a portion of which was copied out by the late Rai Sarat Chandra Das Bahadur, C.I.E. I rejoiced not only to get hold of but to utilize Das's manuscript preserved in the University Tibetan Seminar. The *Kāvyaḍarśa* was translated into Tibetan by Śrīlakṣmīkara and Son. ston. Lo. tsā. ba and others in the great Sa-skya monastery of Western Tibet. It is collected in Tanjur, Mdo, Vol. Se of the Sde.dge. edition; Cordier, III, p. 465. This xylograph contains both the transliteration of the Sanskrit text in the Tibetan script as well as its Tibetan translation. The Sanskrit text presented in this volume is taken from this xylograph. It is compared with the Tibetan version. There is also an independent Tibetan commentary on the text by Mi. pham. dge. legs. rnam. rgyal. As it came into my hands when the printing of the present text neared its completion, it could not be utilized by me.

Of the different editions of the Sanskrit text of the *Kāvyaḍarśa* I have mainly used that of the Bibliotheca Indica, 1863.

The manuscript from which the xylograph was made appears to have been written by more than one hand; so there is a lack of uniformity in the xylograph. In order to give an idea of the method of transcribing the Sanskrit text adopted by the scribe I have followed him excepting some cases noted below.

In Buddhist Sanskrit texts at the end of a sentence *m* is generally changed to *anusvāra*. This is, however, not always found in the present work. The consonants after *r* are sometimes found doubled; e.g., I. 95 उद्गीरण् ; 103 मार्गः, II. 9 वरण्, 10 वृषिर्णतेक्षणः ; etc. Though such 'doubling of consonants is sanctioned by the rules of grammar, I have dispensed with it in this edition. Besides, there are several inaccuracies that have been corrected by me; e.g.

Chap. I. 30^a म्रि for म्रिस् ; 42^c एषां विपर्ययः for एषाम्बिपर्ययः ; 83^b बध्नन्त्योजस्विनीगिरः ; for बध्नन्त्योजस्विनीगिरः 90^a " ०पातधौत for ०पातःधोत.

Chap. II. 5^a उत्प्रेक्षा for उत्प्रेक्षो ; 6^a व्याज for व्यज ; 11^a बध्नन्नेषु for बध्नन्नेषु ; 14^d प्रपञ्चोयं for प्रपञ्चायं ; 20^a पद्मन्तावत् for षट्मन्तावत् ; 24^{a-b} पद्मं सुभ्रु for पद्मसुभ्रु ; 27^d निर्णयोपमा for निर्ल्लयोपमा ; 28^b सञ्ज for सञ्जस् ; 38^a प्रभासारः for प्रभासारं ; 47^a परिजातस्य for परिजातः ; 49^a रत्नायै for रात्नायै ; 49ⁱ सावलेपा for सावलेया ; 54^a सौभाग्यं for सौभग्यं ; 58^a संवादि for सम्बादि ; 81^a स्रग्द for स्रग्द ; 87^a रूपकद्वितयं for रूपकाद्वितयं ; 100^a दैवतर्धयः for देवतर्धयः ; 120^a पुष्पेः for पौष्पेः ; 152^c अयतापि for अयातापि ; 156^d सकलं वयः for सकलम्बयः ; 158^b किंवा for किम्बा ; 155^c ०संवादि for ०सम्बादि ; 165^a दिशान्येपि for दिशन्येपि ; 188^a ईन्द्राणस् for ईन्द्राणस् ; 234^c उद्दिष्टं for दृष्टं ; 274^b वृत्तिः for वृत्तिः ; 281^a स्'ल for स्'लस् ; 302^d मृगाणस् for मृगा ; 329^a मृगाक्षीणां for मृगाक्षीनान्.

Chap. III. 8^a किन्विदं for कीमिदं ; 23^a दशां for देशां ; 118ⁱ कलभाषिणि for कलभाषिणी ; 134^b म्रि for म्रिस् ; 174^{a-b} संस्कृताभङ्गः [सत्यमेवोदितोऽपि चेत्] for संस्कारभङ्गं सत्येन च क्षितादिवै ; 176^{a-b} गतिर्न्यायविरोधस्य सेवा सर्वज्ञ

दृश्यते for न्यायावपि च विरोधमादर्शिता यमल्यर्थ— which can in no way be supported. The Tibetan text supports the reading in the printed text, 176°.^d अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते for अथागमविरुद्धं ते प्रवेशावपि दर्शिताः— which does not give any suitable sense, nor is correct grammatically.

Sanskrit readings found in the Tibetan xylograph differ in many places from those known to us in the printed edition referred to; e.g.

Chap. I. 1° दीर्घं for नित्यं ; 2^b उपलक्ष्य for उपलभ्य ; 10^b अलंकारः for अलंकाराः ; 12° विविच्छृणां for त्रितीर्षूणां ; 13° अंश for अंग ; 15° आयत्तं for उपेतं ; 19^a सर्गान्तैः for वृत्तान्तैः ; 19^b रञ्जनं for रञ्जकं ; 20^b वर्ज्यते for दुष्यति ; 22^d कथनं for वर्णनं ; 25^a कारणं for लक्षणं ; 26^b साक्षात्त्वं for सोच्छ्वासत्वं ; 27^a आश्वासः for उच्छ्वासः ; 29^a न ते for नैते ; 32^a आप्ताः for आय्याः ; 36^b स्थितिः for स्मृताः ; 35° शास्त्रे for शास्त्रेषु ; 37^b स्कन्धकादि यत् for स्कन्धकादिकं ; 37° ओसरादीनि for आसारादीनि ; 38° कथादि for कथाहि ; 38^b पठ्यते for बध्यते ; 38° त्वाहुः for प्राहुः ; 39° शाम्यादि for शल्यादि ; 42^d लक्ष्यते for दृश्यते ; 49^a आननं for मुखं ; 50° वदते for वदधे ; 51^b स्थितः for स्थितिः ; 52° तद्रूपादि for तद्रूपाहि ; 53° तदा for ततः ; 54^d ईप्सितं for इष्यते ; 57^d कर्तुं for हन्तुं ; 63^a वैरस्यायैव कल्पते for वैरस्याय प्रकल्पते ; 67° परं for खरं ; 69° हि for तु ; 71^d मुखं for मनः ; 72° क्षपितः for क्षयितः ; 78° अन्यत् for अन्यत् ; 85^d विद्यते for दृश्यते ; 89^d यथा for जनाः ; 97^d मतो for स्मृतो ; 99° इह for इमे ; 99^a अन्यत् for अप्यत्.

Chap. II. 2° प्रतिस्कर्तुम् for परिसंस्कर्तुम् ; 3^d अथ for अन्यत् ; 6^a क्षिष्ट for श्लेष ; 7^b संछष्टिः for सङ्कीर्णम् ; 10° परिच्छिप्य for परिभ्रम्य ; 14^d प्रदर्यते

for निदर्श्यते ; 15^d प्रकाशनात् for प्रदर्शनात् ; 17^a त्वद् for तव ; 28^d मता for स्मृता ; 30ⁱ मता for स्मृता ; 31^d इष्यते for उच्यते ; 33^d उदिता for मता ; 40^d प्रथयन्ती for बोधयन्ती ; 42^d एव सा for मता ; 48^a समाह्वय for समीकृत्य ; 50^d स्मृता for मता ; 54^a इत्येवमादि for इत्येवमादौ ; 54^o च for एव ; 56^b त्वत् for तत् ; 60^b अन्यूनार्थवाचिनः for अन्यूनार्थवादिनः ; 62^a संरुन्धे for सन्धत्ते ; 64^d सादृश्यसूचिनः for सादृश्यसूचकाः ; 65^b इष्यते for उच्यते ; 71^a धर्म्माम्बु for धर्म्माम्भः ; 74^o सुग्धे for सुग्धः ; 75^b च for अपि ; 82^d पश्यति for कल्पते ; 97^o नवाय च नताङ्गीनां for स एवावनताङ्गीनां ; 100^d देवतर्धयः for दैवतर्धयः ; 105^a कर्णात्पलं for नीलोत्पलं ; 113^b अपि for तथा ; 114^o अनुगति for अवगति ; 115^b इत्यपि for एव च ; 116^b कुटजोङ्गमाः for कुटजद्रुमाः ; 117^b वर्ग for वृन्दं ; 117^o अद्य for एष ; 118^a अद्य for अत्र ; 128^d तत् नाश्रयः for न तदाश्रयः ; 129^o अत्र for एव and तद् for यद् ; 132^d न्वहं for न्विदं ; 137^a प्रत्याचक्ष्णाण्या for इत्याचक्ष्णाण्या ; 137^b विबन्धिनः for अनुबन्धिनः ; 137^d ईदृशः for उच्यते ; 144^d प्रतिबन्धिनः for परिपन्थिनः ; 145^d एकान्तरक्त्या for एवानुरक्त्या ; 146^b मत्प्रियं for त्वत्प्रियं and त्वत्प्रियैषिणी for मत्प्रियैषिणी ; 149^d उपसूचनात् for उपदर्शनात् ; 153^d निवार्यते for निषिध्यते ; 154^d जीर्णं for नीलं ; 161^o दर्शयित्वेति for दर्शयित्वेह ; 162^b तृप्यति for शाम्यति ; 163^b अयं निवर्त्यते for यन्निवार्यते ; 172^a आह्लादयति for आनन्दयति ; 180^d च्छविः for द्युतिः ; 182^o इयता for अयन्तु ; 182^d जलात्मा for जडात्मा ; 186^d सोनुविधीयते for सोप्यभिधीयते ; 190^d लोलदृष्टि for लोलनेत्रं ; 192^b वियदम्भसोः for चन्द्रहंसयोः ; 192^d चन्द्रहंसयोः for वियदम्भसोः ; 195^d अदर्शयत् for अदर्शयत् ; 197^o सूक्ष्म for शुद्ध ; 199^b हेतुकं for हेतुजं ; 207^o सच्छायः for सुच्छायः ;

215° अनुपपत्त्यैव for नोपपद्यते ; 215^d स्थितेः for स्थितिः ; 219^d उत्सुकः for उद्यतः ; 222° चैवन्तु for चेत्येवं ; 222^d कथ्यते for वार्यते ; 224^b जन्यते for जायते ; 226^d अनुन्मत्तो for उन्मत्तो ; 230^d उत्प्रेक्षित for उत्प्रेक्षत and इतीष्यते for इतीष्यतां ; 236^d मनोज्ञारोचके for मदनाग्न्यातुरे ; 240^b कृतां for स्थितां ; 243^d व्याक्रियन्ते for व्याहियन्ते ; 245^d आश्रये for आश्रमे ; 260° त्वदर्पित for मदर्पित ; 266^a एव for एष ; 276^d अनुगम्यतां for अवगम्यतां , 277° सैवावन्ती for सैषा तन्वी ; 283° देवी for तन्वी ; 291^a इति मुक्तः for एवमुक्त्वा ; 295^b दैवबलात् for दैववशात् ; 296^a तस्याः for अस्याः ; 296^b नमस्यतः for पतिष्यतः ; 300° अतिव्यक्तं for इति प्रोक्तं ; 302^d शीता किल for मयि शीता ; 304^b नाम नो for नामतो ; 311° वा for च ; 323^d कुलं for बलं ; 325^d जगज्जयं for नभस्तलं ; 326^d कल्प्यते for कल्पने ; 327^d स्मृता for मता ; 329^b अपि for च ; 335^d लोचनम् for लोचने ; 337^d अप्रकान्तेप्सिता for अप्रकान्तेषु या ; 344^d प्रविस्तरः for विस्तरः ; 346^a एव for एष ; 348° सह-भावस्य for सहभावेन ; 348^d यथा for स्मृता ; 349° पाण्डराः for पाण्डुराः ; 350^d अभ्रुभिः for अश्रुभिः ; 352^d निरूपणं for निदर्शनं ; 353^d पाण्डरं for पाण्डुरं ; 355^d कीर्तितं for दर्शितं ; 356^d संदृष्टिः कथ्यते पुनः for सङ्कीर्णान्तु निगद्यते ; 360^d यः स्थितः for संस्थितः.

Chap. III. 6^b साम्प्रतं for सत्पतिं ; 8^d किन्निवदं for किलु ते ; 21° वा for च ; 38^b ईप्सिताः for ईहिताः ; 41° आमोद for आनन्द ; 41^d न मे फलं किञ्चन for प्रयोजनं नास्ति हि ; 55^d तापनेन for तायनेन ; 63^d पिष्टपस्य for विष्टपस्य ; 80° आहुः for प्राहुः ; 111^d तायवो for वायवो ; 117^a जनं for नरं ; 119^b रुषा for क्रुधा ; 127^b च for वा ; 129^{a-b} सोयमहमद्य for देवैरहमस्मि ; 129^d ऐरावतः for ऐरावणः ; 132^a कुलं for बलं ; 132° न च ते कोपि for तव नैकोऽपि ; 137^a

अलङ्कृतिः for अलङ्किया ; 145^b अजाः for अमी ; 146¹ न दोषं सूरयो यथा for सूरयो नैव दूषणं ; 153¹ एष for एवं ; 156¹ यत्र for तत्र ; 158¹ वियुक्ता for विमुक्ता ; 158¹ मदनबाणा for स्मरस्य बाणा ; 158¹ मृगेक्षणा for वामेक्षणा ; 160¹ अस्मन्मनस्यपि for अस्मद्वपुष्यपि ; 161¹ न्यङ्ग for न्यस्तं ; 165^a अस्पर्शा for अमर्श ; 174^{a-b} सुगतैः संस्कृताभङ्गः [सत्यमेवोदितोऽपि चेत्] for सत्यमेवाह सुगतः संस्कारानविनश्वरान् ; 176^a प्रवेश उपदिश्यते for प्रस्थानमुपदिश्यते ; 184^b सकलः for सफलः and निष्कलः for निष्फलः ; 185^b कन्यका for पुत्रिका.

The differences between our readings of the text and those of Dr. F. W. Thomas (J R A S . , 1903, pp. 349-354) are noted below for comparison : —

Chap. I. 12° विविच्छूणां for तितीर्षूणां ; 13° अंश for अंग ; 20° उपात्तेषु सम्पत्तिः for उपात्तार्थसम्पत्तिः ; 60^b नियच्छति for निगच्छति ; 62° एनं for एतं ; 80^b एतद् for तद्.

Chap. II. 2° प्रतिसंस्कृत् for परिसंस्कृत् ; 10° परिच्छिप्य for परिचृत्य ; 62^a संरुन्धे for सन्धत्ते ; 64^a सूचिनः for सूचकः ; 82^a पश्यति for यस्यति ; 134° यातव्यं for याहि त्वं ; 142^a रन्ध्रावेक्षेण for रन्ध्रान्वेषण ; 148° त्वं for ते ; 149^a अस्त्यार्थस्य for तस्त्यार्थस्यैव ; 155^b सानुकोशमिबोत्पले for सानुकोशोऽयमाक्षेपः ; 182° इयता for अयं तु ; 197° सूक्ष्मान्बु for शुद्धाम्बु ; 255^a रागबालातपः for रविबालातपः ; 300° अतिव्यक्तं for प्रोक्तं ; 310^b यद् for यत्तु ; 343^a संसक्ता for संक्रान्ता ; 350^a अश्रुमिः for अश्रुमिः ; 364^a एष for एव.

Chap. III. 38^a वक्ष्यन्ते for बक्ष्यन्ते ; 41° आमोद for आनन्द ; 70° तस्यापि for तन्नापि ; 158° मदनबाणा for स्मरस्य बाणा.

With reference to the xylograph used by Dr. F. W. Thomas he himself observes that in some cases (viz. II. 155, 362, and III. 128) it is scarcely decipherable. Sometimes he has given the Tibetan readings only, and not also the Sanskrit ones; as for instance, II. 109, 118; III. 141.

There is a peculiar word in the Tibetan transliteration which should be noted here. In II. 116^b we read कुटजोङ्गमाः for कुटजदुम. It seems that *uṅgama* in *Kuṭajongama* is from Sanskrit *udgama* through Prakrit *uggama* owing to spontaneous nasalisation. Cf. *puṅgala* in Buddhist Sanskrit for *pudgala*. The word *udgama*, literally 'shooting forth' appears to mean 'a bud.'

Asterisks are put to indicate the difference between the two texts, Sanskrit and Tibetan. According to the printed Sanskrit text, one line in II. 56 and another in II. 65 are not to be found in the Tibetan xylograph, and consequently the number of the ślokas has differed in the two. Thus the śloka II. 65 in our text is II. 66 in the printed Sanskrit text, and so on. Again, ślokas II. 155, 156 and 362 are omitted in our xylograph. Discrepancy is also noticed in the arrangement of some of the ślokas; e.g. II. 156, 160 and 161 in our text are II. 161, 159 and 160 respectively in the printed text. Again according to the printed Sanskrit text, both the Sanskrit and Tibetan of a line in III. 161 are missing, but the Sanskrit has been adjusted in our text omitting the Tibetan and consequently there have been put some dots in the Tibetan portion to indicate the omission. In a rare instance, e.g., in śloka III. 64, the second line

in the xylograph stands as third, and the third line as second in the printed Sanskrit text.

Incidentally it may be observed here that the *Kāvyaḍarśa* is not the only Sanskrit text transliterated in Tibetan script; it is just one of the many. The study of the remaining works may prove equally useful and interesting.

Before concluding this preface, I have to fulfil the agreeable duty of acknowledging my indebtedness to Mahāmahopādhyāya Professor Viḍhushekhara Bhattacharya, Asutosh Professor of Sanskrit, Calcutta University, who initiated me into Tibetan Studies and has provided me with facilities for work in various ways. Thanks are due to Lama Lobzang Mingyur Dorje, Instructor in Tibetan, Calcutta University, for kindly revising the text in proofs. I must also thank my friends Mr Durgadas Mookerjee, M.A., and Mr Ajit Ranjan Bhattacharya, M.A., for their occasional assistance.

Lastly I must also express my thanks to Mr. J. C. Sarkhel, Manager, Calcutta Oriental Press and his staff who have never been found lacking in courtesies while this work was being seen through the press.

The University of Calcutta,
July, 1939.

ANUKUL CHANDRA BANERJEE

KĀVYĀDARŚA

७७ । । སློབ་དཔོན་ དབྱུག་པ་ཅན་གྱིས་ མཛད་པའི་
སྒྲིང་ག་མེ་ལོང་མ་ ཞེས་བྱ་བ་
སྐད་གཉིས་ཤན་སྦྱར་
བཞགས་སོ །

SANSKRIT AND TIBETAN TEXTS

[1b] नम आर्यमञ्जुश्रीकुमारभूताय

འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གཞིན་ནར་གྱར་པ་ལ་ ཕྱག་འཚལ་ལོ ༥

चतुमुखमुष्णाम्मोज्जनहसवधूमम ।

मानसे रमतां दीर्घं सव्यंशुक्ला सरस्वती ॥१॥

གདོང་བཞི་ གདོང་གི་ པད་ཚལ་གྱི །

ངང་པའི་ བྱ་མོ་ བམས་ཅད་དཀར །

དབྱངས་ཅན་མ་ མི་ ཁོ་ལོ་ཡི །

ཡིད་ལ་ རིང་དུ་ གནས་པར་མཛོད ༥ ༡

पूर्वशास्त्राणि संहृत्य प्रयोगानुपलक्ष्य च ।

यथासामर्थ्यमस्त्रामिः क्रियते काव्यलक्षणं ॥२॥

བསྐྱན་བཅོས་སྤྲ་མ་ནམས་ བསྐྱས་ཤིང་ །

སྟོར་བ་ནམས་ ཀྱང་ ཉེར་མཚོན་ ཏི །

ཇི་ལྟར་ནས་བཞིན་ བདག་གིས་ནི །

སྒྲུབ་པ་ དག་གི་ མཚན་ཉིད་བྱ ། ༢

इह शिष्टानुशिष्टानां शिष्टानामपि सर्व्वथा ।

वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्त्तते ॥३॥

འདི་ན་ ཀུན་ཏུ་ མཆོག་ནས་གྱིས །

ཇིས་སྒྲུབ་སྒྲུབ་ དང་ ལྷག་མའི་ཡང །

ཆོག་ནས་ཉིད་ ཀྱི་ རིན་གྱིས་ ནི །

འདི་ག་རྟེན་ལུགས་ལ་ འཇུག་པར་བྱེད ། ༣

इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायते भुवनत्रयं ।

यदि शब्दाद्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते ॥४॥

གལ་ཏེ་ སྒྲས་པོད་ སྒྲང་བ་ཡིས །

འཁོར་བ་ ལས་ལ་བར་མ་བྱས་ན །

འདི་ག་རྟེན་ལས་སྒྲས་པོ་ མཐའ་དག་ འདི །

སྒྲག་ཅུས་སྒྲུབ་བ་ཉིད་ཏུ་འགྱུར ། ༤

आदिराजयशोर्विम्बमाक्षं प्रप्य वाङ्मयं ।
तेषामसन्निधानेपि न स्वयमपश्य नश्यति ॥५॥

ཨོན་གྱི་གྲུ་པ་པོ་ ལྷགས་པའི་གཞུགས་ །
ངག་གི་རང་བཞིན་ མེ་ལང་ ཐོབ་ །
དེ་དག་ཉེ་བར་མི་གནས་ ཀྱང་ །
རང་ཉིད་ ཉམས་པ་མེད་ལ་ ཁྱོས་ ॥ ५

गौर्गौः कामदुघा सम्यक् प्रयुक्ता स्मर्यते बु[2a]धैः ।
दुष्प्रयुक्ता पुनर्गोत्वं प्रयोक्तुः सैव शंसति ॥६॥

མཁས་པས་ ཡང་དག་ རབ་སྤར་བའི་ །
ངག་ནི་ འདོད་འཛོའི་ བ་ཅ་ བཤད་ །
དེ་ཉིད་ ཉམས་པར་སྤར་ ཅ་ སྤར་ །
སྤོར་པོ་ བ་ལང་ཉིད་ བཛོད་བྱེད་ ॥ ६

तदल्पमपि नोपेक्ष्यं काव्ये दुष्टं कथञ्चन ।
स्याद्वपुः सुन्दरमपि भिन्नेनैकेन दुर्मगं ॥७॥

དེ་ཕྱིར་ ལྷན་ངག་ དག་ལ་ ལྷོན་ །
 རུང་བར་གྱར་ ཀྱང་ ཅི་ཞིག་ ལྷར་ །
 བཤང་སྒྲོམས་མི་བྱ་ ལུས་མཛེས་ཀྱང་ །
 ལྷོན་གཅིག་གིས་ནི་ སྐལ་ངན་འགྱུར་ ॥ ༧

गुणदोषानशास्त्रज्ञः कथं विभजते जनः ।
 किमन्यस्याधिकारोस्ति रूपभेदोपलब्धिषु ॥८॥

ལྷེ་བོ་ བལྟན་བཅོས་ མི་ཤེས་བས་ །
 ཡོན་ཏན་ ལྷོན་དག་ ཇི་ལྷར་དབྱེ་ །
 གཟུགས་ཀྱི་དབྱེ་བ་ དམིགས་པའི་སྐབས་ །
 ཡོང་བ་དག་ལ་ ཡོད་དམ་ཅི་ ॥ ༩

अतः प्रजानां व्युत्पत्तिमिमिसन्धाय सूरयः ।
 वाचां विवित्रमार्गाणां निबबन्धुः क्रियाविधिम् ॥९॥

དེ་ཕྱིར་ མཁས་པས་ལྷེ་དག་ནམས་ །
 བྱེ་བྲག་དྲིགས་ལ་ མངོན་དགོངས་ནས་ །

ནམ་བཀ་ལམ་ལྷན་ ཚོག་ནམས་ ཀྱི །

བྱ་བའི་ཚ་ག་ དེས་བར་སྦྱར ༥ ༩

तैः शरीरं च काव्यानामलंकारश्च दर्शितः ।

शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली ॥१०॥

དེ་དག་གིས་ནི་ ལྷན་ངག་གི །

ལུས་དང་ རྒྱན་ ཡང་ རབ་དུ་བསྦྱར །

ལུས་ ནི་ རེ་ཞིག་ འདོད་བ་ཡི །

དོན་གྱི་ནམ་བཅད་ ཚོག་གི་ སྤང་ ॥ ༡༠

पद्यं गद्यश्च मिश्रश्च तन्निधैव व्यवस्थितम् ।

पद्यञ्चतुष्पदी तच्च वृत्तं जानिरिति द्विधा ॥११॥

དེ་ཡང་ ཚོགས་བཅད་ ལྷུག་བ་ དང་ །

སྤེལ་མ་ ནམ་གསུམ་ ཉིད་དུ་ གནས །

ཚོགས་བཅད་ ཀྱང་བཞི་བ་ དེ་ཡང་ །

མྱོད་ རྩོད་ ཞེས་ ནམ་གཉིས ༥ ༡༡

छन्दोविचितां स[2b]कलस्तत्प्रपञ्चो निर्वर्तितः ।
सा विद्या नौर्विविधूणां गम्भीरं काव्यसागरं ॥१२॥

दे'यी'सु'स'प' सप्र'द'ग'के ।
सु'व'सु'र' म'ब्रु'द'रु' दे'स'प'र'व'सु'ज ।
दे'ग'दे' सु'ज'द'ग' कु'स'के'के ।
स'व'स'र' द'ब्रु'ग' द'दे'र' क'स'स' ग्री'गु ॥ १२

मुक्तकं कुलकङ्कषः संघात इति तादृशः ।
सर्गबन्धांशरूपत्वाद्युक्तः पद्यविस्तरः ॥१३॥

ग्री'स'प' द'द'के' दे'ग'स' द'द' स'दे'र' ।
द'दु'स'प' ले'स'गु' दे'द'द'यी ।
के'ग'स'प'ठ'द' कु'के' स'क'स' व'ठ'द'स ।
क'प'स' द'द'व'ले'के' सु'र' स'व'दे'र' ॥ १३

सर्गबन्धो महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणं ।
आशीर्नमयिकया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखः ॥१४॥

སཀས་ བཅོངས་པ་ ལྷན་ངག་ཆེ །

དེ་ཡི་ མཚན་ཉིད་ བཅོད་པར་བྱ །

ཤིས་ བཅོད་ ཕྱག་བྱ་ དངོས་པོ་ནི །

ངེས་པར་ བལྟན་བཤང་ དེ་ཡི་སྒྲོ་ ॥ ༡

इतिहासकथोद्भूतमितरह्य सदाश्रय' ।

चतुर्वर्गफलपयतं चतुरोदात्तभावक' ॥१५॥

སྒྲོན་བྱང་གདམ་ ལས་ བྱར་བཤམ ॥

ཅིག་ཤོས་ ལེགས་པ་ལ་ བདེན་པ །

མེ་བཞི་ འབྲས་བུའི་ དབང་གུར་ དང་ །

མཁས་ཤིང་ རྒྱ་ཆེའི་ འདྲེན་པ་ཅན ॥ ༡༥

नगरार्णवशीलर्तुचन्द्रार्कोदयवर्णनैः ।

उद्यानसलिलक्रीडामधुपानरतोत्सवैः ॥१६॥

གྲོང་ཁྱེར་ རྒྱ་མཚོ་ རི་དང་ ཏུས །

ཉི་ཁྲ་འཆར་བའི་ བཟླགས་པ་ དང་ ॥

སྒྲིང་ཆལ་ཅུ་ཡི་ རེལ་ཅེད་ དང་ །

ཆང་འཕྱང་ དགའ་བའི་ དགའ་སྟོན་དང་ ॥ १८

विप्रलम्भैर्विवाहेभ्यः कुमारोदयवृणनैः ॥

मन्त्रवृत्तप्रयाणाजिनायकान्युदयैरपि ॥१९॥

བསྐྱུ་བ་ དང་ནི་ བག་ས་ དང་ །

གཞོན་ནུ་སྒྲི་ དང་ འཕྲེལ་བ་ དང་ །

གྲོས་ དང་ སྟེ་ བགྲོད་པ་དང་ །

གཡུལ་དང་ འཕྲིན་པ་ དར་བས་ ཀྱང་ ། १९

अलंकृतमसंक्षिप्तं रसभावनिरन्तरं ।

सर्गे रमतिविस्तीर्णैः श्रव्यवृत्तैः सुसन्धिभिः ॥२०॥

བརྒྱན་པར་གྱུར་ཅིང་ མདོར་བསྐྱུས་ མིན་ །

ཉམས་དང་ འགྱུར་བ་ དག་གིས་ གདམ་ །

སག་གིན་དུ་ བྱ་ཆེ་ མིན་ །

མཉན་འེས་ སྒྲིང་ ལེགས་མཆམས་སྐྱར་ ॥ २०

निराकरणमित्येष मार्गः प्रकृतिसुन्दरः ॥२१॥

ཐོག་མར་ འདྲན་པ་ ཡོན་ཏན་ གྱིས།

ཉི་བར་ བཀོད་ནས་ དེ་ཡིས་ནི།

དག་ལ་ བཀོད་པ་བྱེད་ ཅིས་པའི།

ལམ་འདི་ རང་བཞིན་ མཛེས་པ་ ཡིན། ॥ २१

वंशवीर्यश्रुतादीनि वर्णयित्वा रिपोरपि ।

तज्जयाभायकोत्कर्षकथनञ्च धिनोति नः ॥२२॥

རིགས་ དང་ བཙོན་འགྲུས་ ཐོས་ རོགས་གྱིས།

དག་བོ་ལ་ ཡང་ བསྐྱབས་བྱས་ནས།

དེ་ལས་ རྒྱལ་བར་ འདྲན་པ་ ནི།

ཁྱད་འཕགས་ བཛྲོད་པ་འང་ བདག་ དགའ་སྦྱེས། ॥ २३

अपादपवसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा ।

इति तस्य प्रमेदौ द्वौ तयोराख्यायिका किल ॥२३॥

ཀང་པ་མེད་པའི་ ཚོག་རྒྱན་ ནི།

ལྷག་པ་ བཛྲོད་པ་ དག་ དང་ བཀྲམ།

ཞེས་པ་ དེ་ཡི་ རབ་དབྱེ་ གཉིས།

དེ་ཡ་འདྲིན་པ་ ཉིད་གྱིས་ ཅི། ॥ २३

नायकेनैव वाच्यान्या नायकेनेतरैर्वा ।

स्वगुणाविष्किया दोषो नात्र भूतार्थशंसिनः ॥२४॥

བཛྲོད་པར་བྱ་བ་ བཛྲོད་པ་ལོ།

གཞན་ནི་ འདྲིན་པ་འཇམ་ གཞན་ གྱིས་ ཀྱང་།

རང་གི་ ཡོན་ཏན་ བསྐྱབས་ སྟོན་ འདིར།

ཡང་དག་དོན་ བསྐྱབས་ ཡིར་ ཡོད་མིན་ ॥ २४

अपि त्वनियमो द्रष्टृस्तत्राप्यन्यैरुदीरणात् ।

अन्यो वक्ता[3b] स्वयं वेति कीदृशवा मेदकारणं ॥२॥

འོན་ཀྱང་ ཅིས་པ་ མ་མཐོང་ལྟ།

དེར་ཡང་ གཞན་གྱིས་ བཛྲོད་པ་འདི་ལྟར།

གཞན་གྱིས་བཛྲོད་ དེ་ རང་གིས་ ཞེས།

དབྱེ་བའི་ཆ་ ཅི་ ཅི་འད་ཞིག ॥ २५

वक्रज्वापरवक्रश्च साध्यासत्त्वश्च भेदकः ।
विह्वलाख्यायिकायाश्चेत्यसङ्गेन कथास्तपि ॥२६॥

གལ་ཏེ་ གློ་ དང་ གཞན་ གློ་ དང་ །
དབྱགས་ མཚམས་ བཅས་ཉིད་ བརྗོད་པ་ཡི་ །
ཐ་དད་པ་ཡི་ ཉགས་ ཡིན་ བ།
ཞུ་བྱིས་གདམ་ རྣམས་ དག་ལ་ཡང་ ॥ २७

आर्याद्विषयवेशः किं न वक्रज्वापरवक्रयोः ।
भेदश्च दृष्टो लम्भाद्विराभासो वास्तु किन्ततः ॥२७॥

འཕགས་ས་ སྟོགས་ བཞིན་ གློ་ དང་ནི་ །
གཞན་གྱི་གློ་ དག་ ཅིས་ མི་འཇུག་ །
ལྟ་ སྟོགས་སམ་ ཏུ་བྱ་སའ་ །
དབྱ་བ་ མཐོང་ཡང་དེ་ ལས་ཅི་ ॥ २८

तत्कथाख्यायिकेत्येका जातिः संज्ञाद्वयाद्भूता ।
तत्रैवान्तर्गविध्यन्ति शेषास्तथाख्यानजातयः ॥२८॥

དེ་ཕྱིར་ གཏམ་ དང་ བཟློང་པ་ ཞེས།
 མིང་ གཉིས་ དག་གིས་ རིགས་གཅིག་ མཚོན།
 ལྷག་མ་ བཟློང་པ་འི་ རིགས་ རྣམས་ ཀྱང་།
 འདི་ཉིད་ ནང་དུ་ འདུས་པར་ འགྱུར། ॥ ༣༤

कन्याहरणसंग्रामविप्रलम्भोदयादयः ।
 सर्गबन्धसमा एव न ते वैशेषिका गुणाः ॥२६॥

བྱ་མོ་འཕྲོག་ དང་ གཡུལ་ དང་ ནི།
 བསྐྱུ་བ་ དར་བ་ ལ་སོགས་པ།
 སུལ་ས་བཅིངས་པ་ མཚུངས་པ་ཉིད།
 དེ་དག་ ཟླད་བྱིད་ ཡོན་དན་ མིན། ॥ ༣༥

कविभावकृतं विह्वलमन्यत्रापि न द्रुप्यति ।
 मुष्णमिष्टार्थसंसिद्धौ किं हि न स्यात्कृतान्मनाम् ॥३०॥

ལྷན་ངག་མཁན་གྱི་ བསམ་བྱས་ རིགས།
 གཞན་དུ་ དང་ ནི་ ལྷན་མི་ འགྱུར།

འདོད་དོན་ གྲུབ་ལ་ གློ་ཅ་ ཉི །
 མཁས་པ་རྣམས་ལ་ ཅིས་ མི་འགྱུར ༥ ༣༠

मिथ्याणि नाटकादीनि तेषामन्यत्र विस्तरः ।
 गद्यपद्यमयी कापि चम्पूरित्यभिधीयते ॥३१॥

སྤྲེལ་མ་ གློས་གར་ལ་སོགས་དེ །
 དེ་དག་ རྣམས་ནི་ གཞན་ན་ གྲུབ །
 ལྷག་པ་ ཆོགས་བཅད་རང་བཞིན་ ཡང་ །
 ཅུ་ ཞེས་པར་ མངོན་པར་ བཞིན ༥ ༣༡

तदेतद्वाङ्मयम्भूयः संस्कृतम्याकृतन्तथा ।

[4a]अपमंशश्च मिथ्यास्त्याहुरास्तामनुविधं ॥३२॥

ངག་གི་ རང་བཞིན་ དེ་དག་ ཀྱང་ །
 ལོགས་སྤྱར་ དེ་བཞིན་ རང་བཞིན་ རང་ །
 ཟུར་ཆག་ འདྲིས་མ་ ཞེས་བྱ་བ །
 རྣམ་པ་བཞི་ཅུ་ མཁས་པས་ གསུངས ༥ ༣༢

संस्कृतं नाम देवी वाग्व्याख्याता महर्षिभिः ।

तद्भवन्तत्समन्देशीत्यनेकः प्राकृतक्रमः ॥३३॥

ལེགས་སྤྱད་ ཞེས་བྱ་ ལྷ་ཡི་ བློ་ །

སྒྲ་དུ་ རང་སྤོང་ ཆེན་པོས་ གསུངས་ །

དེ་སྤྱིས་ དེ་མཆོངས་ ཡུལ་ཅན་ ཞེས་ །

དུ་ས་ རང་བཞིན་ དག་གི་ རིས་ ॥ ३३

महाराष्ट्राश्रयाम्भाषां प्रकृतम्प्राकृतं विदुः ।

सागरः सूक्तिरज्ञानं सेतुबन्धादि यन्मयं ॥३४॥

ཡུལ་འཁོར་ཆེན་པོ་ ལ་ བདེན་ སྒྲ་ །

ལེགས་བརྗོད་ རིན་ཆེན་ དག་གི་ མཆོ་ །

སེ་དུས་ བཅིངས་ སེགས་ རང་བཞིན་ གང་ །

རང་བཞིན་ མཆོག་དུ་ བྱུང་བར་ རིག་ ॥ ३ॣ

सौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च साक्षरी ।

याति प्राकृतमित्येव व्यवहारेषु सन्निधिः ॥ ३५॥

ས་ར་སེ་ནུ་གོ་ཏ་དང་།

ལུ་ཏུ་གཞན་ཡང་དེ་འདྲ་ཡི།

སྐད་ནི་རང་བཞིན་ཉིད་ཅེས་བུའི།

ཐ་སྟེད་རྣམས་ལ་ཉེ་བར་འགྱུར་༥ ༢༥

आभीरादिगिरःकाव्येष्वपभ्रंश इति स्थितिः ।

शाल्मे तु संस्कृतादन्यपभ्रंशतयोदितं ॥३६॥

བ་ཡང་ཇི་ལ་སྟགས་བའི་ཆོག།

སྟན་ངག་ལ་རྒྱར་ཆག་ཅེས་གནས།

བསྟན་བཅོས་རྣམས་ལས་ལྟགས་སྐྱར་ལས།

གཞན་བ་རྒྱར་ཆག་ཉིད་ཏུ་བཞིན་༥ ༢༦

संस्कृतं सर्गबन्धादि प्राकृतं स्कन्धकादिः*यत् ।

ओसरादीन्यपभ्रंशो नाटकादि तु मिश्रकं ॥३७॥

ལྟགས་སྐྱར་སྐྱུ་ས་བཅོངས་ལ་སྟགས་།

རང་བཞིན་སྐྱུ་ཀ་སྟགས་དང་།

རྒྱུ་ཆག་ ཨོ་ས་ར་ སོགས་དེ །

རྒྱུ་གར་ ལ་སོགས་ འདྲིས་པའོ ༥ ३५

कथादि सर्वभाषामिः संस्कृतेन च *पठ्यते ।

भूतभाषामयीं त्वाहुर्मृतार्थां बृहत्क[4b]थां ॥३८॥

གདམ་ སོགས་ སྐད་ རྣམས་ བསམ་ཅད་དང་ །

ལེགས་སྦྱར་གྱིས་ ཀྱང་ བཅོངས་པ་སྟེ །

སྐད་བྱང་ དོན་ཅན་ རྩ་ཆེདི་གདམ །

འབྱུང་པོའི་སྐད་ཀྱི་ རང་བཞིན་ བཟློད ༥ ३७

लास्यच्छलितशाम्यादि प्रेक्षार्थमितरत्नपुनः ।

अव्यमेवेति सैषापि द्वयी गतिरुदाहृता ॥३९॥

སྐག་ དང་ རོལ་ དང་ སྦྱབས་ ལ་སོགས །

ལྷ་པའི་དོན་ ཡིན་ ཅིག་ཤོས་ ཀྱང་ །

སཉན་པར་བྱ་བ་ཉིད་ ཅེས་པ །

འདི་ཡང་ ལུགས་གཉིས་ དག་ད་ བཟློད ༥ ३८

अस्यनेको गिरा मार्गाः सुप्रमेदः परस्परं ।
तत्र वेदमंगौडीयौ वप्येते प्रस्फुटान्तरौ ॥४०॥

ཕན་ཚུན་ རྟེན་པ་ ལྷོ་མོ་ཅན་ ।
ཆོག་གི་ལམ་ བྱི་ རྩ་མ་ ཡོད་ ।
དེ་ལ་ བེ་ རྟུ་ རང་ནི་ ।
གོ་རྩ་པ་ བྱད་ གསལ་བར་ བཟོད་ ॥ ༤༠

शेषः प्रसादः समता माधुर्यं सुकुमारता ।
अर्थव्यक्तिस्वरत्वमोजःकान्तिसमाधयः ॥४१॥

སྤྱར་བ་ རབ་དངས་ བཅུ་ཉིད་ རང་ ।
སྟོན་ རང་ ཡིན་དུ་ གཞིན་པ་ རང་ ।
དོན་ གསལ་བ་ རང་ བྱ་ཆེ་ ཉིད་ ।
བཟོད་ རང་ བཟོས་ལྷན་ ཉིང་ངེ་འཛིན་ ॥ ༤༡

इति वेदमर्मार्गस्य प्राणा दशगुणाः *स्मृताः ।
एषां विवर्य्ययः प्रायो लक्ष्यते गौडवर्त्मनि ॥४२॥

ཡོན་ཏན་ འདི་ བཅུ་ བོ་དགྲའི།
 ལམ་གྱི་ ཟློག་དུ་ བཤད་པ་ ཡིན།
 འདི་དག་ གལ་ཆེར་ བསྐྱོག་བས་ ནི།
 གོ་ཏའི་ལམ་ དག་ བཏོན་པ་ ཡིན། ॥ ༧༩

मिथुमस्पृष्टशैथिल्यमन्वप्राणाक्षरोत्तरं ।

शिथिलं मालतीमाला लोलालिकलिला *यथा ॥४३॥

སྐྱར་བ་ ཟློན་བས་ བ་ རིག་བའོ།
 ཟློག་ཆུང་ ཡི་གེ་ བང་བ་ ནི།
 ཟློན་བ་ སྐྱལ་རྒྱི་ སྐྱལ།
 ལོ་ལྷ་ལི་ཀ་ལི་ལྷ་ འདོད། ॥ ༨༠

अनुप्रासधिया गौडैस्तदिष्ट कन्धगोप्यात् ।

वेदमैर्मालतीदाम लंघितं ज्ञमरैरिति ॥४४॥

གོ་ཏ་བ་ ཡིས་ ཇེས་ཁྲིད་སྐྱོས།
 དེ་ འདོད་ སྐྱལ་རྒྱི་ སྐྱལ།

ལེ་གླིང་གྱུ་མ་རིེ་ཞེས།

ཐེ་དགྲ་ཡིས་སྤྱོད་ལྗེ་བྱེད། ॥ ༧༧

प्रसादवत्प्रसिद्धार्थमिन्दोरिन्दीवरद्युति ।

लक्ष्म लक्ष्मीन्तनोतीति प्रतीतिसुभगं वचः ॥४५॥

རབ་དངས་ལྡན་པ་ བྲགས་རོན་ཅན།

ཆེ་བའི་མཚན་ས་ ཡུལ་གྱི།

འོད་གྲིས་ མཛེས་པ་ ལྷས་ ཅས་པ།

དྲིགས་པའི་ སྐལ་བཟང་ལྡན་པའི་ ཆོག། ॥ ༧༧

अनुत्पन्नमिति गौडोयर्नातिरुद्धमपीष्यते ।

यथानत्यज्जनाब्जन्मत्स[5a]दृक्षाङ्को बलशृगुः ॥४६॥

ངས་ཆོག་ ཡོད་ ལྷོར་ བོ་ར་པ།

ཤིན་དུ་ བྲགས་པ་ མིན་ ལང་ འདོད་།

ཤིན་དུ་ དཀར་ མིན་ རྩ་ལས་སྦྱེས།

ནི་འདྲས་ མཚན་པ་ འོད་དཀར་ཅན། ॥ ༧༩

समं बन्धेष्वविषमन्ते मृदुस्फुटमध्यमाः ।

बन्धा मृदुस्फुटोन्मिधवर्णविन्यासयोनयः ॥४७॥

मंभ्रम'व' श्रुंर'व' मी'मभ्रम' ३५ ।

दे'के' १६म' कुव' वर'म' ३६ ।

श्रुंर'व' १६म' कुव' वर'म' ३७ ।

यी'मो'वर्गे'र'पदि'स्रु'मर्दम'उद ॥ ८७

कोकिलालापवाचालो मामेति मलयानिलः ।

उच्छलच्छीकरच्छाच्छनिर्मरांभःकणोक्षितः ॥४८॥

मृ'पुण' उ'उर'क्षी'पुदे' उद' ।

म'ल'य'क्षुद' वद'म'ल' ३८ ।

भ्र'म' र'व'१६म' ३९ ।

कु'कु'कु'मि'म'ग्री'म' ३९ ।

चन्दनप्रणयोद्गन्धिर्मन्दो मलयमारुतः ।

स्पर्शते रुद्रमर्दयौ धररामाननानिलैः ॥४९॥

ཅན་གྱིས་བསྐྱོས་ཏི་ལང་ཞིང་།
 འཇམ་བ་མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱང་།
 བདག་གི་བདན་འགོག་དགའ་མ་ནི།
 མཆོག་གི་ཁ་ཡི་རྒྱང་དང་འགྲན་॥ ༥༦

इत्यनालोच्य वैषम्यमर्थालंकारडम्बरौ ।
 अपेक्षमाणा *ववृते पौरस्त्या काव्यपद्धतिः ॥५०॥

ཞེས་བ་མི་མཉམ་མ་བདག་ས་བར་།
 རོན་གྱི་རྒྱན་དང་ཆོག་ས་དག་ལ།
 ལྷོས་ནས་གར་ཕྱོགས་བ་དག་ལ།
 ལྷན་ངག་ལས་ནི་བྱང་བར་གྱུར་॥ ༥༠

मधुरं रसवद्भावि वस्तुन्यपि रसः स्थितः ।
 येन माद्यन्ति धीमन्तो मधुनेव मधुमताः ॥५१॥

ལྷན་བ་ཉམས་ལྷན་ཆོག་དང་ནི།
 དངོས་པོ་ལ་ཡང་ཉམས་གནས་བ།

སྤང་ཅི་ སྤྲོད་པ་ སྤང་ཅིས་ བཞིན།
གང་གིས་ སྤོ་ལྷན་ དགའ་བྱེད་པའོ། ॥ ४०

यथा कयापि श्रुत्या यत्समानमनुभूयते ।
*तद्वृथादिपदास्तस्मिन् सानुप्रासा रसावहा ॥५२॥

སྤྱི་ བློ་ གང་ དང་ ཅེ་ཡིས་ ཀྱང་།
གང་ཞིག་ མཚུངས་པར་ ཉམས་སྤོང་བ།
དེ་ཡི་ གཞུགས་ མོགས་ ཚོག་ཉེ་བ།
ཇིས་སྤྱི་ ཁྲིད་ བཅས་ ཉམས་དང་ལྷན། ॥ ४१

एष राजा यदा लक्ष्मीम्प्राप्तवान् ब्राह्मणप्रियः ।
तदा[5b]प्रभृति धर्मस्य लोकेस्मिन्नुत्सवोऽभवत् ॥५३॥

གང་ཚོ་ བྲམ་རྩེ་ དགའ་བ་ཡི།
རྒྱལ་པོ་ འདི་ཡིས་ དབལ་ཐོབ་གུར།
དེ་ནས་བརྒྱང་ལྷེ་ ཚོས་ཀྱི་ བློ།
དགའ་སྤྲོད་ འཇིག་རྟེན་ འདི་ཅ་ བྱང་། ॥ ४२

इतीदं *नाहतं गौडैरनुप्रासस्तु तत्प्रियः ।

अनुप्रासादपि प्रायो वेदमैरिदमीप्सितं ॥५४॥

उ० २६० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

वर्णावृत्तिरनुप्रासः पादेषु च पदेषु च ।

पूर्व्वानुमबलंस्कारबोधिनी यद्यदूरता ॥५५॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

अन्धे शरत्तिशोतंसे कुम्भस्तवकविघ्नमे ।

इन्द्रजालनिभं लक्ष्म सन्ध्यात्यलिनः श्रियम् ॥५६॥

ལྷོན་མཚན་ དབྱ་རྒྱན་ རྒྱ་བ་ ནི །
 ཀླུ་ལྷི་ རོན་པོར་ འབྲུལ་བ་ ལ །
 མཚན་མ་ ཡིན་ནི་ལ་ མཚུངས །
 བྱང་བའི་ དབལ་ ནི་ ཡང་དག་ འཛོན ༥ ༡༤

चारु चान्द्रमसं भीरु विम्बम्पश्येदमम्बरे ।
 मन्मनो मन्मथाक्रान्तं निर्दयं *कतुमुद्यतं ॥५७॥

མཛེས་མ་ མཁའ་ལ་ རྒྱ་བ་ཡི །
 དཀླུ་ལྷིར་ མཛེས་བས་ བདག་གི་ཡིད །
 ཡིད་སྐྱབ་ ཀླིས་ མནན་ བརྩེ་མེད་དུ །
 འཛོམས་བར་ བརྩོན་བ་ འདི་ ལ་ ལྷོས ༥ ༡༧

इत्यनुप्रासमिच्छन्ति नानिदूरान्तरश्रुतिम् ।

न तु रामामुखाम्मोजसदृशश्चन्द्रमा इति ॥५८॥

ཅེས་བ་ འིན་དུ་ མི་རིང་བར །
 བོས་བ་ དག་ ནི་ ཇེས་ཁྲིད་ འདོད །

དགའ་མ་ བཞིན་གྱི་ཚུ་སྤྲེས་ དང་ །
 མཚུངས་པ་ རྒྱ་བ་ ཅེས་ མི་འདོད་ ॥ ༡༥

स्मरः स्वरः खलः कान्तः कायः कोपश्च नः कृशः ।
 व्युतो मनोधिको रागो मोहो जातोसवोगताः ॥६६॥

བདག་གི་ ལུས་ དང་ ཁྲོ་བ་ ལྔ་ །
 འདོད་པ་ ཚུབ་ ཅིང་ མཇུང་བོ་ངན་ །
 ཁྲིངས་པ་ཉམས་ ཤིང་ ཆགས་པ་སྐྱས་ །
 མྲིངས་པ་ སྤྲེས་ཏེ་ སློག་ ཉམས་ མོང་ ॥ ༡༦

इत्यादि बन्धवारुण्यं शैथिल्यञ्च नियच्छति ।
 अतो नैव[6a]मनुप्राप्तं दाक्षिणात्याः प्रयुज्यते ॥६७॥

ཅེས་སློགས་ སྤྲོར་བ་ ཚུབ་པ་ དང་ །
 ཁྲོལ་བ་ ཡང་ནི་ སྤྲོར་བར་བྱེད་ །
 དེ་ཕྱིར་ དེ་ལྟའི་ རྒྱུ་ཁྲིད་ ནི་ །
 རྒྱ་སྤྲོགས་པ་ དག་ མི་སྤྲོར་ཙོ་ ॥ ༡༧

आवृत्तिमेव संघातगोचरं यमकस्मिदुः ।

तन्तु नैकान्तमधुरमतः पञ्चाद्विधास्यते ॥६१॥

कै०ग०स०प०दि० श्रु०द०पु०ल० व०श्लो०र०व०के० ।

मि०क०तु०द०द० ल०क०प०र० री०ग० ।

दे०प०द०ग०उ०ग०दु० श्रु०क०प० वी०ग० ।

दे०श्रु०र० श्रु०क०स० व०श्रु०क०प०र०गु ॥ ७१

कामं सर्वोप्यलंकारो रसमर्थे निषिञ्चति ।

तथाप्यप्राप्त्यतेवैनम्भारम्वहति भूयसा ॥६२॥

दे०स०प०र० कृ०क०क०स० गृ०क०प० प०द० ।

दे०क०गु० श्रु०क०स० द०ग० श्रु०क०प०र०गु०द० ।

दे०कृ०क० प०द० श्रु०द०प० श्रु०द० ।

श्रु०क०प०स० म०र० अ०दे०प०प०कै०र० अ०दे०क० ॥ ७२

कान्ये कामयमानं मान्त्वं न कामयसे कथं ।

इति ग्राम्योयमर्थत्मा खेरस्यायेव कल्प्यते ॥६३॥

འདོད་ལྷན་ བདག་ལ་ གཞོན་ཉུམ་ །
 ཁྱོད་ནི་ཅི་ལྟར་ འདོད་མི་ བྱེད་ །
 ཅེས་ འདི་ གྲོང་པའི་དོན་ བདག་ ཉིད་ །
 ཉམས་ དང་ བྲལ་བ་ ཁོ་ནར་བྱེད་ ॥ ༤༢

कामं कन्दर्पवण्डाला मयि वामाक्षि निर्दयः ।
 त्वयि निर्मत्सरो द्रिष्ट्येत्यप्राम्योर्थो रसावहः ॥६४॥

གཡོན་མིག་ འདོད་པ་ གདུམ་པོ་ནི་ །
 ཇེས་པར་ བདག་ལ་ བརྟེ་བ་མེད་ །
 ཁྱོད་ལ་ ཁྱོ་མེད་ དགའ་ ཅེས་པ་ །
 གྲོང་པའི་ དོན་མེད་ ཉམས་དང་ལྷན་ ॥ ༤༣

शब्देऽपि प्राम्यतास्त्येव सा सम्येतरकीर्तनात् ।
 यथा यकारादिषदं रत्युत्सवनिरूपणे ॥६५॥

སྒྲ་ལའང་ གྲོང་པ་ཉིད་ ཡོད་དེ་ །
 དེ་ནི་ ལེགས་པའི་ ཅིག་ཤོས་ བྲགས་ །

དགའ་བའི་དགའ་སྟོན་བཟོད་བ་ལ །
 ཇི་ལྟར་ ཡ་ཡིག་ལ་སོགས་བཞིན ། ༥༥
 . .

पदसन्धानवृत्त्या च वाक्यार्थत्वेन वा पुनः ।
 दुष्प्रतीतिकरं ग्राम्यं यथा या भवतः प्रिया ॥६६॥
 ཚོག་གི་མཚས་ས་སྟུར་གྱིས་ བྱགས་ དང་ །
 སྟུར་ཡང་ ངག་དོན་དག་གིས་ ཀྱང་ །
 ཉེས་བར་དྲོགས་བྱེད་ བྲོང་བ་སྟེ །
 ཡ་ ལྟ་བ་དེ་ བྲི་ཡ་ བཞིན ། ༥༦

परं ग्रहृत्य विभ्रान्तः पुरुषो वीर्यवानिति ।
 एव[6b]मादि न शंसन्ति मार्गयोरुभयोरपि ॥६७॥
 བཞུན་ལ་ བསྐྱུན་ནས་ སྟེས་བྱ་ བྱི །
 བྲི་ལྟ་ལྟར་བའི་ བྲི་ལྟ་ །
 དེ་ལྟ་བུ་ སོགས་ ལས་དག་ བྱི །
 བཞུགས་ཀ་ལ་ ཡང་ བསྐྱུགས་ས་ཡིན ། ༥༧

भयिनीभगवत्यादि सर्वत्रैवानुमन्यते ।

विभक्तमिति माधुर्यमुच्यते सुकुमारता ॥६८॥

झं'ग'व'रुं' झुं'गी'रुं ।

लेख'सि'ग'स' गुरु'रु'ल'स'लेख'रुं ।

दे'ल'र' लु'र'व' क'स'व'र'सु ।

पै'र'रु'ग'लेख'व' व'ग'र'व'र'सु ॥ ७८

अनिष्टुराक्षरप्रायं सुकुमारमिहेष्यते ।

बन्धशोधित्यदोषो हि *दर्शितः सर्वकोमले ॥६९॥

कु'व'सि'र'यि'ग'स'व' र' ।

पै'र'रु'ग'लेख'व'रुं'रु' र'र'र' ।

ग'र'सु'र' स'स'र'र'र'र'र'र' र' ।

लु'र'व'लु'र'व'र'लु'र'रु' व'ग'र' ॥ ७९

मण्डलीकृत्य वर्हाणि कण्ठैर्मधुरगीतिभिः ।

कलापिनः प्रनृत्यन्ति काले जीमूतमालिनि ॥७०॥

སྒྲིན་གྱི་ཐོང་བ་ལྟ་ན་ ཏུས་སུ །
 སྒྲིན་པར་སྒྲོགས་པའི་མཁྲིན་ལྟ་བུ །
 མ་བྱ་ཡི་ནི་ མཐུག་མ་དག །
 ལྷུས་པོར་བྱས་ནས་ གར་བྱེད་དོ ॥ ༡༠

इत्यनूर्जित एवार्थो नालंकारोपि तादृशः ।
 सुकुमारतयैवैतदारोहति सतां मुष्णं ॥७१॥

ཞེས་པ་ དོན་གྲས་ཉིད་མ་ཡིན །
 གྲིན་ ཡང་ དེ་འདྲ་ ཡོད་མིན་དེ །
 གིན་ཏུ་གཞོན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ དེ །
 དམ་པ་ནས་སྒྲི་ ཁ་ ན་ གནས་ ॥ ༩

दीप्तमित्यपरैर्भूम्ना कृच्छ्रोद्यमपि बध्यते ।
 न्यक्षेण पक्षः क्षपितः क्षत्रियाणां क्षणादिति ॥७२॥

གསལ་ ཡིར་ གཞན་དག་ གལ་ཆེར་ ནི །
 བརྗོད་པར་ དཀའ་བ་དག་ ཀྱང་ སྒྲོར་ །

རྒྱལ་རིགས་ནམས་ཀྱི་ རྩོགས་མཐའ་དག །

སྐད་ཅིག་གིས་ བློ་ ཉམས་པར་བྱས ། ༡༩

अथंन्यक्तिरनेयत्वमर्थस्य हरिणोद्धृता ।

भूः खुरश्रुण्णनागासृग्लोहितादुदधेरिति ॥७३॥

དོན་གསལ་ དོན་བདག་མི་དགོས་ཉིད །

འཕྲོག་བྱེད་ཀྱིས་ བློ་ ས་གཞི་དག །

མིག་པས་ བཅད་པའི་སྒྲ་བྲག་གིས །

དམར་བ་ རྩ་ཡི་གཏོར་ ལས་སྤང་ ། ༢༠

मही महावराहेण लोहितादुद्धृतोदधेः ।

इतीयत्ये[7a]व निर्दिष्टे नेयत्वमुरगासृजः ॥७४॥

ཕག་པ་ཆེན་པོ་ དག་གིས་ ས །

རྩ་གཏོར་དམར་པོ་དག་ལས་སྤང་ །

ཞེས་པ་ འདི་ཉིད་ བསྟན་པ་ནི །

སྤང་འགྲོའི་བྲག་ བློ་ བདག་དགོས་ཉིད ། ༢༡

नेष्टशाम्बहु मन्यन्ते मार्गयोरुभयोरपि ।

न हि प्रतीतिः सुमगा शब्दन्यायविलङ्घिनी ॥७५॥

ལམ་ ཉི་ གཉིས་ཀ་ དག་ལ་ ཡང་ །
 ཉིགས་པའི་སྒྲུལ་བཟང་མི་ལྟ་ ཞིང་ །
 སྒྲུལ་ཚུལ་ལས་འགོངས་གུར་བ་ །
 འདི་འདྲ་ སལ་ཆེར་ བཞེད་ས་ཡིན་ ॥ ༧༧

उत्कर्षवान्गुणः कश्चिदुक्तं यस्मिन्प्रतीयते ।
 तदुदाराह्वयं तेन सनाथा काव्यपद्धतिः ॥७६॥

གང་དུ་ འགའ་ཞིག་ བཟོད་པ་ལ་ །
 བྱད་འཕགས་ལྟ་པའི་ཡོན་ཏན་ཉིགས་ །
 དེ་ནི་ སྐྱ་ཆེར་བཟོད་དེ་ དེས་ །
 སྒྲུལ་ལམ་གྱི་ མགོན་དང་བཅས་ ॥ ༧༩

अर्थिनां कृपणा हृष्टिस्त्वन्मुखे पतिता सकृत् ।
 तदवस्था पुनर्देव नान्यस्य मुखमीक्षते ॥७७॥

སྒྲིང་བ་རྣམས་ ཀྱི་ བཀྱོན་པའི་མིག་ །
 ལན་ཅིག་ བྱིད་ བཞིང་ལ་ ལྷང་བ་ །

ལྷ་ཅིག་གནས་སྐབས་དེ་ཡིས་སྒྲར།
གཞན་གྱི་གདོང་ལ་ལྷ་མ་ཡིན། ॥ ११

इति त्यागस्य वाक्येस्मिन्नुत्कर्षः साधु लक्ष्यते ।
अनेनैव पथान्यच्च समानन्यायमूह्यताम् ॥७८॥

ཅེས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཆོག་འདྲ་ལ།
གདོང་བ་ཁྱད་འཕགས་ལེགས་པ་མཆོན།
ལས་འདི་ཉིད་ཀྱིས་གཞན་དག་ཀྱང་།
རིགས་པ་མཚུངས་པས་དཔག་པར་བྱ། ॥ १२

अग्राप्यैर्विशेषणैर्युक्तमुदारं कैश्चिद्विष्यते ।
यथा लीलाम्बुजक्रीडासरोहेमाङ्गदादयः ॥७९॥

བསྐྱབས་པར་འོས་པའི་ཁྱད་པར་དང་།
ལྷ་པ་སྐྱ་ཆེར་འབའ་ཞིག་འདོད།
རིལ་པའི་ཚུ་སྤྱིས་ཅེ་དགའི་མཆོ།
གསེར་གྱི་སྐྱ་ལ་སོགས་པ་བཞིན། ॥ १०

ओजः समासभूयस्त्वमेतद्गद्यस्य जीवितम् ।

पद्येप्यदाक्षिणात्यानामिदमेकम्परायणम् ॥८०॥

བཱེད་པ་ ཆོག་ རྩུད་ མང་པོ་ ཉིད་ །

འདི་ནི་ ལྷུག་པ་ དག་གི་ གསོས་ །

ཆོག་ས་བཅད་ལ་ ཡང་ ལྷོ་ཕྱོགས་པ་ །

མེན་པ་ འདི་ཉིད་ ཀུའིག་ཕུ་ བཞེད་ ॥ ༨༠

तद्रूपां लघू[7b]नाञ्च बाहुल्याल्पत्वमिश्रणैः ।

उच्चावचप्रकारं सदृश्यमाख्यायिकादिषु ॥८१॥

དེ་ལ་ ལྷུ་ དང་ ཡང་པ་ རྣམས་ །

མང་ དང་ ཉུང་པ་ཉིད་ སྟེལ་པ་ །

མཐོ་དམན་གྱི་ ནི་ རྣམ་པ་ དེ་ །

བཱེད་པ་ལ་སོགས་རྣམས་ལ་མཐོང་ ॥ ༨༡

अस्तमस्तकपर्यस्तसमस्तार्कांशुसंस्तरा ।

पीनस्तनस्थिताताम्रकम्रवस्त्रेव वारुणी ॥८२॥

ལྷ་བ་ཀྱི་རི་མགོར་ ལྷུང་བ་ ཡོ།
 མཐའ་དག་ ཉི་འོད་ མལ་སྟན་ཅན།
 མཁྱིམ་པ་འི་ལྷ་མ་ ལ་ གནས་པ་འི།
 ལོས་ དམར་ མཛོས་ བཞིན་ ལུ་ལྷན་མ། ॥ ༤༢

इति पद्येपि पौरस्त्या बध्नन्त्योजस्विनीर्गिरः ।
 अन्ये त्वनाकुलं हृद्यमिच्छन्त्योजो गिरां यथा ॥८३॥
 ཅེས་པ་ བཟློན་དང་ལྷན་པ་འི་ཆོག།
 ཆོགས་བཅད་ལ་ ཡང་ ཤར་བ་ ལྷོར།
 གཞན་དག་ འབྲུགས་མིན་ མཛོས་པ་ཡི།
 ཆོག་རྣམས་ བཟློན་པར་ འཛོད་དེ་ དཔེར། ॥ ༤༣

पयोधरतटोत्संगलमसन्ध्यातपांशुका ।
 कस्य कामातुरं चेतो वादणी न करिष्यति ॥८४॥
 ལུ་འཛོན་ངོས་ཀྱི་ ཡང་ ན་ གནས།
 མཚམས་ཀྱི་ཉི་འོད་ ལོས་དང་ལྷན།

ཐུ་ཐུན་མ་ཡིས་ སུ་ཡི་ཡིད།

འདོད་པས་གཟེར་བར་བྱེད་མི་འགུར ལེ

कान्तं सर्वजगत्कान्तं लौकिकार्थानतिक्रमात् ।

तच्च वार्ताभिधानेषु वर्णनास्वपि विद्यते ॥८५॥

མཇེས་པ་ འཇིག་རྟེན་ རོན་དག་ ལས།

མ་འདས་ འགྲོ་ཀུན་ ལ་ མཇེས་པ་འོ།

དེ་ཡང་ གཏམ་གྱི་མངོན་བཛྲོད་ དང་།

བསྐྱབས་པ་ ལ་སོགས་རྣམས་ལ་འང་ *སྟུར ཥེ ༥

गृहाणि नाम तान्येव तपोराशिभवाद्भूशः ।

सम्भावयति यान्येव पावनैः पादपांशुभिः ॥८६॥

དཀར་ཕུབ་པ་པོ་ བྱིད་འདྲ་ཡི།

ཞབས་ཀྱི་རྩལ་ རི་ གཙང་མ་ དག།

ཡང་དག་ བཏབ་པ་ གང་ ཡིན་པ།

དེ་དག་ ཁོ་ན་ དེས་པར་ བྱིས། ཥེ ༥

अनयोरनवद्याङ्गि स्तनयोजृम्भमाणयोः ।
अवकाशो न पर्याप्तस्तव बाहुलतान्तरं ॥८७॥

झुङ्खेद'लुस'उङ्' सुद'ग्री' ङी ।
लम'पदे'दसि'पेद'वर'दम'दु ।
ङु'स'र'म' सुस' ददे'दम' मीस ।
मो'ल्लवस' छेद'वर' दसु'र'स'पेङ् ॥ ८७

इति [8a]संभाव्यमेवेतद्विशेषाख्यानसंस्कृतं ।
कान्तं भवति सर्वस्य लोकयात्रानुवर्तिनः ॥८८॥

लेस'प' सुद'वर' वहेद'प' पिस ।
लेमस'सु'र' दे'दम' सीद'प' छेद ।
ददे'म'देङ्'लुमस'ग्री'हेस'सु'ङी ।
ददुम'प' मसस'उङ्' महेस'वर' दसु'र ॥ ८८

लोकातीत इवात्यर्थमध्यारोप्य विवक्षितः ।
योर्यस्तेनातितुष्यन्ति विदग्धा नेतरे यथा ॥८९॥

འཇིག་རྟེན་ འདས་ བཞིན་ བརྗེས་ འདོད་ ཀྱིས །

དོན་གང་ ཡིན་ཏུ་ བཞོད་ བྱུང་བ །

དེ་ཡིས་ མཁས་པ་ ཡིན་ཏུ་ ནི །

ཆོས་འགྱུར་ ཅིག་ཤོས་ མ་ཡིན་ དཔེར ༥ ༤༠

देवधिष्ण्ययमिवाराध्यमद्यप्रभृति नो गृहम् ।

युष्मत्पादरजःपातघौतनिःशेषकिल्बिषम् ॥६०॥

དང་ནས་ བརྒྱུང་སྟེ་ བདག་གི་བྱིས །

ལྷ་ཡི་བྱིས་ བཞིན་ བརྟེན་པར་ འོས །

བྱིད་ཀྱི་ ཞབས་རྒྱལ་ ལྷུང་བ་ ཡིས །

ཉེས་པ་ དག་ནི་ མ་ལུས་ བཀྱས ༥ ༤༡

अल्पस्त्रिर्मितमाकाशमनालोच्यैव वेधसा ।

इदमेवंविधममावि भवत्याः स्तनजृम्भणम् ॥६१॥

བྱིད་ཀྱི་ རྒྱ་ས་ འདི་ལྷ་བྱུར །

ནས་པར་བྱས་པར་འགྱུར་བ་འདི །

ངེས་པར་མ་བརྟགས་ བྱིད་པོ་ ཡིས །

ནས་མཁའ་ དག་ནི་ ལུང་ལུང་ ལྷུལ ༥ ༤༢

इदमत्युक्तिरित्युक्तमेतद्रौडोपलालितं ।

प्रस्थानं प्राक् प्राणीतन्तु सारमन्यस्य वर्त्मनः ॥६२॥

འདི་ནི་ ཏ་ཅང་ བཟློན་པ་ འདི །

གོ་ཏ་བ་ལ་ མཛོས་པར་ བཟློན །

འཇུག་པ་ རྩ་མ་ གཞན་ གྱི་ནི །

ལས་ལ་ ལྷིང་པོ་ཉིད་དུ་ བཤད ॥ ༦༢

अन्यधर्मस्ततोऽन्यत्र लोकसीमानुरोधिना ।

सम्यगाधीयते यत्र स समाधिः स्मृतो यथा ॥६३॥

གཞན་གྱི་ཆོས་ དེ་ གཞན་དག་ལ །

འཇིག་རྟེན་ ལུགས་ཀྱི་ ཆོས་འབྲངས་ ནས །

དྲིང་ངེ་འཇིན་པར་བྱེད་པ་དེ །

དྲིང་ངེ་འཇིན་ ཏུ་ བཟློན་དེ་ དཔེར ॥ ༦༣

कुमुदानि निमीलन्ति कमलान्युन्मिषन्ति च ।

इति नेत्रक्रियाध्यासाल्लुब्धा [8b]तद्वाचिनी श्रुतिः ॥६४॥

ཀུ་མ་ད་ རི་ མིག་འཇུམ་ ཞིང་ །
 བདུ་དག་ ཀྱང་ མིག་འབྱེད་ ཅེས་ །
 མིག་གི་བྱ་བ་ བཀོད་པ་ ལས་ །
 དེ་ཡི་ བཟོད་བྱེད་ སྒྲ་དག་ ཐོབ་ ॥ ༧༧

निष्कृतोद्गोर्णवान्तादि गौणवृत्तिव्यपाश्रयं ।
 अतिसुन्दरमन्यत्र ग्राम्यकक्षां विगाहते ॥६५॥

རིཏྲ་ད་ དང་ ཡུདྲི་རྩོ་ །
 སྒྲུགས་ མོགས་ བདགས་པའི་ འཇུག་ བདེན་པ་ །
 ཤིན་དུ་ མཛོས་དེ་ བཀའ་དུ་ རི་ །
 བོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ རས་པ་ བདེན་ ॥ ༧༨

पद्यान्यर्कांशुनिष्कृताः पीत्वा पावकविप्रुषः ।
 भूयो वमन्तीव मुखैरुद्गीणारुणरेणुभिः ॥६६॥

བདུས་ཉི་ཟེར་ སྒྲུགས་པ་ རསས་ །
 འཕུངས་ནས་ རྩལ་ དམར་ སྒྲུགས་པ་ཡི་ །

ཁ་ཡིས་དག་བྱེད་ཟེར་ས་ དག །

ཤིན་ཏུ་སྐྱགས་པར་བྱེད་པ་ བཞིན ། ༡༩

इति हृद्यमहृद्यन्तु निष्ठोवति बधूरिति ।

युगपन्नैकधर्माणामध्यासश्च मतो यथा ॥६७॥

ཅེས་པ་ མཛོས་དྲེ་ མི་མཛོས་པ །

ཅུང་ས་ སྐྱགས་པར་བྱེད་ཅེས་པའོ །

ཅིག་ཅར་ ཉིད་དུ་ ཆོས་ ཏུ་ས །

བཞོད་པ་ དག་ ཀྱང་ འདོད་དེ་ དཔེར ། ༢༠

गुरुगर्मभराक्लान्ताः स्तन त्र्योमेधपङ्क्तयः ।

अचलाभित्यकोत्सङ्गमिमाः समधिरोरते ॥६८॥

སྐྱེ་བའི་མང་ལ་ ཁར་གྱིས་ངལ་ཞིང་ །

འཁྲུན་པར་བྱེད་པ་ སྐྱིན་གྱི་སྡེང་ །

འདྲི་དག་ གཡོ་མེད་སྡིང་གི་ བློ །

མང་བ་དག་དུ་ ཡང་དག་ཉལ ། ༢༡

ལས་ན་ དེ་གཉིས་ རྣམ་པར་ཕྱེ།

དེ་དག་ དབྱེ་བ་ ལྷན་ངག་མཁན།
 མོ་མོ་ལ་ གནས་ བཟློད་ མི་ནས། ॥ ༡༠༡

इक्षुक्षीरगुडादीनां माधुर्यस्यान्तरमहत् ।
 तथापि न तदाख्यातुं सरस्वत्यापि शक्यते ॥१०२॥

བུར་ཤིང་འོ་མ་ བུར་མོགས་ ཀྱི།
 མངར་བ་ཉིད་ ཅི་ བྱད་བར་ཆེ།
 དེ་ལྷ་མོད་ཀྱི་ དེ་བཟློད་བར།
 དབྱངས་ཅན་མས་ ཀྱང་ ལྷས་མཁྱེན། ॥ ༡༠༢

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतञ्च बहु निर्मलं ।
 अमन्दध्यामियोगोस्याः कारणं काव्यसम्पदः ॥१०३॥

རང་བཞིན་ ཀྱིས་གྲུབ་ སྒྲོབས་བ་ དང་།
 མང་དུ་སྒྲོས་བ་ ཅི་མེད་ དང་།
 མངོན་བར་ སྒྲོར་བ་མི་དམན་བ།
 ལྷན་ངག་ གན་སྤྲུམ་ཚོགས་བའི་གྱ། ॥ ༡༠༣

न विद्यते यद्यपि पूर्ववासना गुणानुबन्धि प्रतिमानमद्भुतं ।

श्रुतेन यत्नेन च वागुपासिता ध्रुवङ्करोत्येव कमप्यनुग्रहं ॥१०४॥

གལ་དེ་ སྤྱོད་གྱི་བཀ་ཆགས་ ཡོན་དྲ་ གྱིས།

ཆེས་འབྲེལ་ སྤོབས་པ་ མཉན་བྱང་ མེད་པ་ལའང།

ཐོས་ དང་ འབད་པ་ དག་གིས་ ངག་ བཅེན་ ན།

ཇི་ཞིག་ལྟར་ ཡང་ ཇེས་པར་ ཆེས་འཇིན་བྱེད། ॥ १०८

तदस्तनन्दैरनिशं सरस्वती क्रमादुपास्या खलु कीर्त्तिमीप्सुभिः ।

कृशे कवित्वेपि जनाः कृतश्रमा विदग्धगोष्ठीषु विहर्तुमीशते ॥१०५॥

དེ་མེར་ བྲགས་འདོད་ནསས་ གྱིས་ ཉག་དྲ་ ནི།

སྤོབས་ལས་ མེད་པར་ ཇིས་པས་ དབྱངས་ཅན་ བཅེན།

སྤྱན་ངག་ རྩང་བྱ་ལ་ ཡང་ ངལ་བྱས་ མེ།

སེམས་པའི་འདུན་ས་དག་དྲ་ འདུག་ལ་ དབང་ ॥ १०५

दण्डिनः कृतौ काव्यादर्शे मार्गविभागो नाम प्रथमः परिच्छेदः ॥

དབྱག་པ་ཅན་གྱིས་ བྱས་པའི་ སྤྱན་ངག་མེ་ལོང་ལས་ ལས་ རྣམ་པར་

སྤྱི་པའི་ རྣམ་པར་བཅད་པ་ མེ་ དང་པོའོ།

CHAPTER II

काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारान्प्रचक्षते ।

ते चाद्यापि विकल्प्यन्ते कस्तान् कात्स्न्येन [9b]वक्ष्यति ॥१॥

झुङ्गन्मां खड्गेन वरुणेन च ।

तेन कस्य मृतं तेषां स्वर्गं वहेत् ।

देहि मे वरुण कस्य देवाय ह्ये ।

देवमां सत्पुत्रं सुतं २२८८ ॥ १ ॥

किन्तु बीजं विकल्पानां पूर्वाचार्यैः प्रदर्शितं ।

तदेव प्रतिसंस्कर्तुमयमस्मत्परिश्रमः ॥२॥

तेन गन्धं कस्य देवाय स वेदं दे ।

ह्येनं चोद्धृतं देवेन कस्य गृहं वसुध ।

देहि मे स्वर्गं देवाय सुतं २२८९ ॥

येन सत्पुत्रं सुतं २२९० ॥ २ ॥

काश्चिन्मागं विभागार्थमुक्ताः प्रागप्यलंक्रियाः ।

साधारणमलंकारजात*मद्य प्रदर्श्यते ॥३॥

ལམ རི་ རྣམ་པར་དབྱེ་དོན་དུ །
 རྒྱན་ འགའ་ཞིག་ནི་ སྤར་ ཡང་ བསྟན །
 བྱུན་མེད་དག་དུ་ རྒྱན་ གྱི་ རི །
 རྒྱལ་མ་ འདི་ རབ་དུ་ བསྟན་པར་བྱ ། ༣

स्वभावाख्यानमुपमा रूपकं दीपकावृत्ती ।
 आक्षेपोर्थान्तरन्यासो व्यतिरेको विभावना ॥४॥

རང་བཞིན་ བརྗེད་ དང་ དཔེ་ དང་ རི །
 བཞུགས་ཅན་ བསལ་བྱེད་ བསྐྱོར་བ་ དང་ །
 འགྲོག་ དང་ དོན་བཞིན་བཞོད་པ་ དང་ །
 རྒྱལ་པ་ཅན་ དང་ སྤྱིད་པ་ཅན ། ༥

समासातिशयोक्तेक्षा हेतुः सूक्ष्मो लवः क्रमः ।
 प्रेयो रसवद्वृजंस्त्रि पर्यायोक्तं समाहितम् ॥५॥

བསྐྱུས་ དང་ བལ་བྱུང་ རབ་བཅགས་དང་ །
 རྒྱ་ དང་ སྤྱ་མོ་ ཅ་ དང་ རིམ །

དགའ་ དང་ ཉམས་ལྡན་ གཞི་བཟོད་ཅན།
 རྣམ་གྲངས་ བཟོད་ དང་ ཀླན་དུ་ བན ༥ ༥

उदात्तापह्नुतिश्छिष्टविशेषास्तुल्ययोगिता ।
 विरोधाप्रस्तुतस्तोत्रे व्याजस्तुतिनिदर्शने ॥६॥

གྱ་ཆེ་ བསྟོན་དོར་ སྤར་བ་ དང་།
 བྱད་པར་ མཆོངས་པར་ སྟོར་བ་ དང་།
 འགལ་ དང་ སྐབས་མེན་ བསྟོད་བ་ དང་།
 རྩོལ་བསྟོད་ ཇེས་པར་ བསྟན་བ་ དང་ ॥ ༦

सहोक्तिः परिवृत्त्याशीः संसृष्टिरथ भाविकं ।
 इति वाचामलंकारा दर्शिताः पूर्वसूरिभिः ॥७॥

ལྷན་ཅིག་ བཟོད་ དང་ ཡོངས་བཟུངས་ ཤེས་
 རབ་སྟེལ་ དེ་ནས་ དགོངས་བ་ཅན།
 འདི་དག་ ཆོག་རྣམས་དག་གི་ རྟེན།
 སྟན་དུ་ སྟོན་གྱི་སྐལས་པས་ བསྟན ༥ ༧

नानावस्थं पदार्थानां रूपं साक्षाद्विवृण्वती ।

[10a] स्वभावोक्तिश्च जातिश्चेत्याद्या सालङ्कृतिर्यथा ॥८॥

དངེས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ རང་བཞིན་ དང་ ।

གནས་སྐབས་ སྒྲ་ཚེགས་ དངེས་གསལ་བྱེད་ ।

དེ་ནི་ རང་བཞིན་བཟོད་པ་ དང་ ।

རིགས་ ཞེས་ དང་བོའི་གྲུན་ ཡིན་ དཔེར ॥ ༨

तुण्डैराताम्रकुटिलैः पक्षैर्हरितकोमलैः ।

त्रिवर्णराजिमिः कण्ठैरेते मञ्जुगिरः शुकाः ॥९॥

སརྱ་ ཉི་ དམར་ ཞིང་ བྲག་པ་ དང་ ।

བཀོག་པ་ རྒྱང་ ཞིང་ སུཉེན་པ་ དང་ ।

སྒྲིན་པ་ ཁ་དོག་ གསུམ་འཕྲེང་ཅན་ ।

ནེ་ཙྱེ་ འདི་དག་ ཚོག་འཇམ་ལྡན་ ॥ ༩

कलकणितगर्भेण कण्ठेनाघूर्णितेक्षणः ।

पारावतः परिक्षिप्य रिरंसुश्रुम्बति प्रियाम् ॥१०॥

མགྲིན་པའི་ནང་ནས་ ལྷན་སྒྲོགས་ ཡིང་ །

མིག་ རི་ ཀྱན་དུ་ འཕྲུལ་བ་ ཡི །

པག་རོན་ ཅེ་འདོད་ དགའ་མ་ལ །

ཡོངས་སུ་བསྐྱོར་ནས་ མཆུ་དག་སྟོར ། ༡༠

वपुर्नङ्गेषु रोमाञ्चं कुर्वन्मनसि निर्वृति ।

नेत्रे चामीलयन्नेव प्रियास्पर्शः प्रवर्तते ॥११॥

དགའ་མ་ཡི་ རི་ རིག་པ་ འདྲ །

ལུས་ལ་ སྤྲ་ལོང་ ལྷས་པ་དང་ །

ཡིད་ རི་ བདེ་བར་བྱེད་པ་ དང་ །

མིག་དག་ ལུས་པར་བྱེད་ ཅིང་ འཇུག ། ༡༡

कण्ठे कालः करस्थेन कपालेनेन्दुशेखरः ।

जटाभिः झिग्धताम्राभिराविरासीद् वृषध्वजः ॥१२॥

མགྲིན་སྟོན་ ལག་ན་བོད་པ་ནི །

གསལ་པ་སྒྲ་པའི་ཅོད་པ་དང་ །

སྤྱུམ་ ཞིང་ དམར་བའི་ རལ་བ་ཅན།
 ཁྱུ་མཆོག་ སྤྱལ་མཚན་ གསལ་བར་གྱུར། ॥ १५

जातिक्रियागुणद्रव्यस्वभावाख्यानमीदृशम् ।
 शास्त्रेष्वस्यैव साम्राज्यं काव्येष्वप्येतदीप्सितम् ॥१३॥

རིགས་ དང་ བྱ་བ་ ཡོན་ཏན་ ཇམ།
 རང་བཞིན་ བཟོད་བ་ འདི་འདྲ་ འདི།
 བཟླན་བཅོས་རྣམས་ལ་ སྤྱལ་སྲིད་ཅིད།
 སྤྱན་ངག་རྣམས་ལ་ སྤྱལ་སྲིད་ཅིད། ॥ १६

यथा कथंचित्सादृश्यं यत्रोद्भूतम्प्रतीयते ।
 उपमा नाम सा तस्याः प्रपञ्चोऽयं प्रदर्श्यते ॥१४॥

ཇི་ལྟར་ཅི་ཞིག་ལྟར་ མཚུངས་བར།
 གསལ་བ་ གང་དུ་ རྟོགས་བྱེད་བ།
 དེ་ ཁི་ དབྱེ་ ཞེས་བྱ་ སྡེ་ དེའི།
 སྲིས་བ་ འདི་ཁི་ རབ་བཤད་བྱ། ॥ १७

अमोखमिवाताम्रं मुग्धे करत[10b]लन्तव ।
इति धर्मोपमा साक्षात्तुल्यधर्मप्रकाशनात् ॥ १५॥

མཛོམ་མ་ བྱོད་ཀྱི་ ལག་མཐོལ་ རི།
རྩ་སྐྱེས་བཞིན་དུ་ རུང་ཟད་དམར།
ཅེས་པ་ ཚེས་དགེ་ དངོས་སུ་ རི།
མཚུངས་པའི་ཚེས་དག་བཟུན་ བྱེད་ཅོ་ ॥ १५

राजीवमिव ते वक्ष् नेत्रे नीलोत्पले इव ।
इति प्रतीयमानंकधर्मा वस्तूपमैव सा ॥१६॥

བྱོད་ཀྱི་གདོང་ བཟླ་ རི་ བཞིན།
སྐྱེས་དག་ རྩ་དུལ་ ཐོན་པོ་ བཞིན།
ཞེས་པ་ ཚེས་གཅིག་ རྟོགས་བྱེད་པ།
དེ་ རི་ དངོས་པོའི་དགེ་ཉིད་ ཅོ་ ॥ १६

त्वदाननमिवोन्निद्रमरविन्दमभूदिति ।
सा प्रसिद्धिविपर्यासाद्विपर्यासोपमेष्यते ॥१७॥

ཁྱོད་ཀྱི་གདོང་བཞིན་བསྒྲུ་ནི།
 རྣམ་པར་གྱུས་པར་གྱུར་ཅེས་པ།
 དེ་ནི་གྲགས་པ་བརྒྱུག་པའི་ཕྱིར།
 བརྒྱུག་པའི་དབེ་ཞེས་བྱ་བར་འདོད། ॥ १७

तवाननमिवाम्भोजमम्भोजमिव ते मुखं ।
 इत्यन्योन्योपमा सेयमन्योन्योत्कर्षशंसिनी ॥१८॥

ཁྱོད་ཀྱི་གདོང་བཞིན་ཅུ་སྐྱེས་དེ།
 ཅུ་སྐྱེས་བཞིན་དུ་ཁྱོད་ཀྱི་ཞལ།
 ཞེས་པ་ཡན་ཅན་ཁྱད་འཕགས་ནི།
 བརྒྱུད་པར་བྱེད་འདི་ཡན་ཅན་དབེ། ॥ १८

त्वन्मुखं कमलेनैव तुल्यं नान्येन केनचित् ।
 इत्यन्यसाम्यव्यावृत्तेरियं सा नियमोपमा ॥१९॥

ཁྱོད་ཞལ་བསྒྲུ་ཉིད་དང་མཐུངས།
 བཞུན་ནི་འགའ་ཞིག་དང་ཡང་མིན།

ཞེས་པ་ མཚུངས་པ་ གཞན་ བརྒྱུག་ ལྟེན་ །

འདི་ མི་ རེས་པ་ཉིད་ཀྱི་དཔེ་ ॥ ༡༩

पद्यन्तावत्तवान्वेति मुखमन्यच्च तादृशं ।

अस्ति चेदस्तु तत्कारित्यसावनियमोपमा ॥२०॥

རེ་ཞིག་ ཁྱོད་ གདོང་ བརྒྱ་ཡི་ །

ཇེས་འགྲོ་ གཞན་ཡང་ དེ་འདྲ་བ་ །

གཤམ་དེ་ ཡོད་ན་ དེ་ ཁྱེད་འགྱུར་ །

ཞེས་པ་ འདི་མི་ རེས་མེད་དཔེ་ ॥ ༢༠

समुच्चयोपमाप्यस्ति न कान्त्येव मुखन्तव ।

हादनाख्येन चान्वेति कर्मणेन्दुमितीदृशी ॥२१॥

ཁྱོད་ གདོང་ མཇེས་པ་ ཁྱོད་ཡིས་ །

ཟླ་བའི་ ཇེས་སུ་ འགྲོ་མིན་ དེ་ །

དགའ་སྦྱོར་ ལས་ཀྱིས་ ཀྱང་ ཞེས་པ་ །

འདི་འདྲ་ བསྐྱས་པའི་ དཔེ་ ཡང་ ཡོད་ ॥ ༢༡

त्वय्येव त्वन्मुखं दृष्टं दृश्यते दिवि चन्द्रमाः ।
इयत्येव भिदा[।।a]नान्येत्यसावतिशयोपमा ॥२२॥

ཁྱད་ཀྱི་ལལ་ རི་ ཁྱིད་ཉིད་ལ་ ।
མཐོང་གི་ ལླ་བ་ མཁའ་ལ་ མཐོང་ ।
འདི་ཉིད་ ཁྱི་མ་ བ་དད་ དེ་ ।
གཞན་མེད་ ཅེས་ འདི་ ཁྱད་པར་དགེ ॥ २२

मय्येवास्या मुखश्रीरित्यलमिन्द्रोर्विकथनेः ।
पद्येपि सा यदस्त्येवेत्यसावुत्प्रेक्षितोपमा ॥२३॥

དེ་ཡི་ བཞིན་དཔལ་ ང་ཉིད་ལ་ ।
ཡོད་ ཅེས་ ལླ་བ་ ལྷོམས་ མི་དགོས་ ।
བདུ་ལ་ ཡང་ དེ་ ཡོད་ ལྷིར་ ।
ཞེས་པ་ འདི་ རི་ རབ་བདགས་དགེ ॥ २३

यदि किञ्चिद्भवेत्पद्मं सुष्ठु विभ्रान्तलोचनं ।
तत्तु मुखश्रियन्धत्तामित्यसावद्भुतोपमा ॥२४॥

གལ་ཏེ་ བརྒྱ་ འགའ་ཞིག་ ལ།
 སྒྲིན་ལེགས་ རྣམ་འཕྲུལ་ མིག་ལྷན་ ན།
 ཁྱོད་ཀྱི་ བཞིན་གྱི་ དབལ་ འཛིན་ ཏི།
 ཞེས་པ་ འདི་ བི་ མཛད་བྱུང་དཔེ། ॥ ༢༥

शशीत्युत्प्रेक्ष्य तन्वङ्गि त्वन्मुखन्त्वन्मुखाशया ।
 इन्दुमप्यनुधावामीत्येषा मोहोपमा स्मृता ॥२५॥

ལུས་ལྷ་ ཁྱོད་ གདང་ ར་བང་ཅན།
 ཞེས་ བདགས་ ཁྱོད་ གདོང་ བསམ་པ་ ཡིས་
 རྒྱ་བ་ཡི་ ཡང་ ཇེས་སུ་བསྟེགས།
 ཞེས་ འདི་ མཛད་པའི་དབེ་བྱ་ བཤད། ॥ ༢༥

किम्पद्ममन्तर्घ्नान्तालि किन्ते लोलेक्षणं मुख ।
 मम दोलायते चित्तमितीयं संशयोपमा ॥२६॥

བད་ནང་ བྱུང་བ་ འཁོར་རམ་ ཅི།
 ཁྱོད་ གདོང་ ལ་ མིག་ གཡོ་ འམ་ ཅི།

བདག་གི་སེམས་ནི་རྣམ་པར་གཡོ།

ཞེས་པ་འདི་ནི་ཐེ་ཚོམ་དཔེ ༥ ༢༩

न पद्मस्येन्दुनिग्राह्यस्येन्दुलज्जाकरी द्युतिः ।

अतस्त्वन्मुखमेवेदमित्यसौ निर्णयोपमा ॥२७॥

ལྷ་བ་སྤྲེངས་བྱེད་མཛོས་པ་འདི།

ལྷ་བས་ཚར་གཅོད་བརྒྱ་མིན།

དེ་ཤིར་བྱིད་ཀྱི་གདོང་ཉིད་དོ།

ཞེས་པ་འདི་ནི་ངེས་པའི་དཔེ ༥ ༢༧

शिशिरांशुप्रतिद्वन्द्वि श्रीमत्सुरभिगन्धि च ।

अम्भोजमिव ते वक्त्रमिति श्लेषोपमा मता ॥२८॥

བསིལ་ཟེར་ཅན་གྱི་དགུ་ལྷ་དང་།

དཔལ་དང་ལྷན་དང་དྲི་བཟང་གིས།

བྱིད་ཀྱི་གདོང་ནི་ཅུ་སྤྲེས་བཞིན།

ཞེས་པ་སྤྲེས་པའི་དཔེ་ཅུ་བཤད ༥ ༢༨

सरूपशब्दवाच्यत्वात् सा समानोपमा यथा ।

[11b] बालेवोद्यानमालेयं सालकाननशोभिनी ॥२६॥

མཚུངས་པའི་སྒྲ་ཡིས་ བཟོད་བྱའི་ ལྷོར་ །

མཉམ་ཉིད་དཔེ་ ལྷོ་ རི་ལྷར་ བློ་ །

སྒྲིད་ཚལ་སྒྲེང་ འདི་ ལྷོ་མོ་ བཞིན་ །

མཛེས་ལྡན་ སྒྲ་ལ་ཀྱ་ན་ན་ ॥ २०

पद्मं बहुरजश्चन्द्रः क्षयी ताम्रान्तस्तवाननम् ।

समानमपि सोत्सेकमिति निन्दोपमा *मता ॥३०॥

པདྨ་ རྒྱལ་ མང་ ལྷོ་པ་ འཛེང་ །

དེ་དག་ ལས་ རི་ བྱོད་ཀྱི་བཞིན་ །

མཚུངས་པ་ ལ་ ཡང་ བྱད་པར་བཅས་ །

ཞེས་པ་ ལྷོ་པའི་ དཔེ་བྱ་ འདོད་ ॥ ३०

ब्रह्मणोप्युद्भवः पद्मश्चन्द्रः शम्भुशिरोधृतः ।

तौ तुल्यौ तद्वन्मुखेनेति सा प्रशंसोप*मेप्यते ॥३१॥

བདུས་ ཚངས་པ་དག་ཀྱང་སྟེང་།
 རྩ་བ་ བདེ་འབྱུང་གཙུག་ན་ འཛིན་།
 དེ་དག་ ཁྱོད་གདོང་ མཚུངས་ ཞེས་པ་།
 དེ་ རི་ བསྐྱལ་ས་པའི་དཔེར་ བཟོད་ རོ ॥ 32

चन्द्रेण त्वन्मुखं तुल्यमित्याचिख्यासु मे मनः ।
 सगुणो वास्तु दोषो वेत्याचिख्यासोपमां विदुः ॥३२॥

ཡོན་དན་ལྷན་ རིས་ སྟོན་ འབྱུར་ ཡང་།
 ཁྱོད་གདོང་ རྩ་བ་ མཚུངས་ ཞེས་པ་།
 བཟོད་འདོད་ བདག་གི་ ཡིད་ལ་ཡོད་།
 ཅེས་པ་ བཟོད་འདོད་དཔེ་ ཞེས་ རིག་ ॥ 32

शतपत्रं शरच्चन्द्रस्त्वदाननमिति त्रयम् ।
 परस्परविरोधीति सा विरोधोपमोदिता ॥३३॥

འདབ་བསྐྱུ་པ་ དང་ སྟོན་རྩ་བ་ དང་།
 ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་ དང་ གསུམ་པོ་ རི།

པན་ཚུན་ རྣམ་པར་ འགལ་ ཞེས་པ།
 དེ་ནི་ འགལ་བའི་དཔེར་ བཟློན་དོ། ॥ ३३

न जातु शक्तिरिन्द्रोस्ते मुखेन प्रतिगर्जितुम् ।
 कलङ्किनो जडस्येति प्रतिषेधोपमैव सा ॥३४॥

དེ་མ་ལྟན་ ཞིང་ ལྷན་གྱུར་པ།
 རྩ་བ་ལ་ རི་ བྱོད་ གདོང་ དང་།
 འགྲན་པའི་ རྣམ་པ་ རྣམ་ཡང་ མེད།
 ཅེས་པ་ དགག་པའི་དཔེ་ ཉིད་དོ། ॥ ३४

मृगेषणाङ्गुलत्वद्वक्त्रमृगेणैवांकितः शशी ।
 तथापि सम एवासौ नोत्कर्षोति चट्टपमा ॥३५॥

བྱོད་ གདོང་ རི་དྲགས་མིག་གིས་མཚན།
 རྩ་བ་ རི་དྲགས་ཉིད་ཀྱིས་ མཚན།
 དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ འདི་ མཚུངས་ཉིད།
 ཁད་འཕགས་ མིན་ ཞེས་ མཛོས་པའི་དཔེ། ॥ ३५

न पद्मं मुखमेवेदं न भृङ्गौ चक्षुषी[12a] इमे ।
इति विस्पष्टसादृश्यात्तत्वाख्यानोपमेव सा ॥३६॥

འདྲི་ནི་ བཞིན་ ཉིད་ བརྒྱ་ མིན་ །
འདྲི་དག་ སྤང་བ་ མ་ཡིན་ མིག་ །
ཅེས་པ་ རྣམ་གསལ་ མཚུངས་པ་ ལས
དེ་ནི་ དེ་ཉིད་བཟོད་པའི་དཔེ ། ३६

चन्द्रारविन्दयोः कान्तिमतिक्रम्य मुखन्तव ।
आत्मनैवाभवत्तुल्यमित्यसाधारणोपमा ॥३७॥

ཟླ་བ་ བརྒྱ་ དག་གི་ ནི་ །
མཛེས་པ་ ལས་ འདས་ ཁྱོད་ཀྱི་ གཤོང་ །
བདག་རང་ཉིད་ དང་ མཚུངས་པར་གྱུར་ །
ཞེས་པ་ སྤྱན་མོང་མིན་པའི་དཔེ ། ३७

सर्वपद्मप्रभासारः समाहृत इव क्वचित् ।
त्वदाननं विभातीति तामभूतोपमां विदुः ॥३८॥

བརྒྱ་མཛེས་པའི་སྒྲིང་པོ་ཀུན།
 འགའ་ཞིག་དག་དུ་བསྐྱུས་པ་བཞིན།
 བྱོད་ཀྱི་གདོང་ནི་རྣམ་མཛེས་ཞེས།
 དེ་ནི་བྱང་མིན་དཔེ་ཞེས་རིག༥ ༣༤

इन्द्रविम्बादिव विषं चन्द्रनादिव पावकः ।
 परुषा वागितो वक्त्रादित्यसम्भावितोपमा ॥३६॥

རྒྱ་བའི་གཟུགས་ལས་དུག་བཞིན་དང་།
 ཅན་ལས་ནི་མེ་བཞིན་དུ།
 ཞལ་འདི་ལས་ནི་ཐུབ་མཛེས་ཅིག།
 ཅེས་པ་སྤྲིད་པ་མིན་པའི་དཔེ༥

चन्दनोदकचन्द्रांशुचन्द्रकान्तादिशीतलः ।
 स्पशस्तवेत्यतिशय* प्रथयन्ती बहूपमा ॥४०॥

ཅན་ཅུ་དང་རྒྱ་འོད་དང་།
 རྒྱ་ཤེལ་སྟགས་བཞིན་བྱོད་ཀྱི་ནི།

རེག་བ་ བསིལ་ ཞེས་ བྱེད་བར་ དག །
གསལ་བར་བྱེད་བ་ མང་བའི་དཔེ ལོ

चन्द्रविम्बादिवोत्कीर्णं पद्मगर्भादिवोद्धृतम् ।
तव तन्वङ्गि वदनमित्यसौ विक्रियोपमा ॥४१॥

ལུས་ལྷ་ བྱེད་ གདོང་ བཞིན་རས་ མི
ཆེ་བའི་ དཀྱིལ་འཁོར་ ལས་ བདོན་ བཞིན །
བསྐྱེད་ བར་ནས་ བྱེད་བ་ བཞིན །
ཞེས་བ་ འདི་ མི་ རྣམ་འགྱུར་དཔེ ॥ ༤༡

पुष्ण्यातप इवाह्नीव पूषा व्योम्नीव वासरः ।
विक्रमस्त्वय्यधाल्लक्ष्मीमिति मालोपमैव सा ॥४२॥

འོད་ཀྱིས་ ཉི་བཞིན་ ཉི་མ་ ཡིས །
ཉིན་བཞིན་ ཉིན་གྱིས་ མཁའ་ལ་ བཞིན །
རྣམ་པར་གཞོན་བས་ བྱེད་ལ་ དཔལ །
འཛིན་ ཞེས་ དེ་ནི་ བྱེད་བའི་དཔེ ॥ ༤༢

वाक्यार्थेनेव वाक्यार्थः [12b]कोपि यद्युपमीयते ।
एकानेकेवशब्दत्वात् सा वाक्यार्थोपमा द्विधा ॥४३॥

གང་ཡང་ ངག་དོན་ ཉིད་ཀྱིས་ བློ་
གཡ་དྲི་ ངག་དོན་ ཉིད་འཇལ་ བློ་
ངག་དོན་དཔེ་ ལྟེ་ བཞིན་སྒྲུ་ བློ་
གཅིག་ དང་ ཏུ་མས་ དེ་རྣམ་གཉིས་ ॥ ༤༣

त्वदाननमधीराक्षमाविर्दशनदीधिति ।
भ्रमद्भृङ्गमिवालक्ष्यकेसरं भाति पङ्कजं ॥४४॥

བྱིད་ གདོང་ མིག་ བློ་ མི་བདན་ ཞིང་ ।
སོ་ཡི་འོད་ཟེར་ རབ་གསལ་བ་ ।
འདས་སྒྲིས་ སྤང་བ་ གཡོ་ལྡན་ བློ་
གེ་སར་ དག་གིས་ མཆོན་བཞིན་ མཛེས་ ॥ ༤༤

नलिन्या इव तन्वद्भृङ्गास्तस्याः पद्ममिवाननम् ।
मया मधुघृतेनेव पायम्पायमरम्यत ॥४५॥

བཟླ་ཅན་ བཞིན་ ལུས་ལྷ་མོ་ །
 བཟླ་ བཞིན་དུ་ རི་ཡི་ གཞོང་ །
 སྤྲོད་ཅི་ སྤྲོད་བས་ བཞིན་དུ་ ཅི་ །
 བདག་གེས་ འཕྱངས་ཤིང་ འཕྱངས་ཤིང་ཅིས ॥ ༧༥

वस्तु किञ्चिदुपन्यस्य न्यसनात् तत्सधर्मणः ।
 साम्यप्रतीतिरस्तीति प्रतिवस्तूपमा यथा ॥४६॥

དངོས་པོ་ འགའ་ཞིག་ ཉེར་བཞོད་ནས །
 རི་ཡི་ཆོས་ མཐུན་ རབ་བཞོད་བ །
 མཉམ་བ་ཉིད་དུ་ རྟོགས་བ་ཅན །
 ཟླ་བོ་ དངོས་པོའི་དཔེ་ ཡིན་ དཔེར ॥ ༧༦

नैकोपि त्वाद्भूशोद्यापि जायमानेषु राजसु ।
 ननु द्वितीयो नास्त्येव पारिजातस्य पादपः ॥४७॥

སྒྲུལ་པོ་རྣམས་ ཅོ་ སྤྲོས་གུར་ ཀྱང་ །
 ད་ལྟ་ བྱོད་ འདྲ་ གཅིག་ ཀྱང་ མེད །

ཡོངས་འདུ་དག་གི་ཀང་འཐུང་ བློ །
གཉིས་པ་ དེས་པར་ ཡོད་མ་ཡིན ། ༥༧

अधिकेन समाहृत्य हीनमेकक्रियाविधौ ।
यद्वद्भवन्ति स्मृता सेयन्तुल्ययोगोपमा यथा ॥४८॥

རྒྱག་པས་ དམན་པ་ བྱ་བ་ཡི །
ཆོག་ གཅིག་ ལ་ རབ་བསྐྱས་ནས །
གང་ སྐྱས་ དེ་ནི་ མཚུངས་པ་ དག །
སྦྱར་བའི་དཔེ་ཅུ་ བཤད་དེ་ དཔེར ། ༥༨

दिवो जागति रक्षायै पुलोमारिभुवो भवान् ।
असुरास्तेन हन्यन्ते सावलेपा नृपास्त्वया ॥४९॥

དུ་ལོ་མའི་དགྲ་ མཐོ་རིས་ དང་ །
བྱོད་ནི་ ས་སྤང་ མེལ་ཆེ་བྱེད །
དེ་ཡིས་ དྲིགས་ལྡན་ ལྷ་མིན་ དང་ །
། ཀྱིས་ མི་ཡི་ བདག་པོ་ འཛོམས ། ༥༩

कान्त्या चन्द्रमसं [13a] घाता सूर्यन्धेर्येण चार्णवम् ।

राजन्ननुकरोषीति सैषा हेतूपमा स्मृता ॥५०॥

कुलं चो महेसं वसं ब्रुवन् ५८ ।

गच्छेत्पुनः पुनः किं शिखं ५९ ।

वदन् वसं कुमारेणैव हिसं सुपुनः ।

उसं च २६ किं कुदयेन ५९ ॥ १०

न लिङ्गवचने मित्रे न होनाधिकतापि वा ।

उपमादूषणायालं यत्रोद्वेगो न धीमतां ॥५१॥

होतुं शिखं पुनः ५९ गच्छ ॥

देसं वरं दयेनैव शिखं दया किं ।

वदन् दया ५९ किं वदन् ५९ ।

दया ५९ वदन् ५९ किं वदन् ५९ ॥ १०

स्त्रीव गच्छति षण्ढोयं वक्तव्येन स्त्री पुमानिव ।

प्राणा इव प्रियोयम्मे विद्या धनमिवाजिता ॥५२॥

མ་ནིང་ འདི་འགྲོ་ བྱད་མེད་ བཞིན།
 བྱད་མེད་ འདི་ སྒྲ་ སྒྲིས་པ་ བཞིན།
 བདག་གི་ གྲོགས་ འདི་ སྒོག་རྣམས་ བཞིན།
 དིག་པ་ རྣམས་ བསྐྱབས་ རྩེ་བཞིན་ནོ། ॥ ༡༢

भवानिव महीपाल देवराजो विराजते ।
 अलमंशुमतः कक्षामारोढुन्तेजसा नृपः ॥५३॥

ས་གཞི་སྒྲིང་པ་ བྱོད་ བཞིན་དུ།
 ལྷ་ཡི་རྒྱལ་པོ་ རྣམ་པར་མཇེས།
 འ་ཟེར་ཅན་གྱི་ རྣམ་པ་ལ།
 མི་བདག་གཟི་ཡིས་ འགོང་བར་ནས། ॥ ༡༣

इत्येवमादि सौभाग्यं न जहात्येव जातुचित् ।
 अस्ति च कचिदुद्वेगः प्रयोगे वाग्विदां यथा ॥५४॥

ཞེས་པ་ དེ་ལྷ་བྱ་ ལ་སོགས།
 སྒྲལ་བཟང་ རྣམ་ཡང་ གཏོང་མིན་ཉིད།

རི་བ་ འགའ་ལ་ འག་རིག་ རྣམས །
 མི་དགུས་བ་ ཡོད་ རི་ལྟར་ན ༥ ༡༭

हंसीव धवलश्चन्द्रः सरांसीवामलं नमः ।
 भर्तृभक्तो भटः श्वेव खद्योतो भाति भानुवत् ॥५५॥

ངང་མོ་ བཞིན་དུ་ རྒྱ་བ་ དཀར །
 མཚོ་ རྣམས་ བཞིན་དུ་ མཁའ་རི་མེད །
 ཁྱི་ བཞིན་ དཔའ་ལོ་ རི་ལ་ གས །
 ཉི་མ་ བཞིན་དུ་ མེ་ཁྱེར་ གསལ ༥ ༡༥

ईदृशं वर्ज्यते सद्भिः कारणं त्वन्न चिन्त्यताम् ।
 इववद्वायथाशब्दाः समाननिभ[13b]सन्निभाः ॥५६॥

འདི་འདྲ་ སྤངས་ཏི་ མཁའ་རྣམས་ ཀྱིས །
 རྒྱ་ ཡང་ འདིར་ ཉི་ བསམ་བར་བྱོས །
 བཞིན་ལྟར་ལྟ་བུ་རི་ལྟར་སྒྲ །
 མཐུན་མཚུངས་ཡང་དག་མཚུངས་ དང་ མཉམ ༥ ༡༦

तुल्यसंकाशनीकाशप्रकाशप्रतिरूपकाः ।
प्रतिपक्षप्रतिद्वन्दिप्रत्यनीकविरोधिनः ॥५७॥

ཡང་དག་གསལ་དང་ངེས་བར་གསལ །
རབ་གསལ་གཟུགས་ཀྱི་ཁློ་བོ་དང་ །
གཉིན་པོ་དང་ནི་དག་ཁློ་དང་ །
སོ་སོར་རྟོག་དང་འགལ་དང་འདྲ ॥ ༥༧

सदृक्सदृशसंवादिसजातीयानुवादिनः ।
प्रतिबिम्बप्रतिच्छन्दसरूपसमसम्मिताः ॥५८॥

བཟླ་བཅས་དང་ནི་བསྐྱུ་བ་དང་ །
རིགས་མཐུན་རྗེས་སུ་སྐྱུ་བ་དང་ །
གཟུགས་བརྟན་དང་ནི་སོ་སོར་སྟེན །
གཟུགས་མཚུངས་མཉམ་དང་ཡང་དག་འཇལ ॥ ༥༨

सलक्षणसदृक्षाभसपक्षोपमितोपमाः ।
कल्पदेशीयदेश्यादिः प्रख्यप्रतिनिधी अपि ॥५९॥

མཚན་ཉིད་མཐུན་འདྲ་མཚུངས་པ་དང་།
 མཐུན་ཕྱོགས་དཔེར་བྱས་དཔེ་དང་རྟོག་།
 དམན་དང་ཅུང་ཟད་དམན་སོགས་དང་།
 རབ་དྲ་སྒྲ་དང་སེ་སེར་བརྒྲེག་ ॥ ༥༠

सवर्णतुलितौ शब्दौ ये चान्यूनार्थवाचिनः ।
 समासश्च बहुव्रीहिः शशाङ्कवदनादिषु ॥६०॥

རིགས་མཐུན་མཉམ་བྱས་སྒྲ་དག་དང་།
 གང་ཡང་དམན་མིན་རོན་ཅན་ཆོག་།
 འབྲ་མང་པོ་ཡི་ཆོག་སྒྲ་དང་།
 རི་བོང་མཚན་མའི་གདོང་ཅན་སོགས་ ॥ ༥༠

स्पर्धते जयति द्वेष्टि द्रुह्यति प्रतिगर्जति ।
 आक्रोशत्यवजानाति कदर्थयति निन्दति ॥६१॥

འབྲན་དང་རྒྱལ་དང་སྤང་བ་དང་།
 འཁ་དང་མི་མཐུན་སྒྲོགས་པ་དང་།

འཕྲུ་བ་ ནང་ ཅི་ འཕྲུ་བ་ ནང་ །

སྒྲ་འཕེབས་བྱེད་ ནང་ སྒྲོད་པ་ ནང་ ॥ ༩༡

विडम्बयति संलुब्धे हसतीर्ष्यत्यसूयति ।

तस्य मुष्णाति सौभाग्यं तस्य कान्तिं विलुम्पति ॥६२॥

ཙོ་འདྲི་བ་ ནང་ འགོག་པ་ ནང་ །

གྲོད་ ནང་ སྒྲ་འཕེབས་ མི་བཟོད་ ནང་ །

དེ་ཡི་ སྒྲ་འཕེབས་ འཕྲུ་བ་ ནང་ །

དེ་ཡི་ མཇོས་པ་ རྒྱས་བྱེད་ ནང་ ॥ ༩༢

तेन सार्धं विगृह्णाति तुलान्तेना]14a]विरोहति ।

तत्पदव्यां पदं धत्ते तस्य कक्षां विगाहते ॥६३॥

དེ་དང་ འགྲུག་ ལས་ ཚར་གཙོད་ ནང་ །

དེ་དང་མཇོས་པ་ ལས་ རྒྱས་པར་འཕྲུག་ །

དེ་ཡི་མཇོས་པ་ རྒྱས་པར་ ནང་ །

དེ་ཡི་ནས་པ་ ལ་ འཕྲུ་བ་ ནང་ ॥ ༩༣

तमन्वेत्यनुबध्नाति तच्छीलन्तन्निषेधति ।

तस्य चानुकरोतीति शब्दाः सादृश्यसूचिनः ॥६४॥

དེ་ཡི་ཇེས་འགོ་ཇེས་སུ་འཁོང་།

དེ་ཡི་ངང་ཚུལ་ དེ་འགོག་ དང་།

དེ་ཡི་ཇེས་སུ་བྱེད་ ཅེས་བའི།

སྒྲ་ནམས་ མཚུངས་པ་ གསལ་བྱེད་ཡིན། ॥ ༦༥

उपमैव तिरोभूतभेदा रूपकमिष्यते ।

यथा बाहुलता पाणिपद्मञ्चरणपल्लवम् ॥६५॥

ཐ་དད་ སྒྲ་མིན་གྱང་བ་ཡི།

དཔེ་ཉིད་ དག་ནི་ གཞུགས་ཅན་ འདོད།

དབྱང་བ་ འཁྲི་ཤིང་ལག་བ་ ནི།

བདུ་ཀང་བ་ཡལ་འདབ་པོ། ॥ ༦༦

अंगुल्यः पल्लवान्यासन् कुसुमानि नखाचिषः ।

बाहुलते वसन्तध्रीस्त्वङ्नः प्रत्यक्षचारिणी ॥६६॥

ལག་བའི་འབྲི་ཤིང་ སོར་མོ་ རྣམས་ །
 ཡལ་འདབ་ སེན་མོའི་འོད་ཟེར་ ཅི་ །
 མེ་དོག་དུ་གུར་ དཔྱིད་ཀྱི་དབའ་ །
 བྱིད་ནི་ དེད་ལ་ མངོན་སུམ་གྱི་ ॥ ༤༩

इत्येतदसमस्ताख्यं समस्तं पूर्वरूपकं ।
 स्मितम्मुखे.दोज्योत्स्नेति समस्तव्यस्तरूपकं ॥६१॥

ཞེས་པ་ འདི་ནི་ མ་བསྐྱུགས་དེ་ །
 སྒྲ་མ་ བསྐྱུས་པའི་གཟུགས་ཅན་ཙོ་ །
 བཞིན་ རྩ་ འཇུས་པའི་རྩ་འོད་ཅེས་ །
 གཟུགས་ཅན་ བསྐྱུས་ དང་ མ་བསྐྱུས་པའོ་ ॥ ༥༠

ताम्राङ्गुलिदलश्रेणि नखदीधितिकेसरं ।
 ध्रियते मूर्ध्नि भूपालैर्भवच्चरणपङ्कजं ॥६८॥

སོར་མོ་དམར་བའི་ འདབ་ཟེང་དང་ །
 སེན་མོའི་འོད་ཀྱི་ གེ་སར་ཅན་ །

ཁྱིེ་ཀྱེ་ འབས་ཀྱི་ ལྷ་སྒྲིམ་ནི།
ས་སྒྲིེང་རྣམས་ཀྱི་ སྤྱི་པོར་ འཛིན། ॥ ༤༤

अंगुल्यादौ दलादित्वं पादे चारोप्य पद्यताम् ।
तद्योग्यस्थानविन्यासादेतत्सकलरूपकम् ॥६६॥

སོར་མོ་ ལ་སོགས་ འདབ་ སོགས་ དང་།
ཀང་བས་ བརྒྱ་ཉིད་ བྱས་ནས།
དེ་འོས་ བཀས་སུ་ རྣམ་བཀོད་བ།
འདི་ནི་ མཐའ་དག་ བཟགས་ཅན་ཉིད། ॥ ༤༥

[14b] अकस्मादेव ते जण्डि स्फुरिताधरणलवम् ।
मूखं मक्तालवो धत्ते घर्मात्मःकणमञ्जरीः ॥७०॥

གཏུམ་མོ་ སྒྲིེབུར་ ཉིད་དུ་ནི།
ཁྱིེ་གདོང་ མཆུ་ཡི་ཡལ་འདབ་ བཞོ
དུལ་གྱི་ལྷ་ཡི་ཐིག་བ་ཡི།
དོག་བ་ ཟུངྱིག་ འོད་ཅན་ འཛིན། ॥ ༥༠

मञ्जरीकृत्य घर्मांस्तु पल्लवीकृत्य चाधरं ।

नान्यथा कृतमन्त्रास्यमतोवयवरूपकं ।७१॥

འདིར་ནི་ རྩལ་ཆུ་ རོག་པར་ བྱས། །

མཆུ་ཡང་ ཡལ་འདབ་ཉིད་ བྱས་ཀྱི། །

གཤོང་ནི་ རྣམ་པ་ གཞན་ མ་བྱས། །

དེ་ཤིར་ ཅ་གས་ གཟུགས་ཅན་ལོ། ॥ ७१

वह्निनभ्रु गलद्धर्मजलमालोहितेक्षणम् ।

विवृणोति मदावस्थामिदं वदनपङ्कजम् ॥७२॥

གཤོང་པའི་ འདས་སྐྱེས་ སྒྲིན་འཁྱེག་ ཅིང་། །

རྩལ་གྱི་ཆུ་ ཟག་པ་ དང་། །

མིག་དག་ ཀྱན་ཏུ་ དམར་པ་ འདི། །

ཁྱེས་པའི་གནས་སྐབས་ གསལ་བར་བྱེད། ॥ ७२

अधिकृत्य मुखान्गानि मुखमेवारविन्दताम् ।

आसीद्गमितमन्त्रेदमतोवयवरूपकम् ॥७३॥

འདིར་ནི་ གདོང་བའི་ཆ་ཤས་དག །
 རྣམ་འགྱུར་ མ་བྱས་ གདོང་བ་ཉིད །
 བརྒྱར་ བཞེད་བྱས་ དེས་ན་ འདི །
 ཆ་ཤས་ཅན་གྱི་ གཟུགས་ཅན་ནོ ༥ ॥ १३

मदपाटलगण्डेन रक्तेजोत्पलेन ते ।
 मुखेन मुग्धे सोप्येष जनो रागमयः कृतः ॥७४॥

མཛེས་མ་ སྤྱོད་བའི་ འཁྱུར་ཆོས་དམར་ །
 མིག་གི་ ཞུགས་ དམར་པོ་ཅན་ །
 བྱིད་ཀྱི་ གདོང་གིས་ སྤྱེ་བ་ནི །
 འདི་ཡང་ དམར་བའི་ རང་བཞིན་ བྱས་ ॥ १ॣ

एकाङ्गरूपकञ्चैतदेवं द्विप्रभृतीनि च ।
 अङ्गानि रूपयन्त्यत्र योगायोगौ भिदाकरो ॥७५॥

དེ་ལྟར་ འདིར་ནི་ གཉིས་ སོགས་ཀྱི །
 ཡན་ལག་ རྣམས་ ཀྱང་ གསལ་བྱེད་བ་ །

འདི་ནི་ ཡན་ལག་གཅིག་གཟུགས་ཅན།

ལྷན་དང་མི་ལྷན་ བ་དང་བྱེད། ॥ ८१

स्मितपुष्पोज्ज्वलं लोलनेत्रभृंगमिदं मुखं ।

इति [15a] पुष्पद्विरेफाणां सङ्गत्या युक्तरूपकं ॥७३॥

གདོང་ འདི་ འཇུ་ས་པའི་ མི་དོག་འབར།

གཡོ་བའི་ མིག་གི་ བྱང་བ་ཅན།

ཞེས་པ་ མི་དོག་ བྱང་བ་ དག།

འགྲོགས་པས་ལྷན་པའི་གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ ८२

इदमाद्रस्मितज्योत्स्नं क्षिग्धनेत्रोत्पलं मुखं ।

इति ज्योत्स्नोत्पलायोगादयुक्तनाम रूपकम् ॥७७॥

གདོང་ འདི་ འཇུ་ས་ གཤེར་ རླེ་འོད་དང་།

སྒྲུ་ས་པའི་ མིག་གི་ རྩུ་ལ་ཅན།

རླེ་འོད་ རྩུ་ལ་ སི་འོས་པས།

འོས་མིན་ཞེས་པའི་ གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ ८३

रूपणादङ्गिनोङ्गानां रूपणारूपणाश्रयात् ।

रूपकं विषमं नाम ललितं जायते यथा ॥७८॥

ཡན་ལག་ཅན་གཟུགས་ ཡན་ལག་ རྣམས་ ।

གཟུགས་བྱས་ གཟུགས་སྲུ་མ་བྱས་ལ་ ।

བརྟན་པ་ མི་མཉམ་པ་ ཞེས་བའི་ ।

གཟུགས་ཅན་ མཛེས་པ་ ཡིན་ཏེ་ དཔེར་ ॥ १८

मदरक्तपोलेन मन्मथस्त्वन्मुखेन्दुना ।

नतिते ध्रूलतेनालं मर्दितुम्भुवनत्रयं ॥७९॥

སྟོས་བའི་ མཁུར་རྩོམ་རབ་ དཔེར་ཞིང་ ।

སྒྲིན་མའི་འཁྲི་ཤིང་ གར་བྱེད་པ་ ।

ཁྲིད་ གདོང་ རྒྱ་བས་ ཡིད་སྤུབ་ཀྱིས་ ।

འཛིག་རྟེན་ གསུམ་པོ་ གཞེས་པར་རྣམས་ ॥ १९

हरिपादः शिरोलग्नजङ्घुकन्याजलांशुकः ।

जयत्यसुरनिःशंकसुरानन्दोत्सवध्वजः ॥८०॥

ཇ་རྒྱའི་བྱ་མོའི་ཚུ་གོས་ ནི །

འཕྲོག་བྱེད་ ཀང་པའི་རྩེར་ཐུན་པ །

ལྷ་མིན་ རྟག་མེད་ལྷ་དགའ་བའི །

དགའ་ཕྱོན་སྐྱལ་མཚན་ སྐྱལ་གྱུར་ཅིག

विशेषेणसमग्रस्य रूपं केतोर्यदीदृशं ।

पादे तदर्पणादेतत् सविशेषणरूपकं ॥८१॥

གང་ཞིག་ བྱད་པར་ཚོགས་པ་ཡི །

གཟུགས་ཀྱི་སྐྱལ་མཚན་ འདི་འདྲ་བ །

དེ་ནི་ ཀང་པ་ ལ་ བཞོད་ དེ །

བྱད་པར་དང་བཅས་གཟུགས་ཅན་ནོ ། ལ

न मीलयति पद्मानि न नभोप्यवगाहते ।

त्वन्मुखेन्दुर्ममासूनां हरणायैव प [15b] श्यति ॥८२॥

པདྨ་ནམས་ནི་ མི་རྩམ་ ཞིང་ །

ནམ་མཁའ་ལ་ ཡང་ མི་འགྲོ་བ །

ཁྱོད་གདོང་ཟླ་བས་ བདག་གི་ནི །
 སྒྲིག་ཆསས་ འཕྲིག་པ་ ཉིད་དུ་ བཞུ ॥ ~३

अक्रिया चन्द्रकार्याणामन्यकार्यस्य च क्रिया ।
 अत्र सन्दर्श्यते तस्माद्विरुद्धश्लाम रूपकं ॥८३॥

ཟླ་བའི་ བྱ་བ་ བྱ་མིན་ དང་ །
 གཞན་ གྱི་བྱ་བའི་ བྱ་བ་ འདྲིར་ །
 ཡང་དག་ བཞུན་ ཉི་ དེ་ ཡི་ སྒྲིར་ །
 འགལ་བ་ ཉེས་བྱའི་ གཞུགས་ཅན་ནོ ॥ ८३

गाम्भीर्येण समुद्रोसि गौरवेणासि पर्वतः ।
 कामदत्त्वाच्च लोकानामसि त्वं कल्पपादपः ॥८४॥

ཁྱོད་ནི་ ཟབ་བས་ཀྱི་མཚོ་དང་ །
 བརྗོང་བ་ ཉིད་ ཀྱིས་ རི་བོ་ ཡིན་ །
 འཇིག་རྟེན་ ཆསས་ལ་ འདོད་པ་ནི །
 སྒྲིར་ སྒྲིར་ དགག་ བསས་ཀྱང་འཕྱང་ངོ་ ॥ ८४

गाम्भीर्यप्रमुखैरत्र हेतुभिः सागरो गिरिः ।

कल्पद्रुमश्च क्रियते तदिदं हेतुरूपकं ॥८५॥

འདིར་ནི་ ཟབ་བ་ལ་སྟོགས་པའི།

སྐུ་ནས་ས་ དག་གིས་ སྐུ་མཆོ་ རི།

དཔག་ བསམ་ཤིང་ ཡང་ རྟེན་བས་ན།

འདི་ནི་ སྐུ་ཡི་གཞུགས་ཅན་ནོ། ॥ ८५

राजहंसापभोगार्हं भ्रमरप्रार्थ्यसौरभं ।

सखि वक्ताम्बुजमिदन्तवेति श्लिष्टरूपकं ॥८६॥

སྟོགས་མོ་ ཁྱེད་ཀྱི་ གདོང་ བད་འདི།

རྒྱ་ཚུགས་ས་ས་ ཉེར་སྦྱད་འོས།

རི་ཞིས་ བྱང་བས་དོན་ གཉེར་འོས།

ཞེས་པ་ སྦྱར་བའི་གཞུགས་ཅན་ནོ། ॥ ८६

इष्टं साधर्म्यं वैधर्म्यदशानाद्गौणमुख्ययोः ।

उपमान्यतिरेकाख्यं रूपकद्वितयं यथा ॥८७॥

གཙོ་བོ་དང་ནི་ཕལ་པ་ལ །
 ཆོས་མཐུན་ ཆོས་མི་མཐུན་ མཐོང་བས །
 དཔེ་དང་ རྩོག་པ་ཅན་ ཉེས་པའི །
 གཟུགས་ཅན་ རྣམ་པ་གཉིས་ འདྲོད་ དཔེར ༥ ༥༡

अयमालोहितच्छायो मदेन मुखचन्द्रमाः ।
 मन्मद्वोदयरागस्य चन्द्रस्य प्रतिगर्जति ॥८८॥

མྱོས་པས་ ཀྱན་དུ་ དཔར་བ་ ཡོས །
 བཀའ་པ་ བཞིན་ གྱི་ རྩ་བ་ འདི །
 འཆར་ཀའི་ དཔར་བ་ པན་ཆོགས་པའི །
 རྩ་བ་ལ་ནི་ རབ་དུ་འབྱན ༥ ༥༢

चन्द्रमाः पीयते देवैर्मया त्वन्मुखचन्द्रमाः ।
 अस्मप्रोप्यसौ [16a] शश्वदयमापूर्णमण्डलः ॥८९॥

ལྷ་ རྣམས་ ཀྱིས་ ནི་ རྩ་བ་ འཐུངས །
 བདག་གིས་ བྱོད་གདོང་རྩ་བ་ འཐུངས །

འདི་ནི་ གང་བ་ མ་ཡིན་ ཡང་ །
 འདི་ནི་ དག་ཏུ་ དགྲིལ་འཁོར་ རྩོགས་ ॥ ༤༠

मुखचन्द्रस्य चन्द्रत्वमित्थमन्योपतापिनः ।
 न ते सुन्दरि संवादीत्येतदाक्षेपरूपकं ॥ ६० ॥

སེམས་མ་ ཁྱོད་ གདོང་ ཟླ་བ་ནི་ །
 འདི་ལྟར་ གཞན་ དག་ གདུང་བྱིད་པས་ །
 ཟླ་བ་ཉིད་ཏུ་ བརྩོད་མིན་ ཞེས་ །
 དེ་ནི་ སྤང་བའི་ གཟུགས་ཅན་ནོ་ ॥ ༤༠

मुखेन्दुरपि ते चण्डि मां निदहति निदयं ।
 भाग्यदोषान्ममैवेति तत्समाधानरूपकं ॥ ६१ ॥

གདུམ་མོ་ ཁྱོད་ གདོང་ ཟླ་བས་ ཀྱང་ །
 བརྩེ་བ་མེད་པར་ བདག་ སྤྲེག་པ་ །
 བདག་ཉིད་ སྐལ་བ་ ཉིད་ཀྱི་ སྒྲོན་ །
 ཞེས་འདི་ མཉམ་འཛོག་ གཟུགས་ཅན་ནོ་ ॥ ༤༡

मुखपङ्कजरङ्गेस्मिन् धूलतानर्तकी तव ।
लीलानृत्यं करोतीति रम्यं रूपकरूपकं ॥६२॥

ཁྱེད་གདོང་ འདམ་སྒྲེས་ རོར་ འདིར །
སྒྲིན་མའི་ འབྲི་ཡིང་ གར་མཁན་མ །
རེལ་སྒྲེག་ དགའ་བས་ གར་བྱེད་དོ །
ཞེས་པ་ གཟུགས་ཅན་གྱི་གཟུགས་ཅན ། ༧༥

नैतन्मुखमिदम्पद्मं न नेत्रे भ्रमराविमौ ।
एतानि केसराण्येव नैता दन्तार्चिषस्तव ॥६३॥

འདི་ནི་ གདོང་མིན་ འདི་ བརྒྱ །
འདི་དག་ མིག་མིན་ འདི་ བྱང་བ །
འདི་ རྒྱམས་ ག་སར་ ཉིད་ ཡིན་ འདི །
ཁྱེད་གྱི་ སོ་ཡི་ འོད་ཟེར་ མིན ། ༧༦

मुखादित्वं निवर्त्यैव पद्मादित्वेन रूपणात् ।
उद्भावितागुणोत्कर्षन्तस्त्वापह्वरूपकं ॥६४॥

གདོང་ ལ་སོགས་པ་ཉིད་ བསྐྱོག་མྱེ །
 བར་ ལ་སོགས་ གཞུགས་བྱས་པས །
 ཡོན་ཏན་ བྱད་འཕགས་ གསལ་བྱད་པ
 དེ་ཉིད་ བསྐྱོན་དོར་ གཞུགས་ཅན་ཙམ་ ॥ ༩༧

न पर्यन्तो विकल्पानां रूपकोपमयोरतः ।
 दिङ्मात्रं दर्शितं धीरैरनुक्तमनुमीयताम् ॥९५॥

གཞུགས་ཅན་དཔེ་ཡི་ རྣམ་དོག་ རྣམས །
 མཐའ་ཡོད་ས་ཡིན་ དེ་ཡི་ལྗོངས་ །
 རྫོང་ལྷན་ རྣམས་ཀྱི་ རྟོགས་ཙམ་ བསྐྱར་ །
 མ་བརྗོད་ རྗེས་སུ་དཔག་བར་བྱ ། ༩༨

[16b] जातिक्रियागुणद्रव्यवाचिनैकत्र वर्तिना
 सर्ववाक्योपकारश्चेत् तमाहुर्दीपकं यथा ॥९६॥

རིགས་ དང་ བྱ་བ་ ཡོན་ཏན་ རྗེས །
 རྟོག་ གཞུག་ ལ་ནི་ གནས་པ་ ཡིས །

གལ་དེ་ ངག་ ཀུན་ལ་ གན་ན །
 དེ་ནི་ གསལ་བྱེད་དུ་བརྗོད་ དཔེར ༥ ༡༩
 .

पवनो दक्षिणः पर्णं जीर्णं हरति वीरुधाम् ।
 नवाय च ननाङ्गुलीनाम् मानभङ्गाय कल्पते ॥६७॥

ལྷོ་ཡོ་རྒྱུང་ གོས་ འཁྲི་ཤིང་གི །
 འདབ་མ་རྩིང་བ་ ལྷགས་བར་བྱད །
 དུད་བའི་ལུས་ཅན་མ་རྣམས་ཀྱི །
 ཁྱེད་ས་བ་ གསར་དུ་ འཛོམས་བར་བྱེད ༥ ༢༡

चरन्ति चतुरस्रभोधिबेलोद्यानेषु दन्तिनः ।
 चक्रवालान्द्रिकुञ्जेषु कुन्दभासो गुणाश्च ते ॥६८॥

གྲུ་འོ་ རུ་གཏེར་ བཞི་ ངོགས་ཀྱི །
 སྒྱེད་མོས་ཚལ་དུ་ སོ་ཅན་དེ །
 ཁྱེད་ལུག་ རི་བོའི་ ཁྱེད་ས་སུ་ ཡང་ །
 ཁྱེད་ཀྱི་ ཡོན་ཏན་ ཀུན་འོ་ འོད ༥ ༢༢

श्यामलाः प्रावृषेण्याभिर्दिशो जीमूतपङ्क्तिभिः ।

भुवश्च सुकुमाराभिर्नवशाब्दवलराजिभिः ॥६६॥

सुवसन्तः श्रैरुं सुवसन्तः श्रैरुं ।

रुवसन्तः श्रैरुं सुवसन्तः श्रैरुं ।

सन्तः श्रैरुं सुवसन्तः श्रैरुं ।

श्रैरुं सुवसन्तः श्रैरुं सुवसन्तः ॥ ७०

विष्णुना विक्रमस्थेन दानवानां विभूतयः ।

कापि नीना कनोपगमनानीना नैनर्धर्मा ॥७०॥

सुवसन्तः श्रैरुं सुवसन्तः श्रैरुं ।

रुवसन्तः श्रैरुं सुवसन्तः श्रैरुं ।

सन्तः श्रैरुं सुवसन्तः श्रैरुं ।

श्रैरुं सुवसन्तः श्रैरुं सुवसन्तः ॥ ७०

इत्यादिदीपकान्युक्तान्येवं मध्यान्तयोरपि ।

वाक्ययोर्दर्शयिष्यामः कानिचित्तानि तद्यथा ॥१०१॥

ཞེས་པ་ དང་པོའི་ གསལ་བྱེད་ བསྟན་ །
 དེ་བཞིན་ བར་ དང་ མཐའ་ ཡི་ ཡང་ །
 ཆོག་དག་ བདག་གིས་ བསྟན་པར་བྱ་ །
 དེ་དག་ འགའ་ཞིག་ འདི་ལྟ་སྟེ ॥ ༡༠༡

नृत्यन्ति निचुलोत्सङ्गे गायन्ति च कलापिनः ।
 बध्नन्ति च पयोध्रेषु द्वशो हर्षाश्रु 17a] गर्भिणी ॥१०२॥

གར་བྱེད་ རི་ཚུ་ལ་ བར་བྱ་ །
 གྲུ་ ཡང་ ལེན་ནོ་ མདོངས་སམཐའ་ཅན་ །
 དགའ་བས་ རྒྱས་པའི་ མིག་དག་ ཀྱང་ །
 རུ་འཛིན་ལ་ རི་ གཏོད་པར་བྱེད་ ॥ ༡༠༢

मन्दो गन्धवहः क्षारो वह्निरिन्दुश्च जायते ।
 चर्चाचन्दनपातश्च शल्लपातः प्रवासिनां ॥१०३॥

རི་བཞེན་ དལ་བྱ་ འགྲུ་བྱེད་དེ་ །
 རྒྱ་བ་ དག་ ཀྱང་ མི་ཚུ་འགྲུར་ །

ཅན་གྱི་བ་ལྟོང་བ་ ཡང་།

མཚན་ལྟོང་ འབྲམས་བ་ རྣམས་ ལའོ། ། ༡༠༢

जलं जलधरोद्ग्रीर्णकुलङ्कहशिखण्डिनां ।

चलञ्च तडितान्दाम बलं कुसुमधन्वनः ॥१०४॥

ཐུ་འཛིན་ གྱིས་ནི་ རབ་གདང་ཐུ།

ཁྱིམ་གྱི་ གུའ་ཕུད་ལྟོང་བའི་ ཚོགས།

སློབ་གྱི་ཐབ་བ་ གཡོ་བ་ ཡང་།

མེད་ཀྱི་གཞུ་ཅན་དག་གི་ དབྱང་། ། ༡༠༣

त्वया कर्णोत्पलं कर्णे स्मरेणास्त्रं शरासने ।

मयापि मरणे चेतस्त्रयमेतत्समं कृतं ॥१०५॥

ཁྱིད་ཀྱིས་ ཨུལ་ རྩ་བ་ལ།

འདོད་པས་ མདའ་ རི་ མདའ་སྟན་ལ།

ངས་ ཀྱང་ མེས་ནི་ འཛི་བ་ ལ།

གསུམ་པོ་ འདི་ནི་ མཉམ་དུ་བྱས། ། ༡༠༤

शुक्लः श्वेताचिषो वृद्धयै पक्षः पञ्चशरस्य सः ।

स च रागस्य रागोपि यूना रत्युत्सवश्रियः ॥१०६॥

དགར་ཕྱོགས་ཀྱིས་ ཉི་ རེད་དཀར་ཅན་ ।

འཕེལ་བྱེད་ དེ་ཡིས་ མདའ་ལྔ་པ་ ।

དེས་ ཀྱང་ རགས་ མདངས་ རགས་མདངས་ཀྱིས་ ।

ན་རུང་ དགའ་བའི་ དགའ་སྟོན་དཔལ་ ॥ ༡༠༥

इत्यादिदापकत्वाप पूर्वपूर्वव्यपोंक्षणी ।

वाक्यमाला प्रयुक्तेति तन्मालादीपकं मतं ॥१०७॥

ཞེས་ རོགས་ གསལ་བྱེད་ ཡིན་ རེད་ ཀྱང་ ।

ལྔ་མ་ལྔ་མ་ལ་ ལྟེས་བའི་ ।

རག་གི་ སྟངས་ རབ་ལྔ་ སྟིར་ ।

དེ་ནི་ སྟངས་བའི་གསལ་བྱེད་དེ་ ॥ ༡༠༦

मवल्लेपमनङ्गस्य वर्धयन्ति बलाहकाः ।

लशयन्ति तु धर्मस्य मास्तोद्धतशीकराः ॥१०८॥

རྒྱུང་གིས་ གཙུབས་པའི་ཚུ་ཐོགས་ཅན་ །

སྒྲིན་གྱིས་ ལུས་མེད་དག་གི་ རི་ །

ཨ་བ་ལེ་བ་ འབྲེལ་བར་བྱེད་ །

རྒྱལ་གྱི་ དག་ནི་ སེལ་བར་བྱེད་ ॥ ༡༠༥

अवलेपपदेनात्र वलाहकपदेन च ।

क्रिये विरुद्धे संयुक्ते [176]तद्विरुद्धार्थदीपकं ॥१०६॥

འདིར་ནི་ སྒྲིན་གྱི་ཆོག་དག་ དང་ །

ཨ་བ་ལེ་བའི་ ཆོག་དག་གིས་ །

བྱ་བ་ འགལ་བར་ལྷན་བ་ རེ་ །

འགལ་བའི་དོན་གྱི་གསལ་བྱེད་དོ་ ॥ ༡༠༦

हरत्याभोगमाशानां गृह्णाति ज्योतिषां गणम् ।

आदत्ते चाद्य मे प्राणानसौ जलधरावली ॥११०॥

ཚུ་འདྲིན་ དག་གི་ སྤྱང་བ་ འདིས་ །

ས་ནསས་ཀྱི་ རི་ གོ་སྐབས་ འཕྲོག་ །

སྒྲུང་མ་ ཡི་ ཉི་ ཚོགས་ རྣམས་ འཛིན་ །
 དེང་ཡང་ བདག་གི་སྒྲོག་ རྣམས་ ཡིན ॥ ११

अनेकशब्दोपादानात् क्रियैवैकाग्र दीप्यते ।
 यतो जलधरावल्यास्तस्मादेकार्थदीपकं ॥१११॥

གང་སྒྲུང་མ་ འཛིན་ སྒྲུང་བ་ཡི་ །
 བྱ་བ་ གཅིག་ ཉིད་ གསལ་བྱེད་ འདིར་ །
 ཏུ་མའི་ སྒྲུ་ཡིས་ ཉིར་སྒྲུངས་པ་ །
 དེ་སྒྲུང་ དོན་གཅིག་གསལ་བྱེད་པོ་ ॥ १११

हृद्यगन्धवहास्तुङ्गास्तमालश्यामलत्विषः ।
 दिवि भ्रमन्ति जीमूता भुवि चैते मतंगजाः ॥११२॥

དྲི་ཡི་བཞུགས་པ་ ཡིད་འོང་ མཐོ་ །
 སྒྲོ་བསངས་ ཏུ་སྒྲུ་ལ་ཡི་འོད་ །
 སྒྲིན་ ཉི་ མཁའ་ལ་ སྒྲུ་བྱེད་ དེ་ །
 བླང་ཆེན་ འདི་དག་ ས་ལའོ ॥ ११२

अत्र धर्मैरभिज्ञानामध्यानां दन्तिनामपि ।

भ्रमणेनैव सम्बन्ध इति निष्ठार्थदीपकं ॥११३॥

འདིར་ ཅི་ ཆས་དག་ བ་དང་ མིན།

སྒྲིན་དང་ སྒྲུང་པོ་ རྣམས་དག་ ཀྱང་།

སྐྱུ་བ་ཉིད་ ཀྱིས་ འབྲེལ་བའི་ སྤྱིར།

སྤྱར་བའི་དོན་གྱི་ གསལ་བྱེད་དོ ॥ ११३

अनेनैव प्रकारेण शेषाणामपि दीपके ।

विकल्पानामनुगतिर्विधातव्या विचक्षणैः ॥११४॥

རྣམ་པ་ འདི་ཉིད་ ཁོ་ན་ཡིས།

གསལ་བྱེད་ལ་ནི་ རྣམ་རྟོག་པ།

སྐྱུ་ག་ས་ རྣམས་ ཀྱང་ རྗེས་འགྲོ་ཡིས།

མཁས་པ་ རྣམས་ ཀྱིས་ རྟོགས་པར་བྱ ॥ ११४

अर्थावृत्तिः पदावृत्तिरुभयावृत्तिरित्यपि ।

दीपकस्थान एवेष्टमलंकारत्रयं यथा ॥११५॥

བསལ་བྱེད་ཀྱི་ བོ་ བཀས་ཉིད་དུ །
 རོན་བསྐྱེད་ དང་ བོ་ ཚོག་བསྐྱེད་ དང་ །
 བཀྲིས་ཀ་ བསྐྱེད་བ་ ཅེས་བ་ ཡི །
 བྱེད་ བསུས་བ་དག་ འདོད་དེ་ དཔེར ༥ ११४

विकसन्ति कदम्बानि स्फुटन्ति कुटजोद्गमाः ।
 उन्मीलन्ति च [18a] कन्दल्यो दलन्ति ककुभानि च ॥११६॥

ཀ་དམས་ བོ་ བས་བར་བྱས །
 ཀྱ་ཏ་རྩོད་ས་ རབ་བསལ །
 ཀྲ་ལུ་བོ་ རབ་དུ་ བྱེ །
 ཀ་ཀྱ་སྒྱ་ ཡང་ བྱས་བར་བྱུར ༥ ११५

उत्कण्ठयति मेघानां माला वर्गङ्गुलापिनां ।
 यूनां चोत्कण्ठयत्यद्य मानसम्मकरध्वजः ॥११७॥

སྒྲིན་གྱི་ སྤེང་བ་ དག་གིས་ བོ་ །
 མ་བྱེད་ ཚོགས་ བསུས་ མུ་སྒྲིག་བྱེད །

ཐུ་སྲིན་ རྒྱལ་མཚན་ཅན་ གྲིས་ དེང་ །
ན་རྒྱང་ རྣམས་ ཡིད་ འདོད་ལྡན་བྱེད ༥ ॥ ११७

जित्वा विश्वम्भवानद्य विहरत्यवरोधनैः ।
विहरत्यप्सरोभिस्ते रिपुवर्गो दिग्धं गतः ॥११८॥

ཀྱན་ལས་ རྒྱལ་ནས་ དེ་རིང་ བྱོད་ །
བཅུན་མོ་ རྣམས་ དང་ ཅེ་བར་བྱེད །
བྱོད་ཀྱི་དག་སྡེ་ མཐོ་རིས་ སོང་ །
ལྷ་མོ་ རྣམས་ དང་ ཅེ་བར་བྱེད ༥ ॥ ११८

प्रतिषेधोक्तिराक्षेपस्त्रैकाल्यापेक्षया त्रिधा ।
अथास्य पुनराक्षेप्यभेदानन्त्यादनन्तता ॥११९॥

དགག་པ་ བཟོད་པ་ འགོག་པ་ ལྟེ །
དུས་གསུམ་ལ་ལྟོས་ རྣམ་པ་ གསུམ་ །
ཅི་ལྟེ་ དེ་ཡང་ དགག་བྱ་ཡི །
དབྱེ་བ་ མཐའ་ཡས་ ཡིར་ མཐའ་ཡས ༥ ॥ ११९

अनङ्गः पञ्चमिः पुण्यैर्विभ्वंजयतेषुमिः ।
इत्यसंभाव्यमथवा विचित्रवस्तुशक्तयः ॥१२०॥

लुस'खेद'ग्री' किं' खेदे'ग' वी ।
खेद'ल'लुस' गृह'लस'कुल'वर'गुरु ।
उस'व' खी'खेद' यद'न' किं ।
दे'स'वे'दि'न'स'व' न'स'वर'वग्न ॥ १२०

इत्यनङ्गजयायोगबुद्धिर्हेतुबलादिह ।
प्रवृत्तैर्व यदाक्षिता वृत्ताक्षेपस्तदीकृशः ॥१२१॥

लेस'व' अदि'न'किं' सु'खे'स' ग्रीस ।
लुस'खेद' कुल'वर'खी'रि'गस' खे ।
दे'ल'स' गुरु' वग्न'ग' वद'गी' खे ।
गुरु'व' अवे'ग'व' दे' अदि'अद ॥ १२१

कुतः कुबलयं कर्णे करोषि कलभाषिणि ।
किमपाङ्गमपर्याप्तमस्मिन्कर्मणि मन्यसे ॥१२२॥

ལྷན་སྒྲོགས་མ་ དག་ ཅི་ཡི་སྤྱིར །
 རྩ་བ་ལ་ནི་ ཡུལ་ལ་ འཇུག །
 ལས་ འདི་ལ་ རི་ རྩར་མིག་དག །
 ཡོངས་རྫོགས་ མིན་པར་ སེམས་སམ་ ཅི ༥ ॥ २२३

स वर्तमानाक्षेपोयं कुर्वत्ये [186] वासितोत्पलं ।
 कर्णे काचित्प्रियेणैवं चाटुकारेण रुध्यते ॥१२३॥

འགའ་ཞིག་ དཀར་མིན་ ཡུལ་ །
 རྩ་བར་འཇུག་ལ་ མཇོའ་བོ་ཡིས །
 དེ་ལྟར་ བསྟོད་པས་ མཇོས་བྱེད་པ །
 འདི་ནི་ མཇོན་གྱར་ འགོག་པ་འོ ༥ ॥ २२३

सत्यं ब्रवीमि न त्वम्मान्द्रष्टुं बल्लभ लप्स्यसे ।
 अन्यचुम्बनसंक्रान्तलाक्षारक्तेन चक्षुषा ॥१२४॥

རྫོ་བོ་ བདེན་པར་ སྒྲ་འོ་ བདག །
 ལེགས་ དང་ཅུས་ནས་ འཕྲོས་པའི །

བྱ་སྤྲེགས་ཀྱིས་དམར་ མིག་གིས་ནི །

ཁྱོད་ཀྱིས་ མཐོང་བར་འགྱུར་ མ་ལགས ༥ १२८

सोयं भविष्यदाक्षेपः प्रागेवातिमनस्विनी ।

कदाचिदपराधोस्य भावीत्येवमरुन्ध यत् ॥१२५॥

སྤྲར་ཉིད་ ཤེན་དྲ་ཁྱེད་སྤྲ་མས །

ནམ་ཞིག་ འདི་ཡིས་ གཞོད་བ་ དག །

འདྲུང་བ་ དེ་ལྟར་ འགོག་བྱེད་བ །

འདི་ནི་ འདྲུང་འགྱུར་ འགོག་བའོ ॥ १२५

तव तन्वङ्गि मिथ्यैव रूढमङ्गेषु मार्दवं ।

यदि सत्यमृदून्येव किमकाण्डे रुजन्ति मां ॥१२६॥

ལུས་སྤྲ་ ཁྱོད་ཀྱི་ ཡན་ལག་ རྣམས །

འཇམ་བ་ ཉིད་དྲ་ གནས་བ་ བརྩན །

གཡ་དེ་ བདེན་བར་ འཇམ་བ་ན །

སྤྲོ་བྱར་དྲ་ བདག་ ཅ་ལ་ གདུང་ ॥ १२६

धर्माक्षेपोयमाक्षितमङ्गनागात्रमार्दवं ।
कामुकेन यदत्रैवं कर्मणा तद्विरोधिना ॥१२७॥

གང་ཕྱིར་ རེ་ལྟར་ འདོད་ལྟན་ གྱིས། །
རེ་ ནང་ འགལ་བའི་ལས་ གྱིས་ ནི ॥ १२७
བྱད་མེད་ ལུས་ འདི་ འཇམ་བ་ ནག། །
འགོག་བ་ འདི་ ནི་ ཚེས་ འགོག་བའོ། །

सुन्दरी सा नवेत्येष विवेकः केन जायते ।
प्रभामात्रं हि तरलं दृश्यते तत्र नाश्रयः ॥१२८॥

དེ་ནི་ མཛེས་མ་འམ་ ཡིན་ཞེས། །
ནམ་རིག་ འདི་ནི་ ཅེ་ལས་སྟེ། །
དེར་ནི་ འདོ་ཙམ་ གཡོ་བ་ ཉིད། །
མཐོང་བར་གྱར་གྱི་ རེན་མ་ཡིན། ॥ १२८

धर्म्याक्षेपोयमाक्षितो धर्मिधर्मं प्रभाह्वयं ।
अनुज्ञायात्र तद्रूपमत्याश्रयं विवक्षता ॥१२९॥

གང་ འདིར་ གཞུགས་ཅན་ས་ རོ་མཚར་ ।
 བརྗོད་པར་ འདོད་པས་ འདྲ་ཅས་པའི་ ।
 ཆོས་ འདི་ ཁས་སྤངས་ ཆོས་ཅན་ དག་ ।
 འགོག་འདི་ ཁས་སྤངས་ ཆོས་ཅན་ དག ॥ ༡༩༩

चधुषी [19a] तन रज्येते स्फुरत्यधरपल्लवः ।
 ध्रुवौ च भुम्भे न तथाप्यदुष्टस्यास्ति मे भयं ॥१३०॥
 བྱོད་ཀྱི་ མིག་ནི་ དམར་གྱུར་ ཅིང་ ।
 མཚུ་ཡི་ ཡལ་འདབ་ གཡོ་བ་ དང་ ।
 སྤོམ་ས་ འབྱོག་སྟེ་ དེ་ལྟ་ནའང་ ।
 ཉེས་པ་ མེད་པས་ བདག་ མི་འཇིགས ॥ ༡༣༠

स एष कारणाक्षेपः प्रधानं कारणं मियः ।
 स्वापराधो निषिद्धोत्र यत्प्रियेण पटीयसा ॥१३१॥
 གང་གྱིར་ མཇེའ་ལོ་ མཁས་པ་ ཡིས་ ।
 འདི་དག་ འདིར་ནི་ གྱུ་ འགོག་པའོ་ ।

འཇིགས་པ་ ཡི་ནི་ ལྷ་ཡི་གཙོ།
རང་གི་ ཉེས་པ་ འགོག་བྱེད་པ་ ॥ ༡༣༡

दूरे प्रियतमः सोयमागतो जलदागमः ।
दृष्ट्वा फुल्ला निचुला न मृता चास्मि किं न्वहं ॥१३२॥

མཇེའ་པོ་ དག་ ནི་ རིང་ན་ གནས།
ཆུ་འཇོན་ བགོད་ལྔ་ན་ འདི་ནི་ འོངས།
ནི་ཆུ་ལ་ ཡང་ ལྷས་པར་ མཐོང་།
བདག་གི་ མིན་པ་ འདི་ ཅི་ག། ॥ ༡༣༢

कार्याक्षेपः स कायस्य मरणस्य निवर्त्तनात् ।
तत्कारणमुपन्यस्य दारुणं जलदागमं ॥१३३॥

དེ་ལྷ་ཆུ་འཇོན་ བགོད་པ་ ནི།
མི་བཟད་པ་ དག་ ཉེར་ བགོད་ བས།
འབྲས་བུ་ འཆི་བ་ བསྐྱོག་པའི་ཕྱིར།
དེ་ནི་ འབྲས་བུ་ འགོག་པ་འོ། ॥ ༡༣༣

न चिरं मम तापाय तव यात्रा भविष्यति ।

यदि यास्यसि यातव्यमलमाशंकयात्र ते ॥१३४॥

གལ་ཏེ་ གཤེགས་ན་ གཤེགས་པར་ མཇོན་ ।

སྟོན་གྱི་ བཤོད་པས་ བདག་ལ་ བློ་ །

གཏུང་བ་ ཡུན་རིང་ འགྲུང་མི་འགྲུང་ །

འདི་ལ་ སྟོན་ནི་ རོགས་མི་འཚལ་ ॥ १३४

इत्यनुष्ठामुखेनैव कान्तस्याश्लिष्यते गतिः ।

मरणं सूचयन्त्येव सोऽनुष्ठाक्षेप उच्यते ॥१३५॥

ཞེས་པ་ འཆི་བ་ གསལ་བྱེད་པས་ ।

ཇེས་གནང་ ཉིད་གྱི་ གློ་ནས་ བློ་ །

མཇའ་བའི་ བཤོད་པ་ འགོག་བྱེད་པ་ །

འདི་ནི་ ཇེས་གནང་ འགོག་པར་ བཇོན་ ॥ १३५

धनञ्च बहु लभ्यन्ते सुखं क्षेमं च वर्त्मनि ।

न च मे प्राणसं[19b]वेदस्तथापि प्रिय मात्स्य गाः ॥१३६॥

རྩོམ་ནི་ མང་པོ་ རྩོད་ འགྱུར་ ཞིང་ །
 ལམ་དུ་ ཡང་ནི་ བདེ་ ཞིང་ དག།
 བདག་སྟོབ་ལ་ ཡང་ ཐེ་ཚོམ་མེད།
 འོན་ཀྱང་ མཇའ་པོ་ འགོ་མི་བ། ॥ ༡༣༩

प्रत्याक्षभाणः गतः प्रिययात्राविबन्धिः
 प्रभुत्वेनैव रुद्धस्तत्प्रभुत्वाक्षेप ईदृशः ॥१३७॥

མཇའ་པོ་ འགོ་བར་ སྟོར་བ་ ཡི།
 གྱུ་ རྣམས་ དག་ རི་ རབ་བཤད་ནས།
 དབང་ཉིད་ གྱིས་ རི་ དེ་ འགོག་བ།
 འདི་འདྲ་ དབང་གིས་ འགོག་བ་འོ། ॥ ༡༣༠

जीविताशा बलवती धनाशा दुर्बला मम ।
 गच्छ वा तिष्ठ वा कान्त स्वावस्था तु निवेदिता ॥१३८॥

བདག་ནི་ གསོན་རེ་ སྟོབས་དང་ལྡན།
 རྩོམ་གྱི་ བསམ་བ་ སྟོབས་ལྡན་མིན།

མཛེའ་བོ་ གཤེགས་ སམ་ བཞུགས་ལགས་སམ །
རང་གི་ གནས་སྐབས་ སྒྲོས་པ་ ལགས ॥ १३५

असावनादराक्षेपो यदनादरवद्वचः ।
प्रियप्रयाणं हन्धत्या प्रयुक्तमिह रक्तया ॥१३६॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ ཆགས་ལྡན་སམ །
མཛེའ་བོའི་ བགོད་པ་ འགོག་བྱེད་ཅིང་ །
མ་གུས་བཞིན་དུ་ ཆོག་ སྒྲོར་བ་ །
འདི་ནི་ མ་གུས་པས་ འགོག་པའོ ॥ १३७

गच्छ गच्छसि चेत्कान्त पन्थानः सन्तु ते शिवाः ।
ममापि जन्म तत्रैव भूयाद्यत्र गतो भवान् ॥१४०॥

མཛེའ་བོ་ གལ་དེ་ གཤེགས་ན་ བཞུད་ །
ཁྱོད་གྱི་ ལམ་ནི་ ཤེས་གུར་ཅིག །
གང་དུ་ ཁྱོད་ནི་ གཤེགས་པ་ དེར་ །
བདག་ ཀྱང་ སྒྲེ་བ་ ཉིད་ གུར་ཅིག ॥ १४०

इत्याशीर्वचनाक्षेपो यदाशीर्वाद्बलर्तना ।

स्वावस्थां सूचयन्त्यैव कान्तयात्रा निषिध्यते ॥१४१॥

दे.बु. षी.स.व.ई.द.ल.स. ग्री.स. ग.द. ।

र.द.ग. ष.ग.स.स.ग.स. ग.स.स.सु.द.स.स. ।

स.ई.द.स.ई. स.ग.ई.द.स. र.ग.ग.सु.द.स. ।

र.दे.के. षी.स.व.ई.द. ग्री.स. र.ग.ग.स.ई. ॥ १८१

यदि सत्यैव यात्रा ते काप्यन्या मृग्यतां त्वया ।

अहमद्यैव रुद्धास्मि रन्ध्रापेक्षेण मृत्युना ॥१४२॥

ग.ल.द. सु.द.र.ग. स.दे.के.ई.द. के. ।

सु.द.ग्री.स. ग.ग.ग.स. र.ग.ग.ग.ग. के.ल. ।

स.द.ग.के. ग.ग.के.ल. र.के.स.ई.स. ।

दे.ई.द. ई.द.दु. र.ग.ग.स.स.र.ल.गु.र. ॥ १८२

इत्येष [20a] परुषाक्षेपः परुषाक्षरपूर्वकम् ।

कान्तस्याक्षिप्यते यस्मात्प्रस्थानं प्रेमनिघ्नया ॥१४३॥

གང་ཕྱིར་ མཛེའ་བའི་ དབང་གུར་མས །
 མཛེའ་བོའི་ བཟོད་པ་འགོག་བྱེད་པ །
 ཆོག་ཅུབ་ ཡེ་གོ་ སྟོན་འགོ་ཅན །
 འདི་ནི་ ཅུབ་ མེས་ འགོག་པ་འོ ༥ ༡༦༣

गन्ता चेद्गच्छ तूर्णन्ते कर्णं यान्ति पुरा रवाः ।
 आर्त्तबन्धुमुखोद्गीर्णाः प्रयाणप्रतिबन्धिनः ॥१४४॥

གལ་ཏེ་ གཤེགས་ན་ སུར་དུ་ བཞུད །
 ཕྱི་ནས་ གཅིན་ འདུན་ རྒྱགས་པའི་ཁས །
 བསྐྱགས་པའི་ཆོང་ འགོ་བ་ ཡི །
 གོགས་གུར་ ཁྱོད་ཀྱི་ རྩ་བར་ འོང་ ༥ ༡༦༤

साचिव्याक्षेप एवैष यदत्र प्रतिषिध्यते ।
 प्रियप्रयाणं साचिव्यं कुर्वत्येकान्तरक्तया ॥१४५॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ མཐའ་གཅིག་དུ །
 ཆགས་མས་ གོས་ཅིད་ བྱེད་པ་ ཡིས །

མཇའ་བོའི་བཟོད་པ་ འགོག་པ་ འདི །
གྲོས་ཉིད་ ཀྲིས་ནི་ འགོག་པ་འོ ༥ ༡༧

गच्छति वक्तुमिच्छामि मत्प्रियं त्वत्प्रियैषिणी ।
निर्गच्छति मुखाम्नाणी मा गा इति करोमि किम् ॥१४६॥

བཟུད་ཅེས་ བྱིད་དགེས་ བཛོད་ འདོད་ཀྱང་ །
བདག་ཉིད་ དགའ་བར་བྱེད་པའི་ ཚོག །
མ་གཤེགས་ ཅེས་པ་ ཁ་ནས་ནི །
བྱང་བར་ བྱར་ལ་ བདག་ ཅི་ བྱེད ༥ ༡༧

यन्नाक्षेपस्त यन्नस्य कृतस्यानिष्टवस्तुनि ।
विपरीतफलोत्पत्तेरानर्थक्योपदर्शनात् ॥१४७॥

མི་འདོད་ དངོས་ལ་ འབད་བྱས་པས །
འབྲས་བྱ་ ལྷན་ཅི་ལོག་ བསྐྱེད་པས །
དོན་མེད་ ཉེ་བར་ བསྐྱེད་པའི་ ལྷིར །
དེ་ནི་ འབད་པས་ འགོག་པ་འོ ༥ ༡༨

क्षणदर्शनविघ्नाय पक्षमस्पन्दाय कुप्यतः ।

प्रेम्णः प्रयाणन्तं ब्रूहि मया तस्येष्टमिष्यते ॥१४८॥

སྒྲུང་ཅིག་ལྷ་བའི་ བོགས་བྱེད་བའི །

རྩི་མ་ བསྐྱོད་བ་ལ་ ཁྲོ་བ །

ཁྱེད་ཀྱིས་ མཇེའ་བར་ འགྲོ་བ་ སྒྲོས །

བདག་ནི་ དེ་ཡི་ འདོད་བ་ འདོད ॥ १४८

अयं परवशाक्षेपो यत्प्रेमपरतन्त्र[20b]या ।

तया निषिध्यते यात्रेत्यस्यार्थस्योपसूचनात् ॥१४९॥

གང་ལྟུང་ མཇེའ་བའི་ གཞན་དབང་མ །

དེ་ཡིས་ འགྲོད་བ་ འགྲོག་བྱེད་ཅིང་ །

དོན་ འདི་ ཉེ་བར་གསལ་བྱེད་ ལྟུང་ །

འདི་ནི་ གཞན་དབང་ འགྲོག་བ་འོ ॥ १४९

सहिष्ये विरहं नाथ देहादृश्याञ्जनं मम ।

यद्वत्तन्नाङ्गन्दयः ग्रहन्तुं मां न पश्यति ॥१५०॥

མགོན་པོ་ འབྲེལ་བ་ བཞེད་པར་ བགྱི།
 བཀང་གེས་ མིག་ བསྐྱོས་ བདག་ལ་ནི།
 འདོད་པས་ བསྐྱུན་དུ་ མི་མཐོང་བའི།
 མཐོང་མིན་ མིག་སྒྲན་ བདག་ལ་ ལྷོལ ॥ ༡༣༠

दुष्करं जीवनोपायमुपन्यस्योपरुध्यते ।
 पत्युः प्रस्थानमित्याहुरपायाक्षेपमीदृशं ॥१५१॥

འཆོ་བའི་ཐབས་ ཅི་ དཀའ་བ་དག།
 ཉི་བར་བཀོད་ནས་ བདག་པོ་ནི།
 འགྲོ་བ་ འགོག་པར་བྱེད་པའི་ སྤྱིར།
 འདི་འདྲ་ ཐབས་ ཀྱིས་ འགོག་པར་བཞེད་ ॥ ༡༣༡

प्रवृत्तैव प्रयासीति वाणी बल्लभ ते मुखात् ।
 अयतापि त्वयेदानीम् मन्दप्रेम्णा ममास्ति किम् ॥१५२॥

རོ་བོ་ བྱིད་ཀྱི་ ཞལ་ནས་ ཆོག།
 བདག་ འགྲོ་ ཞེས་པ་ ཇེས་པར་བྱང་།

མཛེལ་བ་ ནམན་པ་ ཁྱོད་ཀྱིས་ ན ।

མ་ཕྱིན་ན་ ཡང་ བདག་ལ་ཅི ॥ ༡༥༢

रोषाक्षेपोयमुद्रिकस्नेहनिर्यन्धणात्मया ।

संरन्धया प्रियारन्धं प्रयाणं यन्निवार्यते ॥१५३॥

མཛེལ་བ་ གྲུས་པས་ མ་བསྐྱམས་བའི་ ।

བདག་ཉིད་ ཁྱོ་བས་ མཛེལ་བོ་ཡི་ ।

འགྲོ་བ་ ཅུམ་པ་ བསྐྱོག་པ་ གང་ ।

འདི་ནི་ ཁྱོ་བས་ འགྲོག་པ་འོ ॥ ༡༥༣

नाम्रातं न कृतं कर्णे स्त्रीभिर्मधुनि नापितं ।

त्वद्दिषां दीर्घिकास्वेव विशीर्णजीर्णमुत्पलं ॥१५४॥

མ་བསྐྱམས་ བུ་མའི་ན་བ་ལ་ ।

མ་བྱས་ ཆང་ལ་ མ་བདབ་བར་ ।

ཁྱོད་ཀྱི་ ནག་ཡི་ རིང་ ཉིད་དུ་ ।

ཡུལ་ རྒྱན་པ་ རྒྱུས་པར་གྱུར་ ॥ ༡༥༤

असावनुक्रोशाक्षेपः सानुक्रोशमिषोत्पले ।

व्यावर्त्य कर्म तद्योग्यं शोच्यावस्थोपदर्शनात् ॥१५५॥

झुंङ्खेः वठसः वळिक्कं ज्ञुंङ्खलं ।

देः देसः लसः किं वळ्ळेण सुसः कस ।

सुः कः देसः पदिं सवसः झुंङ्खं सुंङ्खं ।

अदिं किं झुंङ्खेसः अणेण पः दे ॥ १५५

अर्थो न संभृतः कश्चिन्न वि[21a]द्या काचिदर्जिता ।

न तपः संचितं किंचिद्रुतञ्च सकलं वयः ॥१५६॥

देक्कं किं अण्णं पणं क्खेणसः सः सुस ।

दिणः पः अण्णं पणं सः वळ्ळेणसः पदिं ।

दण्णं सुवः अण्णं पणं सः वसवसः पणं ।

क्कं क्खेणं सवणं दणं सदिं पणं सुणं ॥ १५६

असावनुशयाक्षेपो यस्मादनुशयोत्तरं ।

अर्थाऽर्जुनादेव्यावृत्तिर्दृशितीह गतायुषा ॥१५७॥

བང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ ཆོ་སོང་བས།
 དོན་སྐྱབ་ ལ་སོགས་ འགོག་བ་ནི།
 འགྱོད་བ་ བཅོམ་པ་ སྙོན་བྱེད་བ།
 འདི་ནི་ འགྱོད་བས་ འགོག་བ་འོ། ॥ १५७

किमयं शरदंभोदः किं वा हंसकदम्बकम् ।
 रुतस्रूपुरसंवादि श्रूयते तन्न तोयदः ॥१५८॥

ཅི་འདི་ སྙོན་གྱི་རུ་འཛོན་ བས།
 ཡང་ན་ ངང་བའི་ཆོགས་སམ་ཅི།
 སྐྱ་ནི་ ཀང་བའུ་བ་ཀྱི་ འདྲ་བ།
 བྲོས་བས་ དེ་ནི་ རུ་འཛོན་ མིན། ॥ १५८

इत्ययं संशयाक्षेपः संशयो यन्निवर्त्यते ।
 धर्मेण हंससुलभेनास्पृष्टग्रनजातिना ॥१५९॥

ཆོས་འདི་ ངང་བ་ལ་ ཡོད་ཅིང་།
 སྐྱ་ནི་ རིགས་ལ་ མ་རིག་བས།

གང་ཞིག་ བེ་ཚོས་ རྫོག་བྱེད་པ།

འདི་ནི་ བེ་ཚོས་ འགོག་པ་འོ། ॥ ༡༧༠

अमृतात्मनि पद्मानां ब्रह्मरि क्षिप्रतारके ।

मुखेन्दौ तव सत्यस्मिन्नपरेण किमिन्दुना ॥१६०॥

བདུད་རྩིའི་ བདག་ ཉིད་ བསྐྱེད་ །

སྣང་ ཞིང་ སྤྲུམ་པའི་ ཏུ་ར་གེ།

ཁྱིལ་ གདོང་ རྫོག་པ་ འདི་ ཡོད་ བཞིན།

རྫོག་པ་ གཞན་གྱིས་ ཅི་ཞིག་ བྱ། ॥ ༡༥༠

इति मुख्येन्दुराक्षितो गुणान्मौणेन्दुवर्तिनः ।

तत्समानदर्शयित्वेति स्थित्याक्षेपस्तथाविधः ॥१६१॥

ཕལ་པའི་རྫོག་པ་ལ་ བདེན་པ།

དེ་ མཚུངས་ ཡོན་ཏན་ བཟུན་བྱས་ནས།

གཙོ་བོའི་རྫོག་པ་ འགོག་བྱེད་པ།

ནས་པ་ དེ་ལྟར་ སྤྲུམ་པས་ འགོག། ॥ ༡༥༡

चित्रमाक्रान्तविश्वोपि विक्रमस्ते न तुप्यति ।

कदा वा दृश्यते तृतिस्वीर्णस्य हविर्मु[21b]जः ॥१६२॥

ཐམས་ཅད་མནན་ ཡང་ ཁྱོད་ཀྱི་ནི་ ॥

ནམ་གཞན་ ཆོས་པ་ མེད་པ་ མཚར་ ।

ཡང་ན་ བསྐྱེག་ཟ་ འབར་བ་ལ་ ।

ཆོས་པ་དག་ ནི་ ནམ་ཞིག་ མཐོང་ ॥ १६३

अयमर्थान्तराक्षेपः प्रक्रान्तोयं निवर्त्यते ।

विस्मयोऽर्थान्तरस्येह दर्शनात्तत्तद्धर्मणः ॥१६३॥

གང་ཕྱིར་ འདྲིར་ནི་ རོན་ གཞན་དག་ ।

དེ་ཡི་ ཆོས་ མཚུངས་ བསྐྱེག་བྱས་ནས་ ।

ཡ་མཚན་ ཆོས་པ་ འགོག་བྱེད་པ་ ॥

འདྲི་ནི་ རོན་ གཞན་ འགོག་པ་ལོ་ ॥ १६४

न स्तूयसे नरेन्द्र त्वं वदासीति कदाचन ।

स्वमेव मत्वा गृह्णन्ति यतस्त्वञ्जनमर्थिनः ॥१६४॥

སྒྲིན་པ་པོ་ ཞེས་ ནས་ཡང་ ནི།
 མི་དབང་ ཁྱོད་ལ་ མི་བསྟོད་དེ།
 གང་ཕྱིར་ སྒྲོང་བས་ ཁྱོད་ཀྱི་ཞོར།
 རང་གི་ ཉིད་དུ་ བསམས་ནས་ ལེན། ॥ ༡༩༮

इत्येवमादिराक्षेपो हेत्वाक्षेप इति स्मृतः ।
 अनयैव दिशान्येपि विकल्पाः शक्यमूहितुं ॥१६५॥

ཅེས་པ་ ལ་སོགས་ འགོག་པ་ནི།
 ལྷུས་ འགོག་པ་ ཞེས་ བཤད་པ་སྟེ།
 ཕྱོགས་ འདི་ཉིད་ཀྱིས་ ནས་པར་དོག།
 གཞན་པ་ དག་ ཀྱང་ དཔག་པར་ནས། ॥ ༡༩༩

शेषः सोर्थान्तरन्यासो वस्तु प्रस्तुत्य किञ्चन ।
 तत्सामानसमर्थस्य न्यासो योन्यस्य वस्तुनः ॥१६६॥

གང་ཞིག་ དངོས་ འགའ་ རབ་བཀོད་ནས།
 དེ་ཡི་ ལྷུས་ཕྱིད་ ནས་པ་ཅན།

དངོས་པོ་ གཞན་དག་ འགོད་བ་དེ །

དོན་གཞན་ བཀོད་པར་ ཤེས་པར་བྱ ། ༡༩༩

विश्वव्यापी विशेषस्थः श्रेष्ठाविद्धो विरोधवान् ।

अयुक्तकारी युक्तात्मा युक्तायुक्तो विपर्ययः ॥१६७॥

ཀུན་ཁྱབ་ བྱད་པར་ལ་ གནས་ དང་ །

སྦྱར་བ་ཅན་ དང་ འགལ་བ་ཅན །

མི་འོས་བྱེད་ དང་ འོས་པའི་བདག །

འོས་དང་ མི་འོས་ བཞེག་པ་འོ ། ༡༩༠

इत्येवमादयो भेदाः प्रयोगेष्वस्य लक्षिताः ।

उदाहरणमालैषां रूपव्यक्तये निदर्शयते ॥१६८॥

འདི་ཡི་ དབྱེ་བ་ དེ་ལྟ་ སྟགས །

སྦྱོར་བ་ རྣམས་ལ་ རབ་དུ་མཚོན །

འདི་རྣམས་ རང་བཞིན་ གསལ་བྱའི་སྤྱིར །

དབེར་ བཛྲོད་ སྤང་བ་ བསྟན་པར་བྱ ། ༡༩༡

भगवन्तौ जगन्नेत्रे सूर्यचन्द्रमसावपि ।

पश्य गच्छत ए[22a]वास्तं नियतिः केन लङ्घ्यते ॥१६६॥

ལེགས་ལྷན་ འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱི་སྐབ་ །

ཉི་མ་ དང་ནི་ རྒྱ་བ་ ཡང་ །

ནུབ་བར་གུར་བ་ ཉིད་ལ་ ལྷོས་ །

ངེས་བ་ལ་ རྟི་ སུ་ཡིས་ འགོངས་ ॥ १७०

पयोमुचः परीतापं हरन्त्येते शरीरिणां ।

नन्वात्मलामो महतां परदुःखोपशान्तये ॥१७०॥

ཐུ་འཛིན་ འདི་དག་ ལུས་ཅན་ གྱི་ །

ཡོངས་སུ་གདུང་བ་ འཕྲོག་བར་བྱེད་ །

ཆེན་པོ་རྣམས་ ཀྱིས་ བདག་ ཐོབ་ གྲགས་ །

གཞན་ གྱི་ སྐྱབ་བསྐྱལ་ ཞི་ སྐད་དུ་འོ ॥ १७०

उत्पादयति लोकस्य प्रीतिं मलयमारुतः ।

ननु दाक्षिण्यसम्पन्नः सर्वस्य भवति प्रियः ॥१७१॥

མ་ལ་ཡ་ཡི་ རྒྱུ་གིས་ རྟོ་ །
 འཇིག་རྟེན་ དགའ་བ་ སྦྱོང་པར་བྱེད་ །
 དྲ་ཁྲི་རྒྱ་ དང་ ཡང་དག་ལྟར་ །
 ཀུན་གྱི་ སྦྱིང་སྦྱུག་ མ་ཡིན་ནམ་ ॥ ༡༧༧

जगदाह्लादयत्येष मलिनोपि निशाकरः ।
 अनुगृह्णाति हि परान् सदोषोपि द्विजेश्वरः ॥१७२॥

མཚན་མོར་ བྱེད་ འདི་ རི་མ་ དང་ །
 ལྟན་ཡང་ འགྲོ་བ་ དགའ་བ་སྦྱོང་ །
 བཞིས་སྦྱིས་དབང་པོ་ སྦྱོན་ལྟར་ ཡང་ །
 བཞུན་དག་ རྟེན་སྦྱ་འཇིན་པར་ནམ་ ॥ ༡༧༨

मधुपानकलात्कण्ठाभिर्गंतोप्यलिनां ध्वनिः ।
 कटुर्भवेति कर्णस्य कामिनां पापमीदृशम् ॥१७३॥

སྦྱང་རྩི་ འབྲུངས་པའི་ མགྲིན་ སྦྱན་ ལས་ །
 བྱང་བ་ བྱང་པའི་ སྦྱ་དག་ ཀྱང་ །

ན་བར་ ཅུབ་བ་ ཉིད་ འགུར་བ །
 འདོད་ལྷན་ རྣམས་ཀྱི་ སྒྲིག་ འདི་འདྲ ། ॥ ११३

अयं मम दहत्यङ्गमम्मोजदलसंस्तरः ।
 हुताशनप्रतिनिधिर्दाहात्मा ननु युज्यते ॥१७४॥

ཅུ་སྒྲིམ་འདབ་མའི་མལ་སྟན་ འདིས །
 བདག་གི་ ལུས་ འདི་ གཏུང་བར་བྱེད །
 སྒྲིག་བའི་ བདག་ ཉིད་ བསྒྲིག་ཟ་ དང་ །
 འདྲ་བས་ རིགས་བ་ མ་ཡིན་ རྣམ ། ॥ ११ॣ

क्षिणोतु कामं शीतांशुः किं वसन्तो दुनोति मां ।
 मलिनाचरितं कर्म सुरमेनन्वसाम्प्रतम् ॥१७५॥

བསིལ་ཟེར་ཅན་གྱིས་ ཉམས་བྱེད་ མོད །
 དབྱིད་ ཀྱིས་ བདག་ནི་ ཅི་ལ་ གཏུང་ །
 རི་མ་ཅན་གྱིས་ སྟོད་བའི་ ལས །
 དག་བས་ མི་འོས་བ་མིན་རྣམ ། ॥ ११॥

कु[22b]मुदान्यपि दाहाय किमङ्ग कमलाकरः ।

न हीन्दुगृहेषूपेषु स्यंगृहो मृदुर्भवेत् ॥१७६॥

गुं'सुन'सुन' यन' सुन'सुन'न ।

सुन'न'सुन'न'सुन' सुन'सुन'न ।

सुन'सुन' सुन'न'सुन' सुन'सुन'न ।

सुन'सुन' सुन'न'सुन' सुन'सुन'न ॥ १७७ ॥

शब्दोपात्ते प्रतीते वा सादृश्ये वस्तुनोर्द्वयोः ।

तत्र यद्भेदकथनं व्यतिरेकः स कथ्यते ॥७७॥

सुन'सुन'सुन'सुन' सुन'सुन'सुन'सुन' ।

सुन'सुन'सुन' सुन'सुन'सुन' सुन'सुन'सुन' ।

सुन'सुन' सुन'सुन' सुन'सुन'सुन' ।

सुन'सुन' सुन'सुन'सुन' सुन'सुन'सुन' ॥ १७८ ॥

घेर्यमाहात्म्यलावण्यप्रमुखैस्त्वमुदन्वतः ।

गुणैस्तुल्योसि मेवस्तु वपुषैवेदशेन ते ॥१७८॥

བདན་ དང་ ཆེ་བའི་ བདག་ཉིད་དང་ །
 ལུ་བ་རྒྱ་ སྐུ་ལྔ་ ཡོན་དན་གྱིས་ །
 ཁྱེད་དང་ རྒྱ་མཚོ་ མཚུངས་ བ་དད་ །
 ཁྱེད་ལུས་ འདི་འདྲ་ ཉིད་ ཀྱིས་སོ ༥ །

इत्येकव्यतिरेकोयं धर्मेणैकत्र वर्तिना ।
 प्रतीतिविषयप्राप्तेर्मेदस्योभयवर्त्तिनः ॥१७६॥

གཅིག་ལ་ གནས་པའི་ཆོས་ ཀྱིས་ནི །
 གཉི་ག་ལ་ གནས་ བ་དད་ དག །
 ཉོགས་པའི་ ལུལ་དུ་གྱུར་པའི་ ལྷིར་ །
 འདི་ནི་ གཅིག་གི་ རྫོག་པ་ཅན ༥ །

अभिज्ञवेलौ गम्भीरावम्बराशिर्मवानपि ।
 असावञ्जनसङ्काशस्त्वन्तु चामीकरच्छविः ॥१८०॥

རྒྱ་ཡི་ཡུང་ལོ་དག་ དང་ ཁྱེད་ །
 མཚམས་ ལས་ མི་འདྲ་ ཟབ་བ་སྟེ །

འདི་ནི་ མིག་སྒྲུབ་ དང་ མཚུངས་ལ །
 ཁྱིད་ནི་ གསེར་གྱི་ མདོག་ཅན་ནོ ༥ ༡༥

उभयव्यतिरेकोयमुभयोर्भेदकौ गुणौ ।
 काण्यं पिशंगता चोभौ यत्पृथग्दर्शिताविह ॥१८१॥

གང་གྱིར་ འདིར་ནི་ གཉི་ག་ཡི །
 འབྱེད་བྱེད་ ཡོན་ཏན་ རྒྱ་ལོ་ དང་ །
 སེར་ལོ་དག་ནི་ བ་དད་ བསྟན །
 འདི་ནི་ གཉི་གའི་ རྒྱུག་པ་ཅན ༥ ༡༦

त्वं समुद्रश्च दुर्बारी महासत्त्वमतेजसौ ।
 इयता युवयोर्भेदः स ज[23a]लात्मा पटुर्भवान् ॥१८२॥

ཁྱིད་དང་ རྒྱ་མཚོ་ ཏུ་སྒྲུ་རོ །
 མཁུ་སྒྲུ་ ཏེ་ཇོ་ བཅས །
 འདི་ཡིས་ ཁྱིད་ གཉིས་ བ་དད་དེ །
 དེ་ནི་ རྒྱ་བདག་ ཁྱིད་མཁས་སོ ༥ ༡༧

स एष श्लेषरूपत्वात् सश्लेष इति गृह्यतां ।
साक्षेपश्च सहेतुश्च दृश्यते तदपि द्वयं ॥१८३॥

འདི་ནི་ སྐར་བའི་ རྩལ་ལྡན་གྱིར།
སྐར་བ་ཅན་ ཞེས་ གཟུང་བར་མཛོད།
འགོག་བ་ཅན་ དང་ གཏན་ཚིགས་ཅན།
གཉིས་པོ་ དེ་ཡང་ བསྟན་བར་བྱ། ॥ १८३

स्थितिमानपि धीरोपि रत्नानामाकरोपि सन् ।
तव कक्षां न यात्येव मलिनो मकरालयः ॥१८४॥

ལུགས་དང་ལྡན་ ཞིང་ བདན་བ་ དང་།
རིན་ཆེན་འབྲུང་གནས་ ཡིན་ མོད་ ཀྱང་།
དེ་མ་ལྡན་བ་ རྩ་སྟོན་གནས།
ཁྱོད་ཀྱི་འབྲན་རྒྱར་འབྲར་མ་ཡིན། ॥ १८४

बह्वपि महीं कृत्स्नां सशैलद्वीपसागराम् ।
भर्तृमावाद्भजंगानां शेषस्त्वत्तो निरूप्यते ॥१८५॥

རི་སྒྲིང་གྲུ་མཚོར་ བཅས་པ་ཡི།
 ས་གཞི་ མཐའ་དག་ འཛིན་ མཛད་ཀྱང་།
 ལག་འགྲོ་རྣམས་ ཀྱི་ རྩེར་ གུར་ སྤྱིར།
 ལྷག་མ་ཅན་ནི་ ཁྱོད་པས་དམན། ॥ ༡༥

शब्दोपादानसादृश्यो व्यतिरेकोयमीदृशः ।
 प्रतीयमानसादृश्योप्यस्ति सोऽनुविधीयते ॥१८६॥

སྒྲ་དག་ འཇུག་པར་ མཚུངས་པ་ཡི།
 རྩོག་པ་ཅན་ནི་ འདི་འདྲ་ལྟེ།
 རྟོགས་པར་གུར་པ་ མཚུངས་པ་ ཡང་།
 ཡོད་པ་ དེ་ནི་ རྩེས་སུ་སྒྲུབ། ॥ ༡༨༦

त्वन्मुखकुमलं चेति द्वयोरप्यनयोमिदा ।
 कमलं जलसंरोहि त्वन्मुखं त्वदुपाश्रयं ॥१८७॥

ཁྱོད་ཀྱི་ གཤོང་དང་ པརྒྱ་ལྟེ།
 འདི་ གཉིས་ཀྱི་ ནི་ ཁྱད་པར་ ཡང་།

བསྐྱོ་མུ་ལས་ སྐྱིས་པ་ ནང་ །

ཁྱོད་ གཞོང་ ཁྱོད་ལ་ བརྟེན་པ་འོ ༥ ༡༥༡

अभ्रविलासमस्पृष्टमदरागम् मृगेक्षणं ।

इदन्तु नयनद्वंद्वं तव तद्गुणभूषितम् ॥१८८॥

རི་དྲགས་ མིག་ལ་ སྐྱིན་ སྐྱེག་ ནང་ །

སྐྱིས་པའི་དམར་བས་ རེག་པ་མེད །

ཁྱོད་ཀྱི་ མིག་ནི་ གཉིས་པ་ འདི །

ཡོན་ཏན་ དེ་དག་ ཉིད་ཀྱིས་ བརྟེན ༥ ༡༥༢

पूर्वस्मिन्भेदमात्रोक्तिरस्मिन्नाधिक्यदर्श[23b]नं ।

सादृश्यव्यतिरेकश्च पुनरन्यः प्रदर्श्यते ॥१८९॥

སྐྱ་མར་ དབྱེ་བ་ཅམ་ ཞིག་ བསྟན །

འདིར་ནི་ ལྷག་པ་ ཉིད་ བསྟན་ཏི །

སྐྱར་ཡང་ མཚུངས་པའི་ རྟོག་པ་ཅན །

གཞན་དག་ རབ་ཏུ་བསྟན་པར་བྱ ༥ ༡༥༣

त्वन्मुखमुण्डरोकञ्च फुल्ले सुरभिगन्धिनी ।

भ्रमद्भ्रमरमम्भोजं लोलदृष्टिं मुखन्तु ते ॥१६०॥

सिंदुः शिखरे चंदः चन्द्रः चन्द्रः ।

कुशः शिखरे चंदः चन्द्रः चन्द्रः ।

चन्द्रः चन्द्रः चन्द्रः चन्द्रः ।

सिंदुः शिखरे चंदः चन्द्रः चन्द्रः ॥ १०० ॥

चन्द्रोयमम्बरोत्तंसो हंसोयन्तोयभूषणं ।

नभो नक्षत्रमालीदमिदमुत्कुमुदम्पयः ॥१६१॥

चन्द्रः चन्द्रः चन्द्रः चन्द्रः ।

चन्द्रः चन्द्रः चन्द्रः चन्द्रः ।

चन्द्रः चन्द्रः चन्द्रः चन्द्रः ।

चन्द्रः चन्द्रः चन्द्रः चन्द्रः ॥ १०१ ॥

प्रतीयमानशैक्यादिसाम्ययोर्विद्यदम्भसोः ।

कृतः प्रतीतशुद्धयोश्च भेदोस्मिन्मन्त्रहंसयोः ॥१६२॥

འདིར་ནི་ རྒྱ་བ་ ངང་བ་ དག །
 དཀར་བ་ཉིད་ རོགས་ རྟོགས་བ་ དང་ །
 མཁའ་དང་ རྩ་ རི་དག་པར་ ཡང་ །
 རྟོགས་པར་ མཚུངས་པའི་ དབྱེ་བ་ གུས ॥ ༡༩

पूर्वत्र शब्दवत्साम्यमुभयत्रापि भेदकम् ।
 भृङ्गनेत्रादि तुल्यन्तत्सादृशव्यतिरेकता ॥१९३॥

རྒྱ་བ་ལ་ རི་ རྒྱ་ལྟ་ མཚུངས །
 གཉི་ག་ ལ་ ཡང་ ཐ་དད་ དབྱེ །
 གུང་བ་ རིག་ལ་ རོགས་པ་ མཚུངས །
 རི་ལྟར་ མཚུངས་པའི་ རྟོགས་པ་ཅན ॥ ༡༩༣

अरन्तालोकसंहार्यमघार्यं सूर्यरश्मिभिः ।
 दृष्टिरोधकरं यूनां यौवनप्रभवन्तमः ॥१९४॥

རིན་ཆེན་ རྒྱང་བས་མི་འཕྲོག་ ཅིང་ །
 ཉི་མའི་འོད་ཀྱིས་ མི་རྒྱུག་པ་ །

ལང་ཚོ་ ལས་ གུང་ ན་ རྒྱང་གི །
 མུན་པས་ ལྷ་བ་འགོག་པར་བྱེད ༥ ༡༩༥

सजातिव्यतिरेकोयन्तमोजातेरिदन्तमः ।
 दृष्टिरोधितया तुल्यं मिश्रमन्यैरदर्शयत् ॥१९५॥

མུན་པའི་རིགས་ལས་ མུན་པ་ འདི །
 ལྷ་བ་འགོག་པ་ ཉིད་ ཀྱིས་ སུའངས །
 གཞན་དག་གིས་ ཉི་ བ་དད་ བལྟན །
 འདི་ནི་ རིགས་མཐུན་ལྷ་ག་པ་ཅད ༥ ༡༩༦

प्रसिद्धहेतुव्यावृत्त्या यत्किञ्चित्कारणान्त[24a]रं ।
 यत्र स्वाभाविकत्वं वा विभाव्यं सा विभावना ॥१९६॥

རབ་དུ་གྲགས་པའི་ རྒྱ་བརྒྱུག་ནས །
 གང་ཞིག་ རྒྱ་ གཞན་ རྒྱང་ཟད་དམ །
 གང་དུ་ རང་གི་ རོ་བོ་ ཉིད །
 མུན་པ་ དེ་ནི་ སླིད་པ་ཅན ༥ ༡༩༧

अपीतक्षीवकादम्बमसंसृष्टामलाम्बरं ।

अप्रसादितसूक्ष्माम्बु जगदासीन्मनोहरम् ॥१९७॥

མ་འབྲུངས་ ཟུམ་པའི་ ༧་དཔྱེ།

མ་སྤྲེས་རྩི་མ་མེད་པའི་ མཁའ།

གྲུངས་པར་ མ་བྱས་ རྒྱངས་པའི་རུ།

འགྲོ་པའི་ ཡིད་ནི་ འཕྲོག་པར་བྱེད། ॥ ༡༩༧

अनञ्जितासिता दृष्टिर्भूतनावर्जिता नता ।

अरञ्जितारुणश्चायमधरस्तव सुन्दरि ॥१९८॥

སྒྲིན་མ་བསྐྱས་པར་ དཀར་མེན་ མེག།

མནན་པ་ མེད་པར་ སྒྲིན་མ་ དམའ།

ཆོན་ མ་བསྐྱས་པར་ དམར་པ་ ནི།

མཛེས་མ་ ཁྱིད་ཀྱི་ མཆུ་ འདི་འོ། ॥ ༡༩༨

यदपीतादिजन्यं स्यात् क्षीवत्वाद्यन्यहेतुकं ।

अहेतुकञ्च तस्येह विवक्षेत्यविरुद्धता ॥१९९॥

གང་ཕྱིར་ མ་འཕྲངས་ ལ་སོགས་ སྒྲིས
 སྒྲིས་པ་ཉིད་ སོགས་ ལྷ་གཞན་ཅན་ ।
 ལྷ་མེད་ དག་ཀྱང་ བཟོད་ འདོད་པ་ ।
 དེ་ལ་ འདིར་ནི་ འགལ་བ་མེད་ ॥ ༡༩༩

वक्तुं निसर्गसुरभि वपुरव्याजसुन्दरं ।
 अकारणरिपुध्वन्द्रो निर्निमित्तसुहृत्स्मरः ॥२००॥

རང་བཞིན་ གྲིས་ནི་ ཁ་ ཇི་ཞིས་ ।
 ཟླ་མེད་པར་ཡང་ ལྷས་པོ་ མཛོས་ ।
 ལྷ་མེད་ དག་ཏུ་ རྒྱ་བ་ དགྲ་ ।
 ལྷ་མཚན་མེད་པར་ འདོད་པ་ ལྷོགས་ ॥ ༢༠༠

निसर्गादिपदैरत्र हेतुः साक्षाभिवर्तितः ।
 उक्तञ्च सुरभित्वादिफलं तत्सा विभावना ॥२०१॥

རང་བཞིན་གྲི་སོགས་ ཆོག་གིས་ འདིར་ ।
 ལྷ་ནི་ དངོས་སུ་ རབ་བརྒྲོག་ ཅིང་ ।

རི་ཞིམ་ ཉིད་ སོགས་ འབྲས་བུ་ བཛོད་ །

དེ་ལྟེང་ དེ་ནི་ སྤྱིད་པ་ཅན་ ॥ ༤༠

वस्तु किञ्चिदभिप्रेत्य तत्तुल्यस्यान्यवस्तुनः ।

उक्तिसंक्षिप्तरूपत्वात् सा समासोक्तिरिष्यते ॥२०२॥

དངོས་པོ་ འགའ་ལ་ བསམས་བྱས་ནས་ །

དེ་དང་ མཚུངས་པའི་དངོས་པོ་གཞན་ །

བསྐྲུས་པའི་ཚུལ་གྱིས་ བཛོད་བྱེད་པ་ །

དེ་ནི་ བསྐྲུས་པ་ བཛོད་པར་ འདོད་ ॥ ༤༠

[24b]पिबन्मधु यथाकामं भ्रमरः फुल्लपङ्कजे ।

अप्यसन्नद्धसौरभ्यं पश्य चुम्बति कुङ्कुलं ॥२०३॥

བྱང་པ་ ཇི་ལྟར་འདོད་པ་བཞིན་ །

བདུ་ བྱས་ལ་ སྤྲང་ཅི་ འབྲངས་ །

རི་ཞིམ་ བྱས་པ་མ་ཡིན་ ཡང་ །

མེ་དྲོག་ཁ་མ་བྱེ་ སྤྲོར་ ཉེས་ ॥ ༤༡

ཚ་བདན་ འབྲས་བུའི་ ཁྲ་གྱིས་ བློ་
 སྒྲོལ་ནས་སྒྲོལ་ དཔལ་ལྷན་ སྒྲོལ་བར་བྱེད་
 གྱིབ་མ་ སྒྲོལ་བའི་ ལྷོན་བ་ཆེ་
 འདི་ནི་ བདག་གིས་ ཡང་དག་ ཐོབ་ ॥ ༥༩

अनल्पविटपाभोगः फलपुष्पसमृद्धिमान् ।
 सच्छायः स्थैर्यवान्दैवादिष लब्धो मया द्रुमः ॥२०७॥

ཡལ་གའི་ ཁྱོད་ནི་ མི་རུང་ཞང་
 མེ་དྲོག་ འབྲས་བུ་ ཕན་སྒྲུབ་རྒྱལ་ས་
 དམ་བའི་ གྱིབ་བསིལ་ བདན་ལྷན་བའི་
 ཤིང་འདི་ བདག་གིས་ སྒྲལ་བས་ རྒྱད་ ॥ ༥༩

उभयत्र पुमान्कश्चिद्भक्षत्वेनोपवर्णितः ।
 सर्वे साधारणा धर्माः पूर्वत्रान्यत्र तु द्वयं ॥२०८॥

གཉི་ག་ ལ་ ཡང་ སྒྲིས་བུ་འགའ་
 ལྷོན་བ་ཉིད་ ཀྱིས་ ཉེ་བར་བསྒྲུབས་

ཆོས་ནམས་ བསམ་ཅད་ སྤྲོས་ལ།

ཐུན་མེད་ གཞན་ལ་ རྣམ་པ་ གཉིས་ ॥ ༥༥

निवृत्तव्यालसंसर्गो निसर्गमधुराशयः ।

अयमम्भोनिधिः कष्टकुलेन परिशोष्यते ॥२०६॥

སྤྱལ་ངན་ འགྲོགས་པ་ དང་ བྲལ་ནིང་།

རང་བཞིན་གྱིས་ རྟེན་ མངར་བའི་གཞི།

ཀྲེ་ས་ ཏུ་ ཡི་ གཏེར་ འདི་ རྟེན་།

དུས་ཀྱིས་ ཡོངས་སུ་བསྐྱས་པར་འགྱུར་ ॥ ༥༦

इत्यपूर्वसमासोक्तिः[25a] पूर्वधर्मनिवर्त्तनात् ।

समुद्रे तत्समानस्य पुंसो व्यावृत्तिसूचने ॥२१०॥

ཀྲེ་ས་ཆོ་ ལ་ རྟེན་ དེ་ མཚུངས་པ།

སྐྱིས་བུའི་ རྩོག་པ་ གསལ་བྱེད་ཅིང་།

སྤྲོས་མའི་ཆོས་ རྟེན་ བསྐྱོག་པའི་ ཐྱིར་།

འདི་རྟེན་ ཐུན་མེད་ བསྐྱས་པར་ བརྟེན་ ॥ ༥༧

विषक्षा या विशेषस्य लोकसीमातिवर्त्तनी ।

असावतिशयोक्तिः स्यादलंकारोत्तमा यथा ॥२११॥

ཁྱད་པར་གྱི་ནི་བཟློན་འདོད་གང་།

འཇིག་རྟེན་མཚམས་ལས་གྲུ་གུར་པ།

ཐུལ་དུ་བྱང་བར་བཟློན་པ་འདི།

གྱུན་གྱི་དམ་པ་ཡིན་དེ་དཔེར་॥ २११

मल्लिकामालभारिण्यः सर्वार्ङ्गीनार्द्रचन्दनाः ।

क्षोमवत्यो न लक्ष्यन्ते ज्योत्स्नायामभिसारिकाः ॥२१२॥

མཁྲི་ཀུ་ཡི་ཐེང་ཚོགས་ཅན།

ལུས་ཀྱན་ཁུབ་བའི་ཙྭ་རྟེན་གཤེར།

དཀར་བའི་གོས་ཅན་མངོན་འགྲོ་མ།

ཟླ་བའི་འདོད་ལ་མཚོན་མ་ཡིན་॥ २१२

चन्द्रातपस्य बाहुल्यमुत्तमुत्कर्षवत्तथा ।

संशयातिशयादीनां व्यक्त्य किञ्चिद्विश्यते ॥२१३॥

རྒྱ་བའི་ འདྲ་ནི་ ལྷག་པ་ ཉིད།
 བྱང་འཕགས་ལྷན་ བཟོད་ དེ་བཞིན་དུ།
 བེ་ཚོས་ སུལ་བྱུང་ ལ་སོགས་ ཀྱང་།
 གསལ་ སྤྱིར་ ཟུང་ཟད་ བལྟན་པར་བྱ། ॥ ४२३

स्तनयोर्जघनस्यापि मध्ये मर्ध्यं प्रिये तव ।
 अस्ति नास्तीति संदेहो न मेद्यापि निवर्त्तते ॥२१४॥

དགའ་མ་ བྱོད་ཀྱི་ རྩ་མ་ དང་།
 དཔྱི་ཡི་ བར་ན་ སྒྲིབ་པ་ ནི།
 ཡོད་ དང་ མེད་ ཅེས་ བདག་གི་ ནི།
 བེ་ཚོས་ ད་དུང་ རྒྱག་མ་བྱུང་ ॥ ४२ॣ

निर्णेतुं मध्यमस्तीति शक्यन्तव नितम्बिनि ।
 अन्यथानुपपत्त्यैव पयोधरभरणितेः ॥२१५॥

ནི་དཔྱི་ནི་ བྱོད་ ལ་ ནི།
 སྒྲིབ་པ་ ཡོད་ ཅེས་ ཇེས་པར་ནས་

འོ་མ་འཛིན་པའི་བྱུང་བ་གནས་པ།
 རྣམ་པ་གཞན་དུ་སྤྱིང་མ་ཡིན། ॥ ११४

अहो विशालम्भूपालभुवनत्रितयोद्वरं ।
 माति मानुमशक्योपि यशोराशिर्यदत्र ते ॥२१६॥

ཁྱོད་ཀྱི་གྲགས་པའི་སྤང་བོ་ནི།
 དབག་ནས་མིན་ཡང་འདིར་གོང་བ།
 ས་སྤྱོང་སྤྱིང་བ་གསུམ་གྱི་ནི།
 ཁོངས་དག་ཅེ་མ་གྱིན་དུ་ཡངས། ॥ ११५

अलंकारान्तराणा[25b]मप्याहुरेकं परायणं ।
 वागीशमहितामुक्तिमिमामतिशयाह्वयाम् ॥२१७॥

ངག་གི་དབང་བོས་སེམས་བྱུང་བ།
 ལྷལ་བྱང་ཞེས་བྱ་བའི་དེ་འདི།
 རྒྱན་ནི་གཞན་པ་རྣམས་ཀྱི་ཡང་།
 གཅིག་ལྷུ་དཔྱང་གཉེན་ཉིད་ད་བའི་དེ། ॥ ११६

अन्यथैव स्थिता वृत्तिश्चेतनस्येतरस्य वा ।

अन्यथोत्प्रेक्ष्यते यत्र तामुत्प्रेक्षां विदुर्यथा ॥२१८॥

सोमसः॒भूयः॑ द॒वा॒वासः॑ उ॒वा॒चः॑ गृ॒ह ।

क॒सः॑ च॒ वा॒चः॑ दू॒ वा॒चः॑ च॒रि॒तु॒म् ।

वा॒चः॑ दू॒ क॒सः॑ वा॒चः॑ च॒रि॒तु॒म् ।

दे॒वि॒ च॒रि॒तु॒म् दे॒वा॒ च॒रि॒तु॒म् ॥ ११८

मध्यन्दिनार्कसन्तप्तः सरसीं गाहते गजः ।

मन्ये मार्तण्डगृहाणि पमान्युद्धर्तुमुत्सुकः ॥२१९॥

शै॒वः॑ वा॒चः॑ शै॒वः॑ वा॒चः॑ वा॒चः॑ च॒रि॒तु॒म् ।

वा॒चः॑ च॒रि॒तु॒म् वा॒चः॑ च॒रि॒तु॒म् वा॒चः॑ च॒रि॒तु॒म् ।

शै॒वः॑ वा॒चः॑ वा॒चः॑ वा॒चः॑ वा॒चः॑ च॒रि॒तु॒म् ।

वा॒चः॑ च॒रि॒तु॒म् वा॒चः॑ च॒रि॒तु॒म् वा॒चः॑ च॒रि॒तु॒म् ॥ ११९

ज्ञातुं पातुं विसान्यतुं करिणो जलगाहनम् ।

तद्वैरनिष्क्रयायेति कविनोत्प्रेक्ष्य वर्ण्यते ॥२२०॥

ཁྲམ་ནང་ བདུང་དང་ བད་ཚུ་ དག །

བཟུ་ སྤྱིར་ ལག་ལྷན་ ལུར་འཇུག་པ །

དེ་ནི་ ཁོན་ལན་ ལྷན་ སྤྱིར་ཞེས །

སྒྲན་ངག་སྐུན་ སྤྱིས་ རབ་བདགས་ བཛྲོད ༥ ४५

कर्णस्य भूषणमिदं मदायतिनिगोधिनः ।

इति कर्णोत्पलं प्रायस्नव दृष्ट्या विलङ्घ्यते ॥२२१॥

འདྲི་ནི་ བདག་གི་རིང་བ་དག །

འགོག་བྱེད་ རྒྱ་བའི་ལྷན་ ཞེས་ ཏི །

ཁྱོད་ཀྱི་ མིག་གིས་ རྒྱ་བ་ཡི །

ཡུལ་ དག་ལ་ འགོངས་པ་ འདྲ ༥ ४६

अपाङ्गमागपातिन्या दृष्टेरंशुमिरुत्पलं ।

रूपप्रयते वा नचैवन्त कविनोत्प्रेक्ष्य कथ्यते ॥२२२॥

ཁྲུར་ ལུར་ བྱི་ ལྷང་གྱར་པ །

མིག་གི་འོད་ཀྱིས་ ཡུལ་ལ །

རེག་གས་ མིན་ ཡུང་ ལྷན་ངག་མཁན ། ༤
 ཉི་ལྷར་ རབ་དྲ་བདགས་དྲི་ བཛྲོད ། ༥

लिम्पतीव तमोङ्गानि वषंतीवांजनं नभः ।
 इतीदमपि भूयिष्ठमुत्प्रेक्षालक्षणां न्वितं ॥२२३॥

མན་བ་ ལྷས་ ལ་ འབྲུག་བ་ བཞིན །
 མཁན་ནི་ སིག་སྒྲན་ ཆར་འབབས་ བཞིན །
 ཞེས་འདི་ ཡང་ རོ་ རབ་རྟོག་གི །
 མཚན་ཉིད་ལྷན་བ་ ཤིན་དུ་ མང་ ། ༥

केषांचिदुपमाभ्रान्ति[26a]रिवश्रुत्येह जन्यते ।
 नोपमानं तिङन्तेनेत्यतिव्रम्यासमाश्रितं ॥२२४॥

འདིར་ནི་ བཞིན་གྱི་སྒྲ་ཡིས་ འགའ །
 ཉིང་ ཡི་ མཐའ་ ཡིས་ དཔེ་ མ་ ཡིན །
 ཞེས་བ་ ཡིད་ཆེས་ གསུངས་ འདས་ནས །
 དཔེ་ཉིད་དུ་ མི་ འབྲུལ་བ་ སྦྱི ། ༥

उपमानोपमेयत्वं तुल्यधर्मव्यपेक्षया ।

लिम्पतेस्तमसश्चासौ धर्मः को नु समीक्ष्यते ॥२२५॥

दघे दद दघेदु'श्रिद दघ'रि ।

मकुदस'ददि'कैस' द' कुँस'दस' न ।

दुगुग'द' दद' रि' मरु'द' द ।

कैस' ददि' मदि'द'द'गुद' दस' उ ॥ २२५

यदि लेपनमेवेष्टं लिम्पतिर्नाम कोपरः ।

स एव धर्मो धर्मो चेत्यनुन्मत्तो न भाषते ॥२२६॥

गद'रि' दुगुग'द'श्रिद' ददि'न ।

दुगुग' उेस'गु'द' गद'न' उ ।

दि'श्रिद' कैस' दद' कैस'उर' दद' ।

लेस'द' म'कुँस' दकद' म' दि'न ॥ २२६

कर्त्ता यद्युपमानं स्यान्न्यभूतोसौ क्रियापदे ।

स्वक्रियासाधनव्यग्रे नालमन्यद्वयपेक्षितुं ॥२२७॥

གལ་ཏེ་ བྱེད་པ་ དཔེ་ ཡིན་ ན །
 བྱ་ཚིག་ ལ་ འདི་ དབང་བྲལ་ འགྱུར་ །
 རང་གི་ བྱ་ སྒྲུབ་ མི་ནུས་པ་ །
 གཞན་གྱི་ ལྷོས་བྱར་ མི་འགྱུར་རོ ༥ ༢༢༥

यो लिम्पत्यमुना तुल्यं तम इत्यपि शंसतः ।
 अङ्गानीति न सम्बद्धं सोपि मृग्यः समो गुणः ॥२२८॥

གང་གིས་ འབྱུག་པ་ འདི་ དང་ ནི །
 བྱ་ན་པ་ མཚུངས་ ཞེས་ སྒྲུབ་ ན་ ཡང་ །
 ལུས་ལ་ ཞེས་པ་ མ་འབྲེལ་ ཏེ །
 དེ་ ཡང་ ཡོན་ཏན་ མཚུངས་པ་ བཅུ ༥ ༢༢༦

यथेन्द्रुरिव ते वक्त्रमिति कान्तिः प्रतीयते ।
 न तथा लिम्पतौ लेपादन्यदत्र प्रतीयते ॥२२९॥

དཔེར་ན་ ཁྱེད་ གདོང་ རྒྱ་པ་ བཞིན་ །
 ཅེས་པས་ མཛོས་པ་ རྟོགས་འགྱུར་ ཏེ །

དེ་བཞིན་ འབྲུག་པ་ འདི་ ལ་ ནི །

འབྲུག་པ་ ལས་ གཞན་ རྟོགས་ ས་ཡིན ། ॥ ४३०

तदुपश्लेषणार्थीयं लिम्पतिर्द्धान्तिकर्तृकः ।

अङ्गकर्मा च पुंसैवमुत्प्रेक्षित इतीष्यते ॥२३०॥

དེ་ཤིར་ འབྲུག་པ་ འདི་ ནང་ ནི །

སྟན་པ་ བྱེད་པ་ ལུས་ ཀྱང་ ལས །

ཉི་བར་སྦྲར་དོན་ སྟེས་བྱ་ ཡིས །

དེ་ལྟར་ རབ་བརྟགས་ ཞེས་ འདོད་བྱ ། ॥ ४३०

मन्ये श[26b]ङ्के ध्रुवं प्रायो नूनमित्येवमादिभिः ।

उत्प्रेक्षा व्यज्यते शब्दैरिवशब्दोपि तादृशः ॥२३१॥

སྟེས་ ནང་ རྟོགས་ ནང་ ཇེས་ ནང་ འདྲ །

མིན་ནས་ ཞེས་པ་ ལ་སྟོགས་པའི །

སྟེ ཡིས་ རབ་བརྟགས་ གསལ་བར་བྱེད །

བཞིན་ གྱི་ སྟེ ཡང་ དེ་དང་འདྲ ། ॥ ४३१

हेतुश्च सूक्ष्मलेशौ च वाचामुत्तमभूषणं ।

कारकज्ञापकौ हेतू तौ च नैकविधौ यथा ॥२३२॥

कुं दं घृत्तं कं दणं रे ।

कैणं कृत्तं दणं गीं कुं गीं ककैणं ।

कुं रे सुदं घं गेणं सुदं रे ।

रेदणं कृत्तं दं दुं दं दवेर ॥ २३२ ॥

अयमान्दोलितप्रौढचन्दनद्रुमपल्लवः ।

उत्पादयति सर्वस्य प्रीतिं मलयमारुतः ॥२३३॥

संलंलं लं कृत्तं गीत्तं रे ।

रुं लुं दं गत्तं दं लं ।

लंलंलंलं लुं दं दं सुदं दं लं ।

गुं गीं दणंलंलं लुं दं दं सुदं ॥ २३३ ॥

प्रीत्युत्पादनयोगस्य रूपस्यात्रोपबृंहणं ।

अलंकारतयोद्घष्टं निवृत्तावपि तत्समं ॥२३४॥

དགའ་བ་ སྐྱེད་པར་ འོས་བ་ ཡི །
 རང་བཞིན་ ཉེ་བར་སྦྱར་བ་ འདི །
 གྱུན་ ཉིད་ ཀྱིས་ རི་ རབ་བཅསྟན་ཏེ །
 རྫོག་པ་ དག་ ཀྱང་ དེ་དང་མཚུངས ། ॥ २३

चन्दनारण्यमाधूय स्पृष्ट्वा मलयनिर्झरान् ।
 पथिकानामभाषाय पवनोयमुपस्थितः ॥२३५॥

མ་ལ་ཡ་ ཡི་ ཚུ་གྱུན་ ལ །
 དག་ ཅིང་ ཚུན་ བགས་ བསྐྱེད་ནས །
 རྒྱང་ འདི་ འགྲོན་པོ་ བསམས་ དག་ རི །
 ཉམས་པར་བྱ་སྤྱིར་ ཉེ་བར་གནས ། ॥ २३५

अभावसाधनायालमेवम्भूतो हि मारुतः ।
 विरहज्वरसंभूतमनोऽकारोचके जने ॥२३६॥

དེ་ལྟར་ བྱང་བའི་ རྒྱང་ གིས་ རི །
 འབྲེལ་བའི་ རིསས་ ལས་ བྱང་བྱར་བ །

སྒྲིབ་ ཡིད་འོང་ ལ་ སྒྲིབ་ བ །

ཉམས་པ་ སྒྲིབ་པ་བྱེད་པར་ནུས ༥ ४३५

निर्वर्त्ये च विकाय च हेतुत्वन्तदपेक्षया ।

प्राप्ये तु कर्मणि प्रायः क्रियापेक्षैव हेतुता ॥२३७॥

འགྲུབ་པར་བྱ་ དང་ རྣམ་འགྲུར་ ལ །

རེ་ཉིད་ ལ་ ལྟོས་ གྱུ་ཉིད་དེ །

འཁོབ་པའི་ ལས་ ལ་ པལ་ཆེར་ ཞི །

བྱ་བ་ ལ་ ལྟོས་ གྱུ་ཉིད་དོ ॥ ४३७

हेतुनिर्वर्तनीयस्य दर्शितः शेषयोर्द्वयोः ।

वत्सो[27a]दाहरणद्वन्द्वं ह्यापको वर्णयिष्यते ॥२३८॥

འགྲུབ་པར་བྱེད་པའི་ གྱུ་ དག་ ཞི །

བསྐྱེད་ ལྷག་ས་ གཉིས་པོ་ ཡེ །

དཔེར་ བཟོད་ གཉིས་ ཞི་ བཞེད་བྱས་ནས །

ཤེས་པར་བྱེད་པ་ བསྐྱེད་པར་བྱ ༥ ४३८

उत्प्रबालान्यरण्यानि वाप्यः संकुलपङ्कजाः ।

चन्द्रः पूर्णश्च कामेन पान्थदृष्टिविषङ्कृतं ॥२३६॥

ལོ་འདབ་ གསར་འབྲུངས་ བླ་ས་ཚལ་ ནང་

འདབ་བརྒྱ་ རབ་དུ་རྒྱས་བའི་ རྫོང་ །

ཟླ་བ་ རྒྱས་བ་ འདོད་བ་ ཡིས །

འགྲོན་པོ་ ལྷ་བའི་ དུག་ད་ བྱས ॥ २३७

मानयोग्यां करोमीति प्रियस्थाने कृतां सखीम् ।

बाला भ्रूभङ्गजिह्वाक्षी पश्यति स्फुरिताधरं ॥२४०॥

ཁངས་བ་ གོསས་བར་བྱའོ་ ཞེས །

གྲོགས་མོ་ མཇའ་བོའི་ གནས་བཞེད་ལ །

བུ་མོ་ སློན་འབྲོག་ མིག་ཡོན་ བྱིས །

མཆུ་ བོ་ གཡོ་ ཞིང་ ལྷ་བར་བྱེད ॥ २३८

गतोत्तमर्को भातीन्दुर्यान्ति वासाय पक्षिणः ।

इतीदमपि साध्वेव कालाघस्थानिवेदने ॥२४१॥

ཉི་མ་ རྒྱུ་གྱུར་ ལྷ་བ་ མཛེས་ །
 འདབ་ཆགས་ རྣམས་ ཉི་ གནས་སུ་ མོང་ །
 ཞེས་པ་ འདི་ ཡང་ ཏུས་ གྱི་ སྐབས་ །
 གོ་བར་བྱེད་པ་ ལེགས་པ་ ཉིད་ ॥ ༢༩

*अबभ्यैरिन्दुपादानामसाध्यैश्चन्दनाभिसाम् ।

देहोष्मभिः सुबोधं ते सखि कामातुरं मनः ॥२४२॥

གོ་གས་མོ་ འདོད་པས་ གཟིར་བའི་ ཡིད་ །
 ལྷ་བའི་ ཟེར་ གྱིས་ མི་ལྷོག་ ཅིང་ །
 ཅ་རྒྱན་ ལུ་ ཡིས་ མི་བཟོད་པ་ །
 ལུས་ གྱི་ རྟོད་ གྱིས་ ལེགས་པར་རྟོགས་ ॥ ༢༩

इति लक्ष्याः प्रयोगेषु रम्या ज्ञापकहेतवः ।

अभावहेतवः केचिद्व्याक्रियन्ते मनोहराः ॥२४३॥

ཞེས་པའི་ སྦྱོར་བ་ རྣམས་ ལ་ ཉི་ །
 ཡིད་འོང་ ལེས་བྱེད་ ལུ་ ཏག་ མཚོན་ །

དངོས་མེད་ ལྷ་ ཉི་ ཡིད་ འཕྲོག་པ།
 འགའ་ཞིག་ རབ་དྲུ་བསྟན་པར་བྱ། ॥ ༢༧༢

अनभ्यासेन विद्यानामसंसर्गेण धीमतां ।
 अनिग्रहेण चाक्षाणां जाय[27b]ति व्यसनं नृणां ॥२४४॥

རིག་པ་ རྣམས་ ཉི་ མ་གཤམས་ དང་།
 གློ་ལྡན་ རྣམས་ དང་ མ་འགྲོགས་ དང་།
 དབང་པོ་ རྣམས་ ཉི་ མ་བསྐྱམས་པས།
 མི་ རྣམས་ རབ་དྲུ་གཏུང་པར་ བྱུར། ॥ ༢༧༣

गतः कामकथोन्मादो गलितो यौवनज्वरः ।
 क्षतो मोहश्च्युता तृष्णा कृतं पुण्याश्रये मनः ॥२४५॥

དྲ་བའི་ གདམ་ བྱིས་ ལྷོས་པ་ མོང་།
 ལང་ཚོ་ཡི་ ཉི་ རིམས་ དག་ རྣམས་།
 རློངས་པ་ ཟད་ ཅིང་ སྤེད་པ་ འཕོས།
 བསོད་ནམས་གནས་ ལ་ ཡིད་ དག་ བྱས། ॥ ༢༧༤

वनान्यमूनि न गृहाण्येता नद्यो न योषितः ।

मृगा इमे न दायादास्तन्मे नन्दति मानसं ॥२४६॥

ནགས་ཚལ་ འདི་དག་ ཁྱིམ་ མ་ཡིན།

ཅུ་གྲང་ འདི་དག་ བྱད་མེད་ མིན།

རི་དྲགས་ འདི་དག་ བྱ་ཚ་ མིན།

དེ་ཕྱིར་ བདག་ གི་ ཡིད་དགའ་འོ ॥ २८६

अत्यन्तमसदार्याणामनालोचितचेष्टितं ।

अतस्तेषां विवर्धन्ते सततं सर्वसंपदः ॥२४७॥

ལྷན་དུ་ མ་བདགས་ སྤྱོད་པ་ རི།

འདགས་པ་ རྣམས་ ལ་ ཡོད་ མ་ཡིན།

དེ་ཕྱིར་ དེ་དག་ རྣམས་ གྱི་ རི།

སྤུང་ཚེགས་ གྲམས་ཅད་ ནྤག་དུ་ འཕེལ་ ॥ २८७

उद्यानसहकाराणामनुद्भिन्ना न मञ्जरी ।

देयः पथिकनारीणां सतिलः सलिलाञ्जलिः ॥२४८॥

སྒྲིང་ཚལ་ ས་ཏ་ཀྲ་ར་ རྣམས་ །
 སྒྲིང་མ་ མ་འབྲུངས་པ་ མིན་ ན་ །
 འགྲོན་པ་ རྣམས་ ཀྱི་ བྱད་མེད་ རི་ །
 དེལ་བཅས་ཁྱོར་ཚུ་ སྒྲིན་བྱར་འགྱུར་ ॥ ༢༧

प्रागभावादिरूपस्य हेतुत्वमिह वस्तुनः ।
 भावामावस्वरूपस्य कार्यस्योत्पादनमिति ॥२४६॥

ཡོད་ དང་ མེད་པའི་ རང་བཞིན་ ཀྱི་ །
 འབྲས་བྱ་ སྒྲིང་པ་ དག་ ལ་ འདིར་ །
 སྒྲིན་མེད་ ལ་སོགས་ རང་བཞིན་ ཀྱི་ །
 དངོས་པོ་ ཡི་ རི་ ཀྱི་ ཉིད་དོ ॥ ༢༨

दूरकार्यस्तत्सहजः कार्यान्तरजस्तथा ।
 अयुक्तयुक्तकारी चेत्यसंख्याभिन्नहेतवः ॥२५०॥

རིང་འབྲས་ དེ་དང་ལྷན་ཅིག་སྒྲིས་ །
 དེ་བཞིན་ འབྲས་ མ་ཐག་ སྒྲིས་དང་ །

རིགས་ མིན་ རིགས་པ་བྱེད་ ཅེས་པ།
 མཚར་བའི་ གྲུ་ རྣམས་ གངས་མེད་དོ། ॥ ༢༥༠

तेमी प्रयोगमार्गेषु गौण[28a]वृत्तिव्यपाश्रयाः ।
 अत्यन्तसुन्दरा दृष्टास्तदुदाहृतयो यथा ॥२५१॥

འདྲ་ དག་ སྟོར་བའི་ ལམ་ རྣམས་ ལ།
 བལ་བའི་ འཇུག་པ་ ལ་ བརྟེན་པ།
 ལྷན་དུ་ མཛེས་པ་ དག་ མཐོང་སྟེ།
 དེ་ཡི་ དཔེར་བརྗོད་ ཇི་ལྟར་ན། ॥ ༢༥༡

त्वदपाङ्गाङ्ग्यं जैत्रमङ्गजात्वं यदंगने ।
 मुक्तन्तदन्यतस्तेन सोप्यहं मनसि क्षतः ॥२५२॥

ལྷས་ཅན་ བྱིད་ མིག་རྒྱར་ ཅས་པ།
 གྲུལ་བྱེད་ ལྷས་སྟེས་ དག་ ལྷ་ མཚོན།
 གང་ དེ་ གཞན་ ལ་ རབ་འཕངས་པ།
 དེ་ ཡིས་ བདག་ ལྷ་ ཡིད་ཀྱང་ བཅོམ། ॥ ༢༥༢

आबिर्भवति नारीणां वयः पर्यस्तशैशवं ।
सहैव विविधैः पुंसामङ्गजोन्मादविभ्रमैः ॥२५३॥

श्लेस'सु' लुस'श्लेस' गृस' कुँस'पदि ।
कस'दसुल' सु'कॅणस' कुँर'उण' छिद ।
सुद'खेद' कसस' ल' सु'ख' के ।
यॅदस'सु'कव'पदि' क'कॅद' श्लेस ॥ २५३

पञ्चात्पर्यस्य किरणानुदीर्णञ्चन्द्रमण्डलं ।
प्रागेव हरिणाक्षीणामुदीर्णो रागसागरः ॥२५४॥

सुद'छिद' र'दुणस' खिण'उण' सु ।
कणस'पदि' सु'ख'कॅ' सु'स'पद'गुद ।
सुँस'कस' यॅद'खेद' रव'दसुँस'पस ।
सु'व' यॅ' के' दगुँल'दखेद' यद ॥ २५४

राज्ञां हस्तारविन्दानि कुण्डलीकुण्डले कुतः ।
दैव त्वच्चरणद्वन्द्वरागबालातपः स्पृशन् ॥२५५॥

ལྷ་ཅིག་ བྱིད་ཀྱི་ ཞབས་ གཉིས་པོ་ ।
 དམར་བ་ ཉི་ གཞོན་ ལ་ རེག་པས་ ।
 རྒྱལ་པོ་ རྣམས་ ཀྱི་ ལག་པ་ ཡི་ ।
 པདྨ་ རྒྱལ་པར་བྱེད་པ་ ཅི ॥ ༢༡༣

पाणिपद्मानि भूपानं संकोचयितुमोशते ।
 त्वत्पादनखचन्द्राणामर्चिषः कुन्दनिर्मलाः ॥२५६॥

བྱིད་ ཀྱི་ ཞབས་ སེན་ལྷ་པ་ ཡི་ ।
 འོད་ཟེར་ ཀྱུན་ད་ སྒྲི་མེད་ རྣམས་ ।
 ས་སྦྱོང་རྣམས་ཀྱི་ ལག་པ་ ཡི་ ।
 པདྨ་ རྒྱལ་པར་བྱེད་ ལ་ དབང་ ॥ ༢༡༤

इति हेतुविकल्पस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।
 इक्षिताकारलक्ष्योर्थः सौक्ष्म्यात्सूक्ष्म इति स्मृतः ॥२५७॥

ཞེས་པ་ རྒྱ་ ཡི་ རྣམ་ཏོག་ གི་ ।
 ལྷགས་ བློ་ འདི་འདྲ་ དག་ད་ བསྟན་ ।

ཟུར་དང་ རྣམ་པས་ མཚན་པའི་ དོན།

ཕྱ་ཕྱིར་ ཕྱ་མོ་ ཞེས་པར་ བཤད ༥ ༢༧

कदा नौ[28b]सङ्गमो भावीत्याकीर्णे वक्तुमक्षमः ।

अवेत्य कान्तमबला लीलापद्मं न्यमीलयत् ॥२५८॥

ནམ་ ཞིག་ འུ་ཅག་ འགྲོགས་འགུར་ ཞེས།

ཚོགས་སུ་ བཟོད་པ་ མ་བཟོད་པའི།

མཇའ་བོ་ རིག་ནས་ བྱད་མེད་ ཀྱིས།

ཅེ་ དགའི་ པདྨ་ ཟུམ་པར་བྱས ༥ ༢༨

पद्मसंमीलनादत्र सूचितो निशि सङ्गमः ।

आश्वासयितुमिच्छन्त्या प्रियमंगजपीडितम् ॥२५९॥

ལུས་སྦྲིས་ དག་ གིས་ གཟིར་པ་ ཡི།

མཇའ་བོ་ དབྱགས་ དབྱང་ འདོད་པ་ ཡིས།

པདྨ་ ཟུམ་པར་བྱས་པ་ ལས།

འདྲིར་ ཅི་ མཚན་མོ་ འགྲོགས་པར་ བསྟན ༥ ༢༩

त्वदर्पितद्रुशस्तस्या गीतगोष्ठ्यामवर्धत ।

उद्दामरागतरला च्छाया कापि मुखाम्बुजे ॥२६०॥

ཐྲུ་ ཡི་ མདུན་ སྐར་ ཁྱིད་ ལ་ མིག་ །

གཏད་པས་ གདོང་གི་ རྒྱུ་ རྩེས་ དེར་ །

རྒྱས་པ་ འབར་ཞིང་ རྒྱས་པ་ཡི་ །

མཛོས་པ་ ཅི་ཡང་ བྱང་བར་གྱར་ ॥ २६०

इत्यनुद्भिन्नरूपत्वादित्युत्सवमनोरथः ।

अनुलङ्घ्यैव सूक्ष्मत्वमभूदत्राप्यवस्थितः ॥२६१॥

འདིར་ ཡང་ རང་བཞིན་ མ་ བཛོད་པར་ །

དགའ་བའི་ དགའ་སྟོན་ འདོད་པ་ དག་ །

ངེས་པར་གནས་པ་ཉིད་གྱར་པ་ །

སྤྱ་མོ་ ཉིད་ ལས་ བྲལ་ མ་ཡིན་ ॥ २६१

लेशो लेशेन निर्भिन्नवस्तरूपनिगूहनं ।

उदाहरण एवास्य रूपमाधिर्मविष्यति ॥२६२॥

ཆ་ནི་ཆ་ ཡིས་ དངོས་པོ་ ཡི །
 རང་བཞིན་ ཇེས་བར་གསལ་བ་སྒྲིབ །
 དཔེར་བརྗོད་ཉིད་ ཀྱིས་ འདྲི་ ཡི་ ནི །
 རང་བཞིན་ ཇེས་བར་གསལ་བར་བྱ ། ॥ १५५

राजकन्यानुरक्तं मां रोमोद्धेदेन रक्षकाः ।
 अवगच्छेयुरा ज्ञातमहो शीतानिलं वनम् ॥२६३॥

ཀྱལ་པོ་འདི་ བྱ་མོ་ ལ་ ཆགས་ བདག །
 སྐྱུ་ལེང་ ཀྱས་པ་ སྐྱུང་པ་པོས །
 རིག་པར་གྱུར་ལ་ ཀྱེ་མ་ ཚལ །
 བསིལ་བའི་སྐྱུང་ལྗན་ ཡིན་པར་ ཤེས ། ॥ १५३

आनन्दाश्रु प्रवृत्तं मे कथं हृष्टैव कन्यकाम् ।
 अक्षि [29a] मे पुष्परजसा वातोद्धूतेन दूषितं ॥२६॥

ཅི་ལྟར་ བྱ་མོ་ མཐོང་ ཉིད་ ན །
 བདག་ ལ་ དགའ་བའི་ མཆི་ མ་བྱུང་ །

རྒྱུང་གིས་གཙུག་པའི་མེ་དོག་གི།
 རྒྱལ་གྱིས་བདག་མིག་སྤྲོ་ཕྱང་ངོ་ ॥ १७८

इत्येवमादौ स्थानेऽयमलंकारोतिशोभते ।
 लेशमेकेन्द्रिदुष्प्रियां स्तुतिं वा लेशतः कृतां ॥ २६५ ॥

ཞེས་པ་ལ་སོགས་སྐབས་སུ་ནི།
 གྱུ་ལྟེ་གིན་དུ་མཛོས་པ་ཡིན།
 ཁ་ཅེག་ཆ་ལས་སྐད་པ་ལས།
 བཟློད་པ་བྱས་པ་ཆ་ཞེས་བཟློད་ ॥ १७९

युर्वेव गुणवान् राजा योग्यस्ते पतिरुज्जितः ।
 रणोत्सवे मनः सक्तं यस्य कामोत्सवादपि ॥ २६६ ॥

གང་ཡིད་གཡུལ་གྱི་དགའ་སྟོན་ལ།
 འདོད་པའི་དགའ་སྟོན་པས་ཀྱང་ཆགས།
 གཟི་ལྷན་ལང་རྩོ་ཡོན་དཔ་ཅན།
 གྱལ་ལྟེ་ཁྱོད་ཀྱི་བདག་པོར་འོས་ ॥ १८०

वीर्योत्कर्षस्तुतिर्निन्दैवास्मिन् भावनिवृत्तये ।

क-न्थायाः कल्पते भोगान्निर्विविक्षोर्निरन्तरान् ॥

བཙུན་འགྲུས་ ཁུད་འཕགས་ བསྟོད་པ་ འདྲར་ ।

སྒྲིབ་པ་ ཉིད་དེ་ ལོངས་སྟོད་ལ་ ।

སྟུན་ཏུ་ སྟོད་འདྲོད་ བུ་མོ་ཡི་ ।

བསམ་པ་ དག་ནི་ བསྐྱོག་པར་ནུས་ ॥ १९०

चपलो निन्द्यश्चासौ जनः किन्तेन मे सखि ।

आगःप्रमार्जनायैव चाटवो येन शिक्षिताः ॥ २६८

གཞོན་པ་ རབ་ བཞིལ་ ཉིད་ ཀྱི་ སྟུར་ ।

གང་གིས་ སྟུན་པར་ སྒྲིབ་ བསྐྱབས་ ।

སྟེ་བོ་ འདྲོ་ནི་ བཙུ་མེད་ བཞིལ་ ।

གྲོགས་མོ་ དེ་ཡིས་ བདག་ལ་ ཅི་ ॥ १९१

दोषाभासो गुणः कोपि दर्शितश्चादुकारिता ।

मानं सखीजनोद्दिष्टं कर्तुं रागादशक्त्या ॥ २६९

སྒྲེ་བོ་ བོ་གས་མོས་ རབ་བཟུན་ ཁེངས། །
 ཆགས་ སྒྲིང་ སྒྲེད་པ་ མ་ནས་ནས། །
 སྒྲོན་ ལྷར་ སྒྲུང་ཡང་ ཡོན་དྲན་ གང་། །
 སྒྲན་པར་ སྒྲེ་བ་ ཉིད་ གྲང་ བཟུན། ॥ २७०

उद्दिष्टानां पदार्थानामनुदेशो यथाक्रमं ।
 यथासंख्यमिति प्रोक्तं संख्यानङ्कम् इत्यपि ॥ २७०

དངོས་པོ་ རབ་དུ་བཟུན་པ་ རྣམས། །
 རིས་པ་ བཞིན་དུ་ རྩེས་སྒྲོན་པ། །
 གྲངས་ ཏང་ རིས་པ་ བཞིན་ ཅེས་པ། །
 གྲངས་ བཞིན་ ཅེས་པར་ རབ་དུ་བཟུང་། ॥ २७०

[29b] भ्रूवन्ते चोरिता तन्वि स्मितेक्षणमुखद्युतिः ।
 क्षातुमग्मःप्रविष्टायाः कुमुदोत्पलपङ्कजैः ॥ २७१ ॥

བྲུས་ལ་ ལུར་ནི་ རབ་བྱགས་མ། །
 བྲིད་ཀྱི་ འཇུས་ མིག་གཏོང་ མཛེས་ནི། །

ཀུ་མུད་ ལྷུ་ལ་ བུ་ལས།

བུ་ལས་པར་ རེས་སོ་ བུ་ལས་ལྷུ་ལ་ ॥ ༢༡༡

प्रेयः प्रियतराख्यानं रसवत् रसपेशलं ।

ऊर्जस्वि रूढाहंकारं युक्तोत्कर्षं च तन्नयं ॥ २७२ ॥

དགའ་བ་ མཆོག་ཏུ་ དགའ་བར་ བཟོད།

ཉམས་ལྷན་ ཡིད་འོང་ ཉམས་དང་ལྷན།

བཞི་བཟོད་ ང་ཀུ་ སྐྱེས་པ་ལྷེ།

དེ་བུ་ལས་ བྱད་འཕགས་དག་དང་ལྷན། ॥ ༢༡༢

अथ या मम गोविन्द जाता त्वयि गृहागते ।

कालेनैषा भवेत्प्रीतिस्तवैवागमनात्पुनः ॥ २७३ ॥

གོ་བོ་ཏུ་ ཁྱིད་ ཁྱིམ་ འོངས་པ།

དེང་ བདག་ དགའ་བ་ སྐྱེས་པ་ བཅང་།

དགའ་བ་ འདི་ནི་ སྐར་ཡང་ ཁྱིད།

དུས་ཀྱིས་ འོངས་ན་ འབྱང་བར་ འབྱུང་ ॥ ༢༡༣

इत्याह युक्तं विदुरो नान्यतस्तादृशी धृतिः ।

भक्तिमात्रसमाराध्यः सुप्रीतश्च ततो हरिः ॥ २७४ ॥

དེ་འདྲའི་ དགའ་བ་ བི་དུ་རམ།

གཞན་ ལས་ མིན་ཞེས་ རིགས་པར་ ལྷན་ །

དེ་ལ་ བྱས་པ་ ཚམ་ གྱིས་ནི །

རབ་བསྟེན་ འཕྲོག་བྱེད་ ལྷན་ཏུ་ རྒྱུ་མཁུ་ ॥ ༥༧

सोमः सूर्यो मरुद्भूमिवर्योम होतानलो जलं ।

इति रुपाण्यतिक्रम्य त्वां द्रष्टुं देव के वयम् ॥ २७५ ॥

ལྷ་པ་ ཉི་མ་ ལྷ་ ས་ བཤམ་ །

ཕྱིན་ཕྱིན་ཕྱིན་ དང་ ཟེ་ དང་ ཅུ།

ཞེས་པའི་ གཞུགས་ རྣམས་ རབ་འདས་ནས།

ལྷ་ ཁྱེད་ ལྷ་བར་ རེད་གྱིས་ ཅི ॥ ༥༧

इति साक्षात्कृते देवे राक्षो यद्राजवर्मणः ।

प्रीतिप्रकाशनं तच्च प्रेय इत्यनुगम्यतां ॥ २७६

མངོན་སུམ་ བྱས་པའི་ ལྷ་ལ་ནི །
 གྱལ་པོ་ དགའ་བའི་གོ་ཆ་ ཡིས །
 དགའ་བ་ རབ་དུ་གསལ་བྱས་ གང་ །
 དེ་ ཡང་ དགའ་བར་ རྗེས་རྟོགས་བྱ ༥ ॥ ४१७

मृतेति प्रेत्य संगंतुं यया मे मरणम्मतम् ।
 सैवान्वन्ती मया[30a]लब्धा कथमत्रैव जन्मनि ॥१७७॥

སྒྲི་བ་ ཞེས་བྱ་ པ་རེལ་དུ །
 གང་ དང་ འགྲོགས་སྤྱིར་ བདག་ འཆི་འདོད །
 ཡ་བརྟེ་དེ་ བདག་ གིས་ ནི །
 སྤྱི་ འདི་ཉིད་ལ་ རི་ལྟར་ ཐོབ ༥ ॥ ४१८

प्राक्प्रोतिर्दर्शिता सेयं रतिः शृंगारतां गता ।
 रूपबाहुल्ययोगेन तदिदं रसवद्भवः ॥२७८॥

དགའ་བ་ ཉིད་དུ་ སྤྱིར་ བསྟན་ འདིར །
 དགའ་བ་ སྤྱིག་པ་ ཉིད་ བྱར་པའི །

རང་བཞིན་ གྱུ་ས་དང་ལྷན་བས་ན །
འདི་ནི་ ཉམས་དང་ལྷན་བའི་ ཚོག ༥ ༥༧

निगृह्य केशेष्वाकृष्टा कृष्णा येनाग्रतो मम ।
सोयं दुःशासनः पापो लब्धः किं जीवति क्षणं ॥२७६॥

གང་གིས་ ནག་མོ་ བདག་ མདུན་ནས །
སྒྲ་ནས་ བརྒྱང་སྟེ་ དངས་གྱུར་བ །
བཟུན་དཀའ་ སྒྲིག་ཅན་ ཐོབ་པ་ འདི །
སྒྲ་ཅིག་ འཛོལ་བར་ གྱུར་རམ་ ཅི ༥ ༥༧

इत्याख्य परां कोटीं क्रोधो रौद्रात्मतां गतः
भीमस्य पश्यतः शत्रुमित्येतद् रसवद्भवः ॥२८०॥

ཅེས་པ་ འཛིགས་ མེ་ དག་དག་ལ །
ལྷ་བའི་ ཁྲོ་བ་ མཚོག་གི་ མཐར །
འཛིགས་པ་ དག་པོའི་བདག་ཉིད་ གྱུར །
འདི་ ནི་ རོ་དང་ལྷན་བའི་ ཚོག ༥ ༥༨

अजित्वा सार्णवामुर्वीमनिष्ठा विविधैर्मलैः ।

अदत्त्वा चार्थमर्थिभ्यो भवेयं पार्थिवः कथम् ॥२८१॥

मर्हेरं वत्सं स'ल' म'कुल' जे' ।

क'म'म' मर्हेर'क'सु' म'गुल'ल ।

सु'ल' ल' वे'र'क'स' म'सु'र'ल ।

स'सु'ल'गु' व'ग' ई'र'ल'गु' ॥ २८१

इत्युत्साहः प्रकृष्टात्मा तिष्ठन्वीररसात्मना ।

रसस्ववङ्गिरामासां समर्थयितुमीश्वरः ॥२८२॥

उ'स'ल' सु'ल' सु'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'l

ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'l

ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'l

ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'ल'l

यस्याः कुसुमशय्यापि कोमलाङ्ग्या रुजाकरो ।

साधिहोने कथं देवी हुताशनवतीं चिताम् ॥ २८३ ॥

ལུས་འཇམ་ གང་ལ་ བདྲ་ཡི།
 མལ་སྒྲན་ དག་ ཀྱང་ ཅུབ་བྱེད་ས།
 ལྷ་མོ་ དེ་ནི་ རོ་ཁྱང་ དག།
 སྲིག་ཟ་ལྷན་པར་ ཇི་ལྟར་ ཉལ། ॥ ༥༤༣

इति कारुण्यमुद्रिकमलं [30b] कारतया स्मृतम् ।
 तथा परेषु ब्रीभत्सहास्याद्भुतभयानकाः ॥ २८४ ॥

ཅེས་པ་ ལྷིང་ཇི་ ལྷས་པ་ཡི།
 ལྷན་ཉིད་དུ་ནི་ རབ་དུ་བཤད།
 དེ་བཞིན་ གཞན་ ཡང་ སི་སྒྲུག་ དང་།
 བཞད་གད་ རྩད་བྱང་ འཇིགས་བྱང་ངོ་ ॥ ༥༤༤

पायं पायं तवारीणां शोणितं करसंपुटैः ।
 कौणपाः सह नृत्यन्ति कबन्धेरन्त्रभूषणाः ॥ १८५ ॥

ལྷ་མས་ བལྷན་པའི་ སྲིན་པོ་ རྣམས།
 མགོ་མེད་རོ་དང་ ལྷན་ཅིག་ད།

ལག་པ་ སྤར་བས་ ཁྱིད་ དགའི་ ཁྲག་ ।
 འཕྱང་ཞིང་ འཕྱང་ཞིང་ གར་བྱེད་དོ ॥ ༢༥༥

इदमम्लानमालाया लम्बं स्तनतटे तत्र ।
 छाद्यतामुत्तरीयेण नवम्रखपदं सखि ॥ २८६ ॥

གོགས་མོ་ མེ་དྲག་ མ་རྒྱུངས་མ་ ।
 ཁྱིད་ཀྱི་ ལུ་མའི་ རོས་ལ་ནི་ ।
 སེན་རྩེས་ སར་པ་ ཆགས་པ་ རདི་ ।
 སྤྱིད་གཡོགས་ ཀྱིས་ ནི་ སྤྱིབ་པར་མཛོད་ । ༢༥༦

अंशुकानि प्रबालानि पुष्पं हारादिभूषणं ।
 शास्त्राश्च मन्दिराण्येषां चित्रमन्दनशाखिनां ॥ २८७ ॥

དགའ་ཚལ་ སྤྱོན་པ་ འདི་རྣམས་ ཀྱི་ ।
 འདབ་མ་ གསར་པ་ གོས་ བཟང་ དང་ ।
 མེ་དྲག་ དོ་ཤལ་ ལ་ སོགས་ཅན་ ।
 ཡལ་འདབ་ ཁང་པར་གྱར་པ་ མཛར་ ॥ ༢༥༧

इदं मघोनः कुलिशं धारासंनिहितानलं ।

स्मरणं यस्य दैत्यस्त्रीगर्भपाताय कल्पते ॥ २८८ ॥

ཅེ་མོ་ དག་ལ་ མོ་གནས་པ།

བརྟུ་བྱེན་གྱི་ བོ་ རྡོ་རྗེ་ གང་།

འདི་ནི་ དན་ན་ ལྷ་མིན་ གྱི།

བུད་མེད་ མང་ལ་ བོ་ ལྷ་ང་བར་བྱེད་ ॥ २८८

वाच्यस्याग्राभ्यता योनिर्माधुर्ये दशितो रसः ।

इह त्वष्टरसायत्ता रसवत्ता स्मृता गिरां ॥ २८९ ॥

སྤྲན་པ་ བྲོང་པ་ ཉིད་མིན་ ལྷེས།

བརྡོད་བྱ་ཡི་ནི་ ཉམས་ དག་ བསྟན།

འདིར་ནི་ ཉམས་ བརྟུད་ དབང་བྱས་ནི།

ཆོག་ཉམས་ ཉམས་དང་ལྷན་པར་ བཤད་ ॥ २८९

अपकर्त्ताहमस्मीति हृदि ते मा स्म भूद्वयम् ।

विमुलेषु न मे खङ्गः प्रहर्तुं जानु वाञ्छति ॥ २९० ॥

བདག་ནི་ གཞོད་པ་བྱེད་པོ་ ཞེས།
 ཁྱོད་ཀྱི་ སྒྲིང་ལ་ འཛིགས་ མ་བྱུང་།
 བདག་གི་ རལ་གྱེ་ཕྱིར་ ཐོགས་ནམས།
 རྣམ་ཡང་ འཛོམས་པར་ འདོད་ མ་ཡིན། ॥ १००

[31a] इति मुक्तः परो युद्धं निरुद्धो दर्पशालिना ।
 पुंसा केनापि तज्जङ्गयमूर्जस्वीत्येवमादिकं ॥ २९१ ॥

ཞེས་པ་ སྒྲིས་བྱ་ འྲིགས་ལྡན་ འགས།
 བཤུལ་དུ་ གཞོན་ནི་ བཀག་བྱས་ནས།
 གཏོང་བ་ དེ་ལྟ་བུ་ ལ་སོགས།
 བཟེ་བཞིན་ལྡན་པར་ ཤེས་པར་བྱ། ॥ १०१

अर्थमिश्रप्रनाख्याय साक्षात्तस्यैव सिद्धये ।
 यत्प्रकारान्तराख्यानं पर्यायोक्तन्तद्विष्यते ॥ २९२ ॥

འདོད་དོན་ དངོས་སུ་ མ་བཞིན་པར།
 དེ་ཉིད་ འབྲུག་པར་བྱ་བའི་ ཕྱིར།

མ་པ་ གཞན་དག་ བཟོད་པ་ གང་ ।

དེ་ནི་ མ་གངས་ བཟོད་པར་ འདོད ॥ १०१

दशत्यसौ परभृतः सहकारस्य मञ्जरीम् ।

तमहं वारयिष्यामि युवाभ्यां म्वेरमास्यताम् ॥ २६३ ॥

ས་དྲ་ཀླ་རའི་ མྱི་མ་མས་ ।

གཞན་གྱིས་གསོལ་ འདིས་ ཟ་བར་བྱེད་ ।

དེ་ནི་ བདག་གིས་ བཟོག་པར་བགྱི་ ।

བྱེད་ གཉིས་ དལ་གྱིས་ འདུག་པར་མཛོད ॥ १०२

संगमय्य सखीं यूना संकेते तद्रतोत्सवम् ।

निर्वर्त्तयितुमिच्छन्त्या कयाप्यपसृतं ततः ॥ २६४ ॥

གོགས་མོ་ མྱིས་བྲན་ བྲད་བྱས་ནས་ ।

དེ་དག་འདུས་པར་ དགའ་བ་ཡི་ ।

དགའ་མྱོན་ མྱུའ་དུ་ གཞུག་ འདོད་པས་ ।

འགའ་ཞིག་ དེ་ནས་ མཛང་བར་བྱར ॥ १०३

किंविदारभमाणस्य कार्यं देवबलात्पुनः ।

तत्साधनसमापत्तिर्या तदाहुः समाहितम् ॥ २९५

བྱ་བ་ འགའ་ཞིག་ རྩོམ་བ་ལ །

སྐལ་བ་ཡི་ ནི་ ལྷོབས་ལས་ ཀྱང་ །

དེ་ཡི་ སྐབ་བྱེད་ ལུན་ཆོགས་ གང་ །

དེ་ ནི་ ཀྱན་ད་པན་བར་བཞེད ། २९५

मानन्तस्या निराकतुं पादयोर्मै नमस्यतः ।

उपकाराय दिष्ट्येदमुदीर्णं घनगर्जितं ॥ २९६ ॥

ཁངས་བ་ གཞོས་ལྟར་ དེ་ཡི་ ནི །

ཀང་བ་དག་ལ་ ལུག་འཆལ་བ །

བདག་ལ་ པན་ལྟིར་ སྐལ་བ་ཡི །

འབྲུག་གི་ སྐྱ་ འདི་ གྲགས་བར་ ལྟར ། २९६

आशयस्य विभूतेर्वा यन्महत्त्वमनुत्त[31b]रं ।

उदात्तं नाम तम्प्राहुरलंकारं मनीषिणः ॥ २९७ ॥

བསམ་པ་ འམ་ ཉི་ འབྱོར་པ་ ཡི།
 ཆེན་པོ་ ཉིད་ནི་ སྤྲ་མེད་ གང་།
 དེ་ནི་ གྱུ་ཆེ་ ཞེས་པ་ཡི།
 གྱུན་དུ་ བཤམ་པ་ནམས་ཀྱིས་ བཟློང་ ॥ १७७

गुरोः शासनमत्येनं न शशाक स राघवः ।
 यो रावणशिरच्छेदकार्यभारेऽप्यविक्रवः ॥ २९८ ॥

རྒྱ་བ་ཆ་ཡི་ མགོ་གཅོད་པའི།
 བྱ་བའི་ ཁུར་ ཡང་ བཟོད་པ་ཡི།
 ར་སྐྱའི་བྱ་ དེས་ སྤྲ་མ་ཡི།
 བཀའ་ལས་ འདྲ་བར་ ནས་མ་ བྱར་ ॥ १७८

रजमिंसिषु संक्रान्तेः प्रतिबिम्बशतैर्बृतः ।
 स्नातो लङ्घेभरः कृच्छ्रादाब्जनेयेन तत्पतः ॥ २९९ ॥

རིན་ཆེན་ ཕྱིག་པ་ ལ་ འཕྲོས་པའི།
 གཤུགས་བརྒྱན་ བརྒྱ་ཡིས་ བསྐྱོར་བྱར་པ།

ལྟོན་དབང་ཕྱག་ རེ་ ཁོན་ །

ཨུན་ བྱས་ དཀའ་བས་ ཤེས་ ॥ ༤༠༠

पूर्वप्राशयमाहात्म्यमत्रान्युदयगारव ।

सुव्यञ्जितमतिव्यक्तमुदात्तद्वयमप्यदः ॥ ३००

སྤྲ་མར་ བསམ་བའི་ བདག་ཉིད་ཆེ་ །

འདིར་ནི་ མངོན་པར་ འབྱོར་པས་ བསྐྱོང་ །

ཀྱ་ཆེ་ གཉིས་པོ་ འདི་དག་ ཀྱང་ །

རབ་བ་ གསལ་བར་ མཆོན་པ་ ཡིན་ ॥ ༣༠༠

अपहृतिरपहृत्य किञ्चिदन्यार्थदर्शनं ।

न पञ्चेषुः स्मरस्तस्य सहस्रं पत्रिणामिति ॥३०१॥

བསྐྱོན་དོར་དག་ ནི་ བསྐྱོན་བྱས་ནས་ །

དོན་གཞན་ ཟུང་ཟད་ བརྗོད་པ་ ལྟེ་ །

འབྱོར་པ་དག་ནི་ མདའ་ལྔ་པ་ །

མ་ཡིན་ གློ་ལྡན་ ལྟོང་ཕྱག་ ཡོད་ ॥ ༣༠༡

चन्दनं चन्द्रिका मन्दो गन्धवाही च दक्षिणः ।
सेयमग्निमयी सृष्टिश्रीता किल परान्प्रति ॥३०२॥

ཅ་རྩྱན་ ལྷ་འོད་ དཔ་བྱ་ ཡི །
ལྷོ་ སྤྱེགས་ ཅི་ཡི་ བཞེན་པ་ འདི །
སེ་ཡི་ རང་བཞིན་ ལྷོ་པ་ ལྷེ །
གཞན་གྱི་ རོང་ནི་ བསིལ་ ཞེས་ བྲགས ॥ ३०२

शैशिर्यमभ्युपेत्यैवं परेष्व्वात्मनि कामिना ।
औष्णप्रदर्शनात्तस्य संपा विषयनिहृतिः ॥३०३॥

འདོད་ལྷན་གྱིས་ ཉི་ གཞན་ ལ་ རེ །
བསིལ་བར་ ཁས་ལྷངས་ བདག་ཉིད་ལ །
རྩ་བ་ ཉིད་དུ་ རབ་བསྟན་ སྤིར །
འདི་ནི་ ཡུལ་ལ་ བསྟོན་དོར་རོ ॥ ३०३

अमृतस्यन्दि[32a]किरणञ्चन्द्रमा नाम नो मतः ।
अन्य एवायमर्थात्मा विषयनिष्यन्दिदीधितिः ॥३०४॥

བདུད་ཅི་ ཟག་པའི་ འོད་ཟེར་ཅན།
 ལྷ་བ་ ཞེས་པར་ བདག་ཅག་ འདོད།
 རོན་གྱི་ བདག་ཉིད་ འདི་ནི་ གཞན།
 ཏུག་ཟག་ ཟེ་དང་ ལྷན་བ་ ཉིད། ॥ ༣༠༥

इति चन्द्रत्वमेवेन्दोरनिवर्त्यार्थान्तरात्मना ।
 उक्तं स्मरात्तन्नेत्येषा स्वरूपापह्नुतिर्मता ॥३०५॥

ཅས་པ་ ལྷ་བའི་ ལྷ་ དངོས་ ཉིད།
 བལྟེག་ནས་ རོན་ གཞན་ བདག་ཉིད་ ཅི།
 འདོད་པས་ གཟེར་བ་ བཟློད་པའི་ སྤྱིར།
 འདི་ནི་ རང་བཞིན་ བསྟོན་དོར་ འདོད། ॥ ༣༠༥

उपमापह्नुतिः पूर्वमुपमास्त्वेव दशिता ।
 इत्यपह्नुतिमेवानां लक्ष्यो लक्ष्येषु विस्तरः ॥३०६॥

དབེ་ཡི་ བསྟོན་དོར་ སྤྱིར་ ཉིད་ཏུ།
 དབེ་ནས་ལ་ ཅི་ རབ་བསྟན་དོ།

འདི་ཡིས་ བསྟོན་ རོར་ དབྱེ་བ་ རྣམས་ །
མཚོན་བྱ་དག་ ལ་ རྒྱ་ཆེར་ མཚོན་ ॥ ༣༠༩

श्लिष्टमिष्टमनेकार्थमेकरूपान्वितं वचः ।
तदभिन्नपदं भिन्नपदप्रायमिति द्विधा ॥३०७॥

སྤྱར་བ་ གཟུགས་གཅིག་ལྡན་བའི་ ཚིག་ །
དུ་མའི་ རོན་ཅན་ ཉིད་དུ་ འདོད་ །
དེ་ཚིག་ བ་དད་ མེན་བ་ དང་ །
བ་དད་ ཚིག་ འདྲ་ རྣམ་བ་གཉིས་ ॥ ༣༡༠

असावुव्यमारूढः कान्तिमान् रक्तमण्डलः ।
राजा हरति लोकस्य हृदयं मृदुमिः करैः ॥३०८॥

ཨ་ད་ཡ་ གནས་ མཛེས་བ་ཅན་ །
དཀྱིལ་འཁོར་ ལ་ ཆགས་ རྒྱལ་པོ་ འདི་ །
མི་དུ་ཀ་རས་ འཛིག་དེན་ གྱི་ །
ཡིད་ནི་ རབ་དུ་འཕྲོག་བར་བྱེད་ ॥ ༣༡༡

दोषाकरेण सम्बद्धनक्षत्रपथवर्तिना ।
राज्ञा प्रदोषो मामित्थमप्रियं किञ्च बाधते ॥३०६॥

सुःस्ररं लसं लं रवःगर्गसं व ।
सर्द्धर्गर्गःसुर्गः वं रं रं रं रं रं ।
सुर्गः लं लं रं रं रं रं रं रं ।
रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं ॥ ३०७

उपमारूपकाक्षे[32b]पन्यतिरेकादिगोचराः ।
प्रागेव दर्शिताः श्लेषा दृश्यन्ते केचनपरे ॥३१०॥

रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं ।
रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं ।
रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं ।
रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं ॥ ३१०

अस्त्यभिन्नक्रियः कश्चिद्विरुद्धक्रियोपरः ।
विरुद्धकर्मा वास्त्यन्यः श्लेषो नियमवानपि ॥३११॥

འགའ་ཞིག་ བྱ་བ་ བྲ་དད་མིན།
 གཞན་པ་ བྱ་བ་ འགའ་མིན་ ཡོད།
 འགའ་བའི་ ལས་ཅན་དག་ ཀྱང་ གཞན།
 སྤར་བ་ དེས་པ་ཅན་ ཡང་ ཡོད། ॥ ༣༡

नियमाक्षेपरूपोक्तिरविरोधी विरोध्यपि ।
 तेषां निदर्शनेष्वेव रूपमाविर्भविव्यति ॥३१२॥

དེས་པ་ འགོག་པ་ གཟུགས་ བཟོད་ དང་།
 འགའ་མིན་ འགའ་བ་ཅན་ ཡང་སྟེ།
 དེ་དག་ རྣམས་ཀྱི་ རང་བཞིན་ ཡང་།
 དཔེབར་ཚོད་ དག་ལ་ གསལ་བར་འགྱུར། ॥ ༣༢

वक्रस्वभावमधुराः शंसन्त्यो रागमुत्त्वणम् ।
 दृशो हृत्यश्च कर्षन्ति कान्ताभिः प्रेषिताः प्रियान् ॥३१३॥

འབྲོག་ཅིང་ ཡོད་ལོང་ རང་བཞིན་ཅན།
 རྒྱགས་པ་ གསལ་བ་སྟོན་བྱེད་མ།

མཛེས་མས་ བསྐྱེད་བའི་ མེག་ དང་ ཉི །

པོ་ཉ་མེས་ ཀྱང་ མཛེད་བོ་ འགྲགས ॥ ३१३

मधुरा रागवर्धिन्यः कोमलाः कोकिलागिरः ।

आकर्ण्यन्ते मदकलाः श्लिष्यन्ते चासितेक्षणाः ॥३१४॥

ཡིད་འོང་ ཆགས་བ་འཕེལ་བར་བྱེད །

འཇམ་ཞེང་ མེས་བའི་ གདངས་སྒྲིན་ཅན །

ཁྱུ་བྱག་སྒྲ་ ཉི་ ཐོས་གྱུར་ཏེ །

དཀར་མིན་མེག་ཅན་དག་ལ་ འབྱད ॥ ३१४

रागमादर्शयन्नेष वारुणोयोगवर्धितः ।

पराभवति घर्मांशुरक्लजस्तु विजृम्भते ॥३१५॥

རྒྱ་མ་ དང་ སྐར་ འཕེལ་བ་ཡི །

དམར་བ་ རབ་དུ་སྒྲིན་བྱེད་ ཅིང་ །

ཆ་ཟེར་ཅན་ འདི་ ཉམ་གྱུར་ཏེ །

ལུས་སྒྲིས་ དག་ ཉི་ རྣམ་བར་རྒྱས ॥ ३१५

निर्लिशत्वमसावेव धनुष्येषास्य वक्रता ।

शरेष्वेव नरेन्द्रस्य [33a] मार्गणत्वञ्च वर्त्तते ॥३१६॥

रल'सौ'छिद'ल'के' स्त्री'यं ।

म'ल'छिद'ल' के' र'सौ'सौ'छिद ।

सै'द'व'द' र'द'यै' स्त्री'यं ।

स'द'र'क'स'छिद'ल' म'क'स'व' यै'यं ॥ ३१७

पद्मानामेव दण्डेषु करटकस्त्वयि रक्षति ।

अथवा दृश्यते रागिमिथुनालिंगनेष्वपि ॥३१७॥

।'गु'स' व'सु'द'स'ल'क'र'स' के' ।

व'सु'द'स' ल'व' छिद'ल'दे' ।

दे'क'गु'द' क'स'स'छिद' र'सौ'सौ'छिद ।

र'सु'द'स' ग'र'व'क'स'ल'द' स'सु'द' ॥ ३१८

महीभृद्भूरिकटकस्तेजस्वी नियतोदयः ।

दक्षः प्रजापतिश्चासीत् स्वामी शक्तिधरश्च सः ॥३१८॥

ས་འཛིན་ ༡་ཏ་༡་ མང་ཞིང་ །
 གཟེ་བཞིན་ལྷན་པ་ ཅེས་པར་དར་ །
 ཟྱེ་དགའི་བདག་ བྱང་ ཟུར་བ་ལྟེ །
 རེ་བོ་ནས་པ་ འཛིན་ ཡང་དེ ॥ ༣༡༤

अच्युतोप्यवृषोच्छेदी राजाप्यविदितक्षयः ।
 देवोप्यविबुधो जह्मे शंकरोप्यभुजंगवान् ॥३१६॥

ཉམས་མེད་ ཡིན་ ཡང་ ཚེས་གཙོད་མིན་ །
 རྒྱལ་བོ་ ཡིན་ ཡང་ ཟད་མི་ཤེས་ །
 བདེ་བྱེད་ཡིན་ ཡང་ ལག་འགྲོ་མེད་ །
 ལྷ་ཡང་ བེ་བྱ་རྒྱ་ མིན་ཤེས་ ॥ ༣༡༥

गुणजातिक्रियादीनां यद्वैकल्यदर्शनं ।
 विशेषदर्शनायैव सा विशेषोक्तिरिष्यते ॥३२०॥

བྱེད་པར་ རབ་དུ་ བསྐྱན་བའི་ཕྱིར་ །
 ཡོན་དན་ རིགས་ དང་ བྱ་བ་ མོགས་ །

གང་དུ་ མ་ཚང་ཉིད་ བསྟན་པ།

དེ་ནི་ བྱད་པར་ བཞིན་པར་ འདོད། ॥ ३१०

न कठोरं न चातीक्ष्णमायुधं पुष्पधन्वनः ।

तथापि जितमेवासीदमुना भुवनत्रयं ॥३२१॥

མེ་དོག་ གཞུ་ཅན་ དག་གི་ མཚོན།

རྩལ་པ་མ་ཡིན་ རྣེ་བའང་མིན།

དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ འདི་ཡིས་ནི།

ས་གསུམ་དག་ལས་ རྒྱལ་བར་བྱུང་ ॥ ३२१

न देवकन्यका नापि गन्धर्वकुलसंभवा ।

तथाप्येषा तपोभङ्गं विधातुं वेधसोप्यलं ॥३२२॥

འདི་དག་ ལྷ་ཡི་ བྱ་མོ་ མིན།

དྲི་ཟའི་ རིགས་ལས་ བྱང་བའང་ མིན།

དེ་ལྟ་ མཛད་ཀྱི་ ཚངས་པའི་ ཡང་།

དཀའ་བྱུང་ གཞོམ་པ་ སྤྲུལ་པར་ རྟེན། ॥ ३२२

न बद्धा भुक्नु[33b]दिर्नापि स्फुरितो दशनच्छदः ।
न च रक्ताभवदृष्टिर्ध्वस्तञ्च द्विषतां कुलं ॥३२३॥

ཁྲོ་གཉེར་ ནག་ནི་ མ་བསྐྱུས་ འིང་ ।
སོ་ཡི་ གཡོགས་ ཀྱང་ མ་བསྐྱོད་ལ་ ।
མིག་ཀྱང་ ནམར་པོར་ མ་གྱུར་བར་ ।
དགྲ་ཡི་ རིགས་ ནི་ ཉམས་བར་བྱས ॥ ३२३

न रथा न च मातंगा न हया न च पत्तयः ।
स्त्रीणामपाङ्गदृष्ट्यैव जीयते जगतां त्रयं ॥३२४॥

འིང་དྲ་ མེད་ ཅིང་ སྤང་པོའང་ མེད་ ।
དྲ་མེད་ ཀྱང་ཐང་མེད་བར་ ཡང་ ।
རྒྱར་མིག་ཉེད་ ཀྱིས་ བྱད་མེད་ནྦམས་ ।
འགྲོ་བ་ གསུམ་པོ་ ནག་ལས་ རྒྱལ ॥ ३२४

एकचक्रो रथो यन्ता विकलो विषमा हयाः ।
आक्रामत्येव तेजस्वी तथाप्यर्को जगन्नयं ॥३२५॥

ཤིང་དྲ་ འཁོར་ལོ་གཅིག་པ་དང་ །
 ཁ་ལོ་པ་ ཉམས་ དྲ་མི་མཉམ་ །
 དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ གཞི་བྱིན་ཅན་ །
 ཉི་མས་ འགྲོ་བ་ གསུམ་པོ་ མནན་ ॥ ३२४

सैषा हेतुविशेषोक्तिस्तेजस्वीतिविशेषणात् ।
 अयमेव क्रमोन्येषां भेदानामपि कल्प्यते ॥३२६॥

གཞི་བྱིན་ཅན་ སྒྲིགས་ བྱད་པར་ལས་ །
 འདི་ནི་ ལྷ་ཡི་ བྱད་པར་ བཟོད་ །
 རིས་པ་ འདི་ཡིས་ གཞན་གྱི་ ནི་ །
 དབྱེ་བ་རྣམས་ གྲུང་ བདག་པར་བྱ་ ॥ ३२५

विवक्षितगुणोत्कटैर्यत्समीकृत्य कस्यचित् ।
 कीर्त्तनं स्तुतिनिन्दार्थं सा स्मृता तुल्ययोगिता ॥३२७॥

བཟོད་ འདོད་ ཡོན་དྲ་ བྱད་འཕགས་ དང་ །
 མཚུངས་པར་ བྱས་ནས་ འགའ་ཞིག་ནི་ །

བསྟོད་ སྟོད་ རོན་དུ་ བསྐྱགས་པ་ བང་ ।
 དེ་ནི་ མཚུངས་པར་ སྟོད་པར་ བཤད ॥ ३२७

यमः कुबेरो वरुणः सहस्राक्षो भवानपि ।
 विघ्नत्यनन्यविषयां लोकपाला इति श्रुतिम् ॥३२८॥

གཤེན་ཇེ་ ལུས་ངན་ ཚུ་ལྟ་དང་ ।
 མིག་སྟོང་པ་ དང་ བྱོད་ཉིད་ ཀྱང་ ।
 འཇིག་རྟེན་ སྟོང་བ་ ཞེས་བའི་ སྒྲ་ ।
 ལུལ་གཞན་མེད་པར་ རྣམ་པར་འཇིན་ ॥ ३२८

संगतानि मृगाक्षीणां तडिद्विलसितन्यपि ।
 क्षणद्वयञ्च तिष्ठ[34a]ति घनरुधान्यपि स्वयं ॥३२९॥

རི་དགས་ མིག་ དང་ འགྲོགས་པ་ དང་ ।
 སྟོག་གི་ ཅེ་དགའ་དག་ དང་ ནི་ ।
 སྟིན་གྱི་ ཚུམ་པའང་ རང་བཞིན་གྱིས་ ।
 སྐད་ཅིག་ གཉིས་པར་ མི་ གནས་སོ་ ॥ ३२९

विरुद्धानाम्प्रार्थानां यत्र संसर्गदर्शनं ।
विरोधसाधनायैव स विरोधः स्मृतो यथा ॥३३०॥

འགལ་ལྷོ་སྐྱབ་བྱེད་སྒྲིབ་དུ་ནི།
གང་དུ་དངོས་པོ་འགལ་བ་རྣམས།
ཡང་དག་འགྲོགས་པར་རབ་བསྐྱེད་པ།
དེ་ནི་འགལ་བ་བཤད་དེ་དཔེར། ॥ ३३०

कूजितं राजहंसानां वर्द्धते मदमञ्जुलं ।
क्षीयते च मयूराणां रुतमुत्क्रान्तसौष्ठवं ॥३३१॥

ངང་པའི་རྒྱལ་པོ་རྣམས་དག་ནི།
སྒྲིམ་པའི་གདངས་སྒྲན་ཅ་ཅོ་འཕེལ།
མ་བྱ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱ་དག་ནི།
ཡིད་འོང་ཉིད་དང་བྲལ་བས་ཉམས། ॥ ३३१

प्रावृषेण्यैर्जलधरैरम्बरं दुर्दिनायते ।
रागेण पुनराक्रान्तं जायते जगतां मनः ॥३३२॥

དབྱར་སྒྲིམ་ ཅུ་འཛིན་དག་གིས་ནི །
 བས་མཁའ་ ཡུལ་ངན་ ལྷ་བྱར་ སྦྱོད །
 ཆགས་པ་ ཡིས་ ཀྱང་ འགྲོ་བ་ཡི །
 ཡིད་ནི་ ཀྱན་ད་ ཆགས་པར་གྱར ༥ ३३५

तनुमर्ष्यं पृथुधोनि रक्तौष्ठमसितेक्षणं ।
 नतनाभि वपुः स्त्रीणां कं न हन्त्युन्नतस्तनं ॥३३३॥

སྒྲིལ་པ་ སྤ་ ཞིང་ རོ་སྒྲིལ་ སྦྱོམ །
 མཆུ་དམར་ མིག་ནི་ དཀར་པ་ མིན །
 རྩེ་བ་ དམར་ ཞིང་ རྩ་མ་ མཐོ །
 བྱད་མེད་ ལུས་ ཀྱིས་ སྦྱ་ མ་ བཅོམ ༥ ३३३

मृणालबाहु रम्भोर पद्मोत्पलमुखेक्षणं ।
 अपि ते रूपमस्माकं तन्वि तापाय कल्पते ॥३३४॥

བད་རྩའི་ ལག་པ་ ཅུ་ཤིང་ བརྒ །
 བརྒྱའི་གདོང་ དང་ ལྷ་དྲུལ་ མིག །

ཁྱེད་ཀྱི་གཞུགས་ཀྱིས་ བདག་ཅག་ནམས་ ।

གདུང་ནས་ མིན་ནས་ ལུས་ཅན་མ་ । ३३८

उद्यानमारुतोद्धूताश्चूताश्चम्यकरेणवः ।

उदश्रयन्ति पान्यानामस्पृशन्तोपि लोचनम् ॥३३५॥

སྐྱེད་ཚལ་ རླུང་གིས་ རབ་བསྐྱེད་བ་ ।

ཕྱུ་དུ་ཅ་སྒྲ་ཀ་ཡི་དུལ་ ।

རིག་པ་མིན་ ཡང་ འགྲོན་པོ་ཡི་ ।

མིག་ལ་ མཆི་མ་ཟག་པར་བྱེད་ ॥ ३३५

कृष्णार्जुनानुरक्तापि दृष्टिः कर्णा[34b]वलम्बिनी ।

यानि विश्वसनीयत्वं कस्य त कलभाषिणि ॥३३६॥

སྐྱ་པར་སྒྲོགས་མ་ ཁྱེད་ཀྱི་མིག་ ।

ནག་དཀར་ཇེས་སུ་དམར་བ་ ཡང་ ।

ན་བ་དག་ལ་ བདེན་བ་ ནི་ ।

སུ་ཡི་ ཡིད་བདན་ཉིད་ཏུ་འགྱུར་ ॥ ३३६

इत्यनेकप्रकारोयमलंकारः प्रतीयते ।

अप्रस्तुतप्रशंसा स्यादप्रक्रान्तेप्सितास्तुतिः ॥३३७॥

दे'ब्रु'र'ब्रु'र'द'ई'क'स'प' ई' ।

दु'स'ई'द'दु' र'व'ई'ग'स'गु ।

स'व'स' स'ई' द'ई'द'प'स' व'ई'द'प' ई' ।

स'व'स'सु' स'प'प' व'ई'द'प' य'ई' ॥ ३३८

सुखं जीवन्ति हरिणा वनेष्वपरसेविनः ।

अर्थैर्यत्नसुलभैर्जलदर्भाङ्कुरादिभिः ॥३३८॥

ग'ल'क'स'व'ई'द'प' ई'द'ग'स'क'स'स' ।

द'व'द'स'ई' क'ई'द'प'स'स'व'ई'ई' ।

क'ई'द'ई'य'ई'सु'ग'स'ग'स'ग'ई' ।

क'ग'स'क'स'स'सु' ई' व'ई'प'स' ई'ई' ॥ ३३९

सेयमप्रस्तुतैवात्र मृगवृत्तिः प्रशस्यते ।

राजानुवर्त्तनह्ये शनिर्विष्णेन मनस्विना ॥३३९॥

གྲུལ་པོ་འི་རྩེས་འབྲངས་ ཉོན་མོངས་པ།
 འཁོར་དུ་སྒྲིབ་འི་ ཡིན་ཅན་གྱིས།
 སྐབས་སུ་ མ་བབ་ཉིད་དུ་ འདིར།
 དེ་དྲགས་ སྒྲིད་ཚུལ་ འདི་དག་ བསྐྱབས། ॥ ३३७

यदि निन्दन्निव स्तौति व्याजस्तुतिरसौ स्मृता ।
 दोषाभासा गुणा एव लभन्ते ह्यत्र सन्निधिं ॥३४०॥

གཤམ་ཏེ་ སྐད་པ་ བཞིན་ བསྐྱོད་ནས།
 སྒྲིན་ ལྷར་ སྐང་བའི་ཡིན་ཏན་ཉིད།
 གང་དུ་ ཉི་བར་ཐོབ་གྱུར་པ།
 འདི་ནི་ རྩོལ་གྱིས་བསྐྱོད་པར་ བཤད། ॥ ३ॣ

तापसेनापि रामेण जितेयं भूतधारिणी ।
 त्वया राक्षापि सैवेयं जिता मा भून्मदस्तव ॥३४१॥

རྩ་མ་དགའ་ཐུབ་པ་ཡིས་ གྲང་།
 འབྲང་པོ་ འཛིན་མ་ འདི་ལས་གྲུལ།

དེ་ཉིད་ རྒྱལ་པོ་ བྱོད་ཀྱིས་ ཀྱང་ །

འདི་ལ་ བྱོད་ནི་ རྒྱགས་ མ་ མཛད་ ༥ ༣༧

पुंसः पुराणादाच्छ्रद्धा श्रीस्त्वया परिभुज्यते ।

राजभिद्वाकुवंशस्य किमिदं तव युज्य[35a]ते ॥३४२॥

སྤྱོད་ཀྱི་སྤྱེས་བྱ་ ལས་ བཅད་ནས་ །

དབལ་འདི་བྱོད་ཀྱིས་ ཡོངས་སུ་སྤྱོད་ །

རྒྱལ་པོ་ བྱ་རམ་ཤིང་བའི་རྒྱད་ །

བྱོད་ཀྱི་ འདི་ནི་ རིགས་སམ་ཅི་ ༥ ༣༨

भुजंगभोगसंसक्ता कलत्रं तव मेदिनी ।

अहंकारः पराङ्मुगेदिमारोहति कुतस्तव ॥३४३॥

བྱོད་ཀྱི་ བཅུན་མོས་ ལཞི་ནི་ །

ལག་འགྲོའི་སྤྱོད་ག་དག་ལ་རྒྱགས་ །

ཅི་སྤྱོད་ བྱོད་ཀྱི་ང་རྒྱལ་ནི་ །

མཚོག་གི་མཐའ་ཅ་ འཛགས་པར་གྱར་ ༥ ༣༩



इति श्लेषानुविद्धानामन्येषां चोपलक्ष्यताम् ।
व्याजस्तुतिप्रकाराणामपर्यन्तः प्रविस्तरः ॥३४४॥

དེ་ལྟར་ ཉེ་བར་ མཆོན་བ་ལས །
སྒྲུང་བ་ཅན་དང་གཞན་དག་གི །
མོལ་གྱིས་བསྟོད་པའི་རྣམ་པ་རྣམས །
རབ་དྲུ་གྱུ་ཆེ་མཐའ་དང་བྲལ ॥ ३८८

अर्थान्तरप्रवृत्तेन किञ्चित्तत्सदृशं फलं ।
सदसद्वा निदर्शयेत् यदि स्यात्तन्निदर्शनं ॥३४५॥

གལ་ཏེ་ རོན་གཞན་འཇུག་བ་ཡིས །
དེ་དང་མཆོངས་པའི་འབྲས་བྱ་འགའ །
མཆོག་གས་ མཆོག་མིན་ སྟོན་བྱེད་བ །
དེ་ནི་ ཇེས་བར་བསྟན་བ་ ཡིན ॥ ३८९

उदयन्नेव सविता पक्षेष्पर्पयति श्रियं ।
विभावयितुमृद्धीनां फलं सुहृदनुग्रहं ॥३४६॥

དོན་རྣམས་ བསྐྱེལ་བ་ གང་ ཡིན་པ་ ।

ཡོངས་བརྗེས་ཡིན་ཏེ་ དེ་དག་ དཔེར་ ॥ ༣༧

सह दीर्घा मम[35b] श्वासैरिमाः संप्रति रात्रयः ।

पाण्डुराश्च ममैवाङ्गैः सह ताम्रन्द्रभूषणाः ॥३४६॥

དེ་ནི་ མཚན་མོ་ འདི་དག་རྣམས་ ।

བདག་གི་དབུགས་དང་ ལྷན་ཅིག་རིང་ ।

ཁྱེ་བའི་གུན་ལྷན་མ་རྣམས་ ཀྱང་ ।

བདག་ལུས་ཉིད་ དང་ ལྷན་ཅིག་ ལྷ ॥ ༣༧

वर्द्धते सह पान्थानां मूर्च्छया चूतमञ्जरी ।

पतन्ति च समन्तेषामधुभिर्मलयानिलाः ॥३५०॥

འགྲོན་པོ་རྣམས་ཀྱི་ མྱོངས་པ་ དང་ ।

ལྷན་ཅིག་ ལྷ་ཏའི་དོག་པ་གུས་ ।

དེ་དག་ མཆི་མ་ དང་ མཉམ་དུ་ ।

མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱང་དག་ འབབ་ ॥ ༣༥

कोकिलालापसुभगाः सुगन्धिवनवायवः ।
यान्ति सार्धं जनानन्दैर्वृद्धिं सुरमिवासराः ॥३५१॥

ཁ་བྱུག་ སྒྲོགས་པའི་སྐལ་བཟང་ དང་ ।
ནགས་ཀྱི་རྒྱང་ ཉི་ རྒྱ་བཟང་ དང་ ।
དབྱིད་ཉིན་ སྒྲེ་བོ་འི་ ཀྱན་དགའ་ནསས།
ལྷན་ཅིག་དག་ཏུ་ འཕེལ་བར་འགྱུར། ॥ ३५१

इत्युदाहृतयो दत्ताः सहोक्तेष्व काश्चन ।
क्रियते परिवृत्तेष्व किञ्चिद्भूपनिरूपणं ॥३५२॥

དེ་ལྟར་ ལྷན་ཅིག་བཞེད་པ་ཡི།
དཔེར་བཞེད་ འགའ་ཞིག་ འདིར་ བྱས་དེ།
ཡོངས་སུ་བཞེས་པའི་ རང་བཞིན་ ཡང་།
ངེས་པར་བསྟན་པ་ ཅུང་ཟད་བྱ། ॥ ३५२

शस्त्रप्रहारान्ददता भुजेन तव भूभुजां ।
चिरार्जितं हतं तेषां यशः कुमुदपाण्डुरं ॥३५३॥

ས་སྒྲོད་ནསས་ལ་ བཏོན་ བསྟན་པ།
སྤར་བྱེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ལག་པ་ཡིས།

དེ་དག་ གྲགས་པ་ ཀྱ་མུང་ དཀར་ ।
 ཡུན་རིང་དག་ཏུ་ བསྐྱབས་པ་ ཐོགས་ ॥ ३१३

आशीर्नामामिलषिते वस्तुन्याशंसनं यथा ।
 पातु वः परमज्योतिरवाङ्मनसगोचरम् ३५४॥

མངོན་པར་འདོད་པའི་དངོས་བོ་ལ་ ।
 མྱོན་པ་ ཤིས་བརྗོད་ ཅེས་བྱ་ དབེར་ ।
 ངག་ཡིད་ སྤྲོད་ཡུལ་ མ་ཡིན་པའི་ ।
 སྤང་བ་ དས་བས་ བྱིད་ལ་ སྤངས་ ॥ ३१८

अनन्वयसंसदेहावुपमास्त्रेव दर्शितौ ।
 उपमा रूपक[36a]चापि रूपकैस्त्रेव कीर्तितम् ॥३५५॥

ཇེས་འགྲོ་མེད་དང་ཐི་ཚོས་ཅན་ ।
 དག་ནི་ དབེ་རྣམས་ཉིད་ལ་ བསྟན་ ।
 དབེ་ཡི་གཞུགས་ཅན་ དག་ ཀྱང་ འདིར་ ।
 གཞུགས་ཅན་རྣམས་ལ་ ཇེས་པར་བསྐྱབས་ ॥ ३१९

उत्प्रेक्षाभेद एवासावुत्प्रेक्षावयवोपि च ।
तानालंकारसंसृष्टिः संसृष्टिः कथ्यते पुनः ॥३५६॥

रव'ङ्ग'वा'ळ'प'स' र'द' य'द' र्' ।
रव'ङ्ग'वा'द'वा'वी'द'पु'व'ङ्ग' ।
व'द'द'क्रु'ङ्ग'स'स'व'स'स'व' ।
सु'व'स'स'द'वा'द' व'ङ्ग'द'व'स' ॥ ३५७

अङ्गाङ्गिभावसंस्थानं सवेषां समकक्षता ।
इत्यलङ्कारसंसृष्टौ लक्षणीया द्वयी गतिः ॥३५७॥

य'ङ्ग'व'वा'य'ङ्ग'व'वा'उ'ङ्ग'द'स' ।
स'व'स' द'द' व'स'स'उ'ङ्ग' व'स'स'स'ङ्ग' ।
उ'स'व'द'व'वा'स' व'ङ्ग'स' सु'व'स'स' ।
क्रु'ङ्ग'द'वा'य' र्' स'ङ्ग'द'व'स' ॥ ३५८

आक्षिपन्त्यरविन्दानि तव मुग्धे मुखेभिर्य ।
कोषदण्डसमप्राणां किमेषामस्ति दुष्करं ॥३५८॥

མཇོས་མ་ ཁྱོད་ཀྱི་ བཞིན་གྱི་ དཔལ།
 བདུ་དག་གིས་ འགོག་བར་བྱེད།
 མཇོད་དང་ ཡུ་བ་ ཡན་ཚེགས་པ།
 འདི་ལ་ བྱ་ དཀའ་ ཅི་ ཞིག་ ཡོད། ॥ ༣༥

श्लेषः सर्वास्तु पुण्याति प्रायो वक्रोक्तिषु धियं ।
 भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयं ॥३५॥

རང་བཞིན་ བཇོད་དང་ འགྲོག་ བཇོད་ཅེས།
 འག་གི་ རང་བཞིན་ བྲ་དད་ གཉིས།
 འགྲོག་པོར་ བཇོད་པ་ ཐམས་ཅད་ལ།
 བལ་ཆེར་ སྦྱར་བས་ དཔལ་ཀྱས་བྱེད། ॥ ༣༥

भाविकत्वमिति प्राहुः प्रबन्धविषयं गुणः ।
 भावः कवेरभिप्रायः कान्येष्वसिद्धि यः स्थितः ॥३६॥

སྦྱན་འག་མཁན་ བསམ་དགོངས་པ་ ལྟེ།
 སྦྱན་འག་ བྲུབ་པར་ གང་ གནས་པ།

རབ་སྒྲོར་ ཡུལ་གྱི་ཡོན་ཏན་ཅན །

དེ་ནི་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ བཛྲོད ༥ ༣༩༠

परस्पररोपकारित्वं सर्वेषां वस्तुपर्वणाम् ।

विशेषणानां व्यर्थानामक्रिया [36b] स्थानवर्णनं ॥ ३६१

དངོས་པོ་ཡི་ ནི་ ཚོགས་རྣམས་ཀྱན །

པན་ཚུན་ པན་པར་བྱེད་པ་ ཉིད །

དོན་དང་ བྲལ་བའི་ བྱད་པར་ རྣམས །

མ་བྱས་ གནས་སྲུ་ བསྐྱལ་པ་ དང་ ॥ ༣༩༡

व्यक्तिरुक्तिक्रमबलाद्गभीरस्यापि वस्तुनः ।

भावायत्तमिदं सर्वमिति तं भाविकं विदुः । ३६२

བཛྲོད་རིམ་ སྒྲོབས་ ལས་ དངོས་པོ་ ནི །

ཟབ་མོ་དག་ ཀྱང་ གསལ་བ་སྟེ །

དེ་ཀྱན་ དགོངས་པའི་དབང་གྱུར་ ལྷིར །

དེ་དག་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ རིག ॥ ༣༩༢

यच्च सन्ध्यङ्गवृत्त्यङ्गलक्षणाद्यागमान्तरे ।
व्यावर्णितमिदं चेष्टमलङ्कारतयैव नः ॥ ३६३

གང་ཡང་ མཚམས་ སྟོར་ ཡན་ལག་ དང་ ।
འཇུག་པའི་ཡན་ལག་ མཚན་ ཉིད་ མོགས་ ।
ལུང་ གཞན་ དག་ཏུ་ བཛྲོད་ འདི་ ཡང་ ।
སྐྱོན་ཉིད་ཏུ་ བློ་ བདག་ཅག་ འདོད་ ॥ ३६३

पन्था स एष विवृतः परिमाणवृत्त्या संहृत्य विस्तरमनन्तमलंक्रियाणः ।
वाचामतीत्य विषयं परिवर्त्तमानानभ्यास एव विवरीतुमलं विशेषान् ॥ ३६४

སྐྱོ་ཆེ་ མཐའ་ཡས་ རབ་བསྐྱུས་ཚད་ཏུ་ བྱུར་བ་ཡི་ ।
སྐྱོན་རྣམས་ དག་གི་ལས་ འདི་ཉིད་ བློ་རྣམ་པར་སྟེ་ ।
བཛྲོད་པའི་ལུང་ལས་ འདས་པར་ ཡོངས་སུ་གནས་བ་ཡི་ ।
ཁྱད་པར་རྣམས་ནི་ གོམས་བ་ཉིད་ཀྱིས་ དབྱེ་བར་ནུས་ ॥ ३६४

इत्याचार्यदण्डिनः कृतौ काव्यादर्शोऽर्थालङ्कारो नाम द्वितीयः परिच्छेदः ॥

ཞེས་ སྟོབ་དཔོན་ དབྱུག་པ་ཅན་གྱིས་ མཛད་པ་ སྐྱོན་ངག་ མེ་
ཡོང་ལས་ དོན་གྱི་སྐྱོན་ ཅས་བྱ་བ་ ཡོངས་སུ་བཅད་པ་ གཉིས་པའོ་ ॥

CHAPTER III

अव्यपेतव्यपेतात्मा व्यावृत्तिर्वर्णसंहतेः ।
यमकं तच्च पादानामादिमध्यान्तगोचरं ॥१॥

བར་མ་ཚོད་དང་ བར་ཚོད་ བདག །
ཡི་གེ་ ཚོགས་པ་ བསྐྱར་བ་ནི །
ཟུང་ལྷན་ དེ་ཡང་ ཀྱང་བ་ཡི །
དང་པོ་ བར་ མཐའ་ སྟོད་ལྷལ་ཅན ॥ ༡

एकद्वित्रिचतुष्पादयमकानां विकल्पनाः ।
आदिमध्यान्तमध्यान्तमध्याद्याद्यन्तसर्वतः ॥२॥

གཅིག་ གཉིས་ གསུམ་ བཞི་ ཀྱང་བ་ཡི །
ཟུང་ལྷན་རྣམས་ཀྱི་ རྣམ་རྟོག་ནི །
ཐོག་མ་ བར་ མཐའ་ བར་ དང་ མཐའ་ །
བར་དང་ ཐོག་མ་ ཐོག་མཐའ་ ཀུན ॥ ༢

[37a] अत्यन्तब्रह्मस्तेषां भेदाः संभेदयोनयः ।

सुकरा दुष्कराश्चैव दृश्यन्ते तत्र केचन ॥३॥

गुणं॑ तु॒ द्रष्टुं॑ च॒ व्यसं॑ श्ले॒षः॑ च ।

दे॒हमा॑ द्रष्टुं॑ च॒ शी॒घ्रं॑ तु॒ खलु॑ ।

दे॒हं॑ च॒ श्ले॒षः॑ च॒ दृ॒ष्ट्वा॑ च॒ यत् ।

दृ॒ष्ट्वा॑ च॒ श्ले॒षः॑ च॒ दृ॒ष्ट्वा॑ च॒ यत् ॥ ३

मानेन मानेन सखि प्रणयोभूत्प्रिये जने ।

खण्डिता कण्ठमास्त्रिष्य तमेव कुरु सन्नपम् ॥४॥

मृ॒गा॒स॒सं॑ स॒ह॒स्रं॑ च॒ श्ले॒षः॑ च॒ यत् ।

मि॒त्र॒स॒सं॑ च॒ श्ले॒षः॑ च॒ दृ॒ष्ट्वा॑ च॒ यत् ।

मृ॒गा॒स॒सं॑ च॒ श्ले॒षः॑ च॒ दृ॒ष्ट्वा॑ च॒ यत् ।

दे॒हं॑ च॒ श्ले॒षः॑ च॒ दृ॒ष्ट्वा॑ च॒ यत् ॥ ४

मेघानादेन हंस्तानां मदनोमदनोदिना ।

नुजमानं मनः स्त्रीणां सह रत्या विगाहते ॥५॥

ངང་བ་ནས་ས་ཀྱི་ རྒྱལ་ས་ འཛིན་ས་བ །
 སྒྲིན་གྱི་ སྒྲ་ ཡིས་ རྒྱུ་ས་བྱེད་ནི །
 དགའ་ས་ དང་ བཅས་ བྱད་མེད་ཀྱི །
 ཁངས་བྲལ་ཡིད་ལ་ འཇུག་པར་བྱེད ॥ ४

राजन्वत्यः प्रजा ज्ञाना भवन्तं प्राप्य साम्प्रतं ।
 अतुरं अतुलं भोधि रसनोर्वीकरग्रहे ॥६॥

རྒྱ་གཉེར་བཞི་ཡི་ སྒྲ་རགས་ཅན །
 ས་ཡི་ལག་ དབྱ་འཛིན་ལ་ བཤམས །
 བྱོད་ཉིད་ ཐོབ་ནས་ ད་ལྟ་ནི །
 སྒྲི་དགུ་ རྒྱལ་པོ་ བཟང་ལྡན་གུར ॥ ५

अरण्यं कौञ्चवाक्रान्तमन्यैः सद्यः दिवौकसां
 पदातिरथनागाभ्वरहितैरहितैस्तव ॥७॥

ཀླང་ཐང་ འིང་དྲ་ སྒྲང་པོ་དང་ །
 དྲ་དང་ བྲལ་བ་ བྱོད་ཀྱི་ དགུ །

འགའ་ ཞིག་ རྣམས་དང་ གཞན་དག་ནི །
 རྩ་ རྣམས་དག་གི་ གཞན་སུ་ སོང་ ॥ ༧

मधुरं मधुरम्भोजवदने वद नेत्रयोः ।
 विभ्रमम्भ्रमरम्रान्त्या विडम्बयति किञ्चिदं ॥८॥

ཅུ་སྤྱེས་གཤོང་ལྷན་ མིག་དག་གི །
 རྣམ་འབྲུལ་ ཡིད་འོང་ འདི་ལ་ ནི །
 དབྱིད་ཀྱི་ བྱང་བའ་རྣམ་འབྲུལ་གྱིས །
 ཅོ་འདི་བྱེད་པ་ ཅི་ ཡིན་ སྤྱོས་ ॥ ༨

वारुणो वा रणोद्दामो हयो वा स्मरदुर्धरः ।
 न यतो नयतोऽन्तं नस्तदहो वि[37b]क्रमस्तव ॥९॥

འདོད་པ་ གཡུལ་དུ་ དཔའ་བ་ཡི །
 སྤང་པོའས་ གཟུང་དཀའ་ ཏ་མེད་ཀྱིས །
 གང་སྤྱིར་ བདག་ཅག་ མཐར་བྱས་པ་ །
 དེ་སྤྱིར་ ཁྱོད་ཀྱི་ རྣམ་གཞིན་ མཚར་ ॥ ༩

राजितैराजितैरुपेन जीयते स्वाद्दुर्लभैः ।
जीयते च पुनस्तुतिं वस्तुधा वस्तुधारया ॥१०॥

वायुवाऽनु क्वं वसः खेसः वः ।
खेः वदवाः सुदः वदसः क्वं वद्वेः क्वं ।
कुलः वरः सुदः क्वं कुलः सुदः ।
खेसः वः वदवाः सुदः वरः वदवाः सुदः ॥ १०

करोति सहकारस्य कलिकोत्कलिकोत्तरं ।
मन्मनोमन्मनोव्येष मत्तकोकिलनिस्वनः ॥११॥

सः क्वं वदः खेः वदः वदः ।
वदवाः वदः खेसः वदः सुदः वदः सुदः ।
सुदः वदः सुदः वदः वदः वदः ।
वदः वदः वदः वदः वदः ॥ ११

कथं त्वदुपलम्भाया विहताविह तादृशीं ।
अथवा नालमारोदुमङ्गनामङ्गनाशिनी ॥१२॥

ཁྱིད་ལ་ དམིགས་ བའི་རེ་བ་ རང་ །
 མ་བྲལ་ འདི་ལ་ རེ་འདྲ་ ཡི །
 བཀྲས་སྐབས་ ལུས་ནི་ འཇིག་བྱེད་བས །
 བྱད་མེད་ འཇོགས་ རྣས་ ཅི་ལྟར་མིན ༥ ༡༢

निगृह्य नेत्रे कर्षन्ति बालपल्लवशोभिना ।
 तरुणा तरुणान्कृष्टानलिनो नलिनोन्मुखाः ॥१३॥

ཡལ་འདབ་ གསར་བས་ མཇོས་བ་ཡི །
 ལྷོན་བས་ སྒངས་བའི་ བཞེན་ན་རྣམས །
 བརྒྱར་ མངོན་ བྱོགས་ བྱང་བ་ཡིས །
 མིག་ནས་ བརྒྱང་མྱེ་ འགྲུགས་བར་བྱེད ༥ ༡༣

विशदा विशदामत्तसारसे सारसे जले ।
 कुरुते कुरुतेनेयं हंसो मामन्तकामिषं ॥१४॥

ལྷོས་བའི་ བཞེན་ནི་ རབ་འཇུག་བ །
 རྒྱང་གི་ཆུ་ལ་ དཀར་བ་ཡི །

ངང་མོ་ འདི་ཡི་ ཅ་ཅོ་ ཡིས།

བདག་ནི་ མཐར་བྱེད་ཟས་སུ་བྱེད། ॥ १८

विषमं विषमन्वेति मदनं मदनन्दनः ।

सहेन्दुकलयापोढमलया मलयानिलः ॥१५॥

དི་བྲལ་ རྒྱ་བའི་ཆ་དག་ དང་།

ལྷན་ཅིག་ མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱང་།

བདག་ དགའ་མི་ བྱེད་འདོད་པ་ ནི།

མི་བཟད་དུག་གི་ རྗེས་སུ་འགོ། ॥ १८

मानिनी मानिनीषुस्ते निषङ्गत्वमनङ्ग मे ।

हारिणी हारिणी[38a]शर्म तनुतां तनुतां यतः ॥१६॥

བདག་ སྟེན་མི་འདོད་ ཁེངས་པ་ཅན།

དོ་ཤལ་དང་ལྷན་ འཕྲིག་བྱེད་མ།

ལུས་མེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ དང་པ་ ཉིད།

སྤྲ་གུར་ བདག་ འགོགས་ བདེ་རྒྱས་ མཛོད། ॥ १७

जयता त्वन्मुखेनास्मानकथं न कथं जितं ।

कमलं कमलकुर्वदलिमहलिमत्प्रिये ॥१७॥

ཐུང་གི་གཤོང་གིས་བདག་ལས་སྐྱལ་།

ཐུ་ཡི་སྐྱོན་གྱིས་བྱང་བ་ཅན་།

འདབ་ལྗན་བདུ་གཏམ་མེད་ལས་།

ཅི་ལྟར་མི་སྐྱལ་བདག་དགའ་ས ॥ १७

रमणी रमणीया मे पाटलापाटलांशुका ।

वारुणीवारुणीभूतसौगभा सौरभास्पदं ॥१८॥

ཉི་མའི་འོད་གིས་དམར་གྱིས་བཅི་།

ཐུ་ལྷ་མོ་བཞིན་བྱ་ཏ་ལ་།

དཀར་དམར་གོས་ཅན་རྩི་བཟངས་གནས་།

བདག་གི་དགའ་མ་དགའ་བར་བྱ ॥ १८

इति पादादियमकमव्यपेतं विकल्पितं ।

व्यपेतस्यापि वर्ण्यन्ते विकल्पास्तत्र केचन ॥१९॥

རི་ལྷ་ར་ ཀང་པའི་ ཐོག་མ་ཡི།
 རྒྱང་ལྷན་ པར་ཚོད་མེད་ ལྷ་རྟོག།
 ད་ནི་ པར་དུ་ཚོད་པ་ ཡི།
 ལྷ་རྟོག་ འགའ་ཡང་ པར་ལྷན་པར་བྱ། ༡༩

मधुरेणदृशां मानं मधुरेण सुगन्धिना ।
 सहकारोद्गमेनैव शब्दशेषं करिष्यति ॥२०॥

ས་ཏ་ཀླ་ར་ ལས་ འབྲུངས་ ཉིད།
 ཡིད་འོང་ རི་བཟངས་ལྷན་པ་ ཡིས།
 དབྱེད་གྱི་ ཡེ་ཤའི་ མིག་ཅན་གྱི།
 ཁེངས་པ་ སྒྲ་ཡི་ ལྷག་མར་བྱེད། ༢༠

करोऽतिताम्रो रामाणान्तन्त्रीताडनविभ्रमं ।
 करोति सेव्यं कान्ते वा भ्रवणोत्पलताडनं ॥२१॥

དགའ་མའི་ ལག་པ་ ཡིན་དུ་ དམར།
 གྱུད་མངས་ལ་ པར་ལྷན་ ལྷ་འབྲུལ་ལ།

ཕྱག་དོག་ ལྷན་ནས་ མཛེལ་བོ་ལའང་ ।

ན་བའི་ཨུའུ་གྱིས་ བསྐྱུན་བྱེད་ ॥ ४०

सकलापोल्लसनया कलापिन्याऽनुनृत्यते ।

मेघाली नर्त्तिता वातैः सकलापो विमुञ्चति ॥२२॥

རྒྱུང་གྱིས་ གར་ བསྐྱུར་ སྤྱིན་གྱི་ཕྱེང་ ।

མཐའ་དག་ ཏུ་ནི་ འཕྲོར་བར་བྱེད་ ।

དེ་ཆེས་ མཆུག་ མ་རབ་བསྐྱུང་བའི་ ।

མཆུག་སྒྲོ་ལྷན་པ་ གར་དག་བྱེད་ ॥ ४१

स्वयमेव गलन्मानकलि कामिनि[38b]ते मनः ।

कलिकामथ नीपस्य दृष्ट्वा कां नु स्पृहशेषां ॥२३॥

འདོད་ལྷན་ས་ དག་ ཁྱོད་ཀྱི་ ཡིད་ ।

ཁེངས་ཚེད་ རང་ཉིད་ ཉམས་འགྱུར་དེ་ ।

ནི་བའི་ཀ་ལི་ཀླ་ མཐོང་ན་ ।

གནས་སྐབས་ ཅི་ལ་ དེག་འགྱུར་རམ་ ॥ २३

आरुह्याक्रीडशैलस्य चन्द्रकान्तखलीमिमां ।
नृत्यत्येष लसन्सारुचन्द्रकान्तः शिखावलः ॥२४॥

छे'दगदि' री'यी'ल्ल'वे'द'गु' ।
घर'द'दि'ल'रि' द'द'गस' गु'र' र'स ।
ख'दे'द'स'ख'घर' ख'के'ग'दु' र'घ'ख'दे'स'घ'दि ।
ग'उ'ग'घ'द'उ'र' द'दि' ग'र'घु'द'दे' ॥ २८

उद्धृता राजकादुर्वी ध्रियतेद्य भुजेन ते ।
वराहेणोद्धृता यासौ वराहेरुपरि स्थिता ॥२५॥

ग'र'वि'ग' ल्लु'ल' ख'के'ग' घु'द' ग'र'स'घ'दि' ।
घ'ग'घ'स' ग'ल्ल'द'घ'दि' स' द'दि'रि' ।
गु'ल'घ'दि' के'ग'स' ल'स' र'घ'ल्ल'द'स' र'स ।
द'ल' घु'दे'गु' ल'ग'घ'स' ग'ल्ल'द' ॥ ३०

करेण ते रणेध्वन्तकरेण द्विषतां हताः ।
करेणवः क्षरद्गता भान्ति सन्ध्याघना इव ॥२६॥

གཡུལ་དུ་ དག་ཡི་ གླང་པོ་ནམས།
 བྱིད་ཀྱི་ ལག་པ་ མཐར་བྱེད་ཀྱིས།
 བསྐྱེན་པའི་བྲག་ ཞི་ རབ་ཟག་པ།
 བྱུན་མཚམས་དག་གི་ སྤྱིན་ བཞིན་ མཛེས། ॥ ༢༩

परागतरुजाजीव वातैर्ध्वस्ता भटेभ्यः ।
 परागतमिव कापि परागततमम्बरं ॥२७॥

རྒྱང་གིས་ རི་ཡི་ཤིང་སྤང་ བཞིན།
 བཞིན་གྱི་ སྤེ་ནི་ དཔའ་བོས་ བཅོམ།
 མཐར་ཞི་ བ་ཤེད་ མོང་བ་ བཞིན།
 རུལ་གྱིས་ ཉམ་མཁའ་ བྲབ་པར་བྱུང་ ॥ ༣༠

पातु वो भगवान्विष्णुः सदा नवघनद्युतिः ।
 स दानवकुलध्वंसी सदानवरदन्तिहा ॥२८॥

ལེགས་ལྷན་ ལུ་འཛིན་ གསར་པའི་འོད།
 ལྷ་མིན་དག་གི་རིགས་ཉམས་བྱེད།

ཆད་ལྷན་ སྒྲང་པོ་ མཆོག་ བཅོས་པ།

བྱབ་འཇུག་དེས་ བྱིད་ ཉག་ཏུ་ སྒྲངས། ॥ ༣༥

कमलेस्समकेशान्ते कमलेर्ष्याकरं मुखं ।

कमलेख्यं करोषि त्वं कमले[39a]वोन्मदिष्णुषु ॥२६॥

བྱིད་ཀྱི་མགོ་སྦྲ་བྱང་བ་འདྲ།

གཤོང་ནི་ བརྒྱར་ སྒྲག་དོག་བྱིད།

དཔལ་གྱིས་ བཞིན་ཏུ་ རབ་བྱོས་པ།

བྱིད་ཀྱིས་ སུ་ཞིག་ ཅི་མི་བྱིད། ॥ ༣༦

मुदा रमणमन्वीतमुदारमणिभूषणाः ।

मदभ्रमदृशः कर्तुमदभ्रजघनाः क्षमाः ॥३०॥

གྱ་ཆེ་ རིན་ཆེན་ གྱན་དང་ལྷན།

གྱགས་པས་ མིག་ འཁོར་ རོ་སྒྱ་ན།

ཆུང་བ་ མིན་པས་ མཇོང་པོ་ ཉི།

དགའ་བ་ལྷན་པ་ བྱ་བར་བཞོད། ॥ ༣༠

उदितैरन्यपुष्टानामास्तैर्मे हतं मनः ।
उदितैरपि ते दूति मास्तैरपि दक्षिणैः ॥३१॥

གཞན་གསོས་ནམས་ཀྱིས་ བསྐྱབས་པ་ དང་ ।
ཁྱོད་ཀྱི་ བཟོད་པའི་སྒྲ་ དང་ ཅི་ ।
ལྷོ་ཡི་ཕྱོགས་ཀྱི་ རྒྱང་གིས་ ཀྱང་ ।
བདག་ཡིད་ ཕྱོགས་སོ་ གོ་ཉ་སོ་ ॥ ३१

सुराजितहियो यूनां तनुमध्यासते स्त्रियः ।
तनुमध्या क्षरत्स्वेदसुराजितमुखेन्दवः ॥३२॥

སྒྲིད་པ་སྒྲ་ ཞིང་ རྩལ་ཟག་པས་ ।
གཏོང་གི་ཆེ་བ་ རབ་མཛོས་པའི་ ।
བྱད་མེད་ ཆང་གིས་ རོ་ཆ་ བཅོམ་ ।
སྒྲིས་པའི་ཁྱས་ལ་ འཛོགས་པར་བྱེད་ ॥ ३२

इति व्यपेतयमकप्रभेदोप्येष दर्शितः ।
अव्यपेतव्यपेतात्मा विकल्पोप्यस्ति तद्यथा ॥३३॥

དེ་ལྟར་ བར་ཚེད་ཟུང་ལྷན་གྱི།
 རབ་དུ་དབྱེ་བ་ འདི་ཡང་ བསྟན།
 བར་ཚེད་ མ་ཚེད་ བདག་ཉིད་གྱི།
 རྣམ་རྟོག་ ཀྱང་ ཡོད་ འདི་ལྟ་སྟེ ॥ ༣༣

सालं सालंबकलिकासालं सालं न वीक्षितुं ।
 नालीनालीनवकुलानालो नालीकिनीरपि ॥३४॥

ཀ་ལི་ཀྱ་ འཕྱང་ ཡལ་ག་ཅན་ །
 སྤ་ལ་ བལ་བར་ དེ་ མི་ནུས།
 བ་ཀྱ་ལར་ ཆགས་ བྱང་བ་ དང་ །
 བློགས་མོས་ བདྲ་ཅན་ ཡང་ མིན ॥ ༣༤

कालं कालमनालक्ष्यतारतारकमीक्षितुं ।
 तारतारम्यरसितं कालं कालमहाघनं ॥३५॥

མིན་ནག་ ཆེན་པོ་ལྷན་བའི་དུས།
 སྤང་དང་ སྒྲ་སྐར་ ཀྱན་ མི་མཆོན།

གསང་ འཕྲོར་ དགའ་བ་ གློགས་བྱེད་པ།

དུས་འདྲ་ སྤྲ་ཡིས་ བཟླ་བར་ནས ॥ ༣༥

याम यामत्रयाधीनायामया मरणं निशा ।

यामयाम धि[39b]याऽस्वत्याया मया मयितैव सा ॥३६॥

ཐུན་གསུམ་ དབང་གུར་ རེང་བ་ཡི།

སའྲན་མོ་ ཡིས་ནི་ བདག་གི་ཅིག།

གང་ལ་ བདག་ སང་ གློག་ གཟེར་ འགྲོ།

དེ་ནི་ གློ་མེད་ བདག་གིས་ བཅོམ་ ॥ ༣༦

इतिपादादियमकविकल्पस्येदृशी गतिः ।

एवमेव विकल्प्यानि यमकानीतराण्यपि ॥३७॥

ཅས་ཀྱང་ དང་པོ་ ཟུང་ཐུན་གྱི།

ནས་དྲོག་ ལྷགས་ནི་ འདི་འདྲ་ ལྟེ།

འདི་ལྟ་ ཁོ་ན་ ཟུང་ཐུན་གྱི།

ནས་དྲོག་ གཞན་པ་ ནས་ས་ ཀྱང་ངོ་ ॥ ༣༧

न प्रपञ्चभयाद्भेदाः कात्स्न्येनाख्यातुमीप्सिताः ।
दुष्करामिमता एव वर्ण्यन्ते तत्र केचन ॥३८॥

སྒྲོམ་པས་ འཛིགས་ གྱིར་ དགྲེ་བ་ནི །
མཐའ་དག་ བཟོད་པར་ མི་འདོད་དེ །
དེ་ལ་ བྱ་དགར་ མངོན་འདོད་ གང་ །
འགའ་ཞིག་དག་ནི་ བསྐྱན་པར་བྱ ॥ ३८

स्थिरायते यतेन्द्रियो न हीयते यतेर्भवान् ।
आमायतेयतेप्यभूत्सुखाय ते यते क्षयं ॥३९॥

བདན་ལྷན་ དབང་པོ་ རབ་བསྐྱམས་པ །
ཁྱིད་ནི་སྒྲོམ་བཙུན་ལས་མི་ཉམས །
སྒྲུ་མེད་ ཁྱིད་ཀྱི་ བདེ་ འཛིགས་པར །
མི་འགྱུར་ འདི་སྒྲིད་ ཆེད་དུ་འང་ འགྱུར ॥ ३९

समास्तु राज्ञस्तुराहतमुर्षीर्महीसुराणां वसुराजितः स्तुताः ।
न भास्तुरा यान्ति सुराञ्च तशुणाः प्रजास्तु रागात्मसु राशिता गताः ॥४०॥

གྲུལ་པོ་འདུན་སར་ས་ཡི་ལྷ་རྣམས་ དག་གྱི་ཞལ །
 ཆང་གིས་ས་བཅོས་ཅོར་གྱིས་ མཛེས་པས་རབ་བསྟོད་པའི །
 ཁྱིད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ རབ་གསལ་ཆགས་ བདག་སྤྱེ་དགུ་ལ །
 སང་པོ་ཉིད་གྲུར་ ལྷ་རྣམས་སུ་ ཉི་མི་འགྲོ་མིན ། ུཾ

तव प्रियासञ्चरित प्रमत्तया विभूषणं धार्यमिहांशुमत्तया ।
 रतोत्सवामोदविशेषमत्तया न मे फलं किञ्चन कान्तिमत्तया ॥४१॥

དས་པའི་སྟོད་ལ་བག་མེད་ཁྱིད་ཀྱི་དགའ་ས་ གང་ །
 དགའ་བའི་དགའ་སྟོན་དགའ་བས་ ཁྱད་པར་དུ་སྦྱོས་མ །
 དེ་ཡིས་ འདིར་ནི་འོད་ལྡན་ གྲུར་རྣམས་ གཟུང་བར་འོས །
 བདག་ལ་ མཛེས་ལྡན་ཉིད་ཀྱི་འབྲས་བུ་འགའ་ཡང་ཅིད ། ུཾ

भवाद्दशा नाथ न जानते न ते रसं विरुद्धे खलु[40a]सन्नतेन ते ।
 य एव क्षीनाः शिरसा नतेन ते चरन्त्यलं दैन्यरसेन तेन ते ॥४२॥

མགོན་པོ་ཁྱིད་ལྷས་དུད་པའི་ར་ནི་མི་མཁྱེན་དེ །
 དསན་པ་ཉིད་ དང་ མཆོག་ཉིད་ དག་ནི་ དེས་པར་འགལ །

གང་ཞིག་ རམན་པ་རྣམས་ མི་ བྱིད་ལ་མགོས་ འདྲད་ཅིང་ །

དེ་དག་ ཁོ་ན་དམན་པའི་རོ་ དེས་ མཆོག་ཏུ་ གྱུ་ ॥ ༧༡

लीलास्मितेन शुचिना मृदुनोदितेन व्यालोकितेन लघुना गुरुणा गतेन ।

व्याजृम्भिते न जघने न च दर्शितेन सा हन्ति तेन गलितं मम जीवितेन ॥४३॥

རོལ་པའི་འཇུ་མ་ དཀར་ དང་ མི་ འཇམ་པོར་སྦྲེ་བ་ དང་ །

ཆུང་ཐུང་ལྟ་བ་ དང་མི་ ལྷི་བའི་འགྲོ་བ་ དང་ །

ཀུན་ཏུ་གྲུལ་ དང་ རོ་ སྒྲ་ན་དག་ ལྷོན་པ་ དེས་ །

བསྐྱེན་པ་ དེས་ ན་ བདག་མི་ འཛོལ་ས་ དམན་པར་གྱུར་ ॥ ༧༢

अमीमानमानमरवर्त्मसमानमानमात्मानमानतजगत्प्रथमानमानं ।

भूमानमानमत यः स्थितिमानमान नामानमानमतमप्रतिमानमानं ॥४४॥

དབལ་ལྷན་ མི་ཤོང་ བདན་ལྷན་ གང་གིས་ བདག་ཉིད་མི་ །

འཆི་མེད་ལས་དང་ མཉམ་པའི་ཆད་ལྷན་ རབ་དྲུང་པའི་ །

འགྲོ་བ་སྐྱས་བྱེད་ མཆོད་ལྷན་ ཆད་མེད་ མིང་ཅན་མི་ །

འཇལ་བྱེད་ ཆད་མེད་ མང་པོ་ བཀོད་ལ་ ཕྱག་དག་མཛོད་ ། ༧༣

सारयन्तमुरसा रमयन्ती सारभूतमुदसारधरा त ।
सारसानुकृतसारसकाञ्ची सा रसायनमसारमवैति ॥४५॥

वत्तुद'ल' वृणस'दे' सुद'गीस' दग'अ'पुदे'उद' ।
स्त्रीद'प'द'गु'द'प'दे' वत्तुद'ख'द' र'व'दु'अ'ई'क' ।
ग'अ'क'ग्री'ई'स'अ'कु'द'स' स्त्री'द'अ'क' दू'अ'कु'द'उ'क' ।
दे'स' के' वत्तुद'अ'क' स्त्री'द'प'अ'दे'प'द'द'ग' ॥ ८४

नयानयालोचनयानयानया नयानयान्धान्विनयानयायते ।
न यानयासीर्जनयानयानया नयानयांस्तान् जनयानयाभितान् ॥४६॥

वद'क'कु'स'कु'ल'द'द' कु'ल'अ'क' वद'ग'प' अ'दे'अ'स'अ'क' ।
कु'ल'अ'दे' द'ग'प'दे'अ'व'स'अ'ल' अ'द'अ'स'अ' अ'स'अ'द'अ'गु'ल' ।
ग'अ'क'प'स'अ'अ'अ' कु'ल'अ'दे'अ'व'ग'अ'अ'द'ग'अ'स' ग'द' ।
कु'ल'अ'अ'अ'अ'अ'स' अ'व'अ' द'ग'अ' वद'क'अ'अ'अ' ॥ ८५

[40b]खेण भौमो ध्वजवर्त्तिवीखेखेजि संयत्यतुलास्त्रगौरवे ।
खेखेखेखेखेखे पुणे हरेखेखेत तुल्यं रिपुमस्य मेखे ॥४७॥

མཚུངས་མེད་ ལྷི་བའི་ མཚན་ལྟན་ གཡུལ་དུས་སྟེས་ནི།
 གྲུལ་མཚན་ལ་ གནས་ དབའ་བོ་ བྱ་ཡི་ སྒྲ་ཡིས་ བྲོས།
 ཉི་མ་ བཞིན་དུ་ བཟིན་བའི་ འཕྲོག་བྱེད་ འདི་མདུན་དུ།
 འཛིགས་རུང་ གཡུལ་ ལ་ དག་ནི་ལུག་དང་མཚུངས་པར་རིག། ༡༧

मयामयालभ्यकलामयामयामयामयातव्यविरामयामया ।
 मयामयासिं निशयाऽमयामयामयामयामूं कुरुणामयामया ॥४८॥

མཚན་མེ་ ཚད་མེད་ བྱན་ལྟན་ དབའ་མེད་ ཚད་མེད་ཅིང་།
 མཐར་ ཉི་ བསྟོད་བྱ་ མིན་པ་ ཟད་ནད་ལ་ བཏེན་པ།
 ཏ་ཡི་ རང་བཞིན་ ཉད་ཅན་ འབྲུལ་བའི་ ཉད་ཀྱིས་ གཟེར།
 སྒལ་ལྟན་མ་ འདི་ ལྷིང་ཟེའི་རང་བཞིན་ འབྲུལ་མེད་ མཛོད། ༡༨

मतां धुनानां रमतामकामतामतापलब्धाग्रिमतानुलोमता ।
 मतावयत्युत्तमता विलोमतामताम्यतस्ते समता नवामता ॥४९॥

ལང་མེད་ བྱིད་ཀྱི་ སྒྲོ་ལ་ མཉམ་ ཉིད་ བསྟོག་པ་ ཉིད།
 མ་ཡིན་ སྒྲ་མེད་ ཟེས་སུ་ མི་མཐུན་ འགྲོ་མ་ ཡིན།

उपोढरागाप्यबला मदेन सा मदेनसा मन्युरसेन योजिता ।
न योजितात्मानमनङ्गतापिता गतापि तापाय ममास नेयते ॥५२॥

सुखं वदं कृत्वा च भवेत्तु यद्विदुः ।
वदन्ति च भवेत्तु यद्विदुः ।
वदन्ति च भवेत्तु यद्विदुः ।
वदन्ति च भवेत्तु यद्विदुः ॥ ५३

अथाभ्यासः समुद्रः स्यादस्य मेदाख्यो मताः ।
पादाभ्यासोप्यनेकात्मा व्यज्यते स निदर्शनैः ॥५३॥

युद्धं च यद्विदुः ।
यद्विदुः यद्विदुः ।
यद्विदुः यद्विदुः ।
यद्विदुः यद्विदुः ॥ ५३

नास्थेयः सत्त्वया वर्ज्यः परमायतमानया ।
नास्थेयः स त्वया वर्ज्यः परमायतमानया ॥५४॥

སྒྲིམ་བྱ་ བདན་ གང་ སྒྲིང་སྒྲོབས་ཅན།
 ཁེངས་པ་ རབ་སྤངས་ སྤང་བྱ་ རེ།
 ཁྱེད་ཀྱིས་ མཆོག་ཏུ་ འབད་པ་ ཡིས།
 ཡིད་བདན་བྱའི་ མི་བདན་མ། ॥ ༡༥

नरा जिता माननया समेत्य न राजिता माननयासमेत्य ।
 विनाशिता वै भवतापनेन विनाशिता वैभवतापनेन ॥५५॥

ཁྱེད་ཀྱི་ བགྲོད་པ་ ཁུབ་བདག་ གཟི་བྱིན་གྱིས།
 ཡང་ཡང་ རབ་སྤྱར་ མཆོས་པ་ མེད་པ་ཡི།
 མི་རྣམས་ རྩལ་དང་ ང་ཀྱལ་ ཉམས་བྱས་ནས།
 གདུང་ ཞིང་ ཀྱི་མ་ བྱས་ཆོས་ རྣམ་པར་བཅོམ། ॥ ༡༦

कलापिनां चारुतयोपयान्ति वृन्दानि लापोढघनागमानां ।
 वृन्दानिलापोढघनागमानां कलापिनां चारुतयोऽप[4]b]यान्ति ॥५६॥

སྒྲིན་བགྲོད་ དབྱར་སྒྲིམ་ མི་བྱའི་ཆོགས་རྣམས་ རེ།
 དགའ་བའི་སྒྲིམ་ མཆོས་པ་ ཐོབ་པར་བྱར།

རྒྱུང་གི་ཚོགས་ ལྷག་ བྲལ་བས་ རྒྱུང་སྒྲོགས་ཀྱི།
 ཚོགས་རྣམས་ སྒྲ་དང་བྲལ་བ་ ཉིད་དུ་ བྱུང་ ॥ ༡༩

न मन्द्याऽवर्जितमानसात्मया नमन्द्याऽवर्जितमानसात्मया ।
 उरस्युपास्तीण्णेपयोधरद्वयं मया समालिङ्ग्यत जीवितेश्वरः ॥५७॥

འཚོ་བའི་དབང་ཕྱུག་ འདུད་བའི་ཡོད་ཀྱིས་ ཁོ་མོ་ནི།
 དམན་ཞིང་ ཁེངས་པ་ ཇེས་པར་བསྐྱབས་པའི་དབང་བྱུང་མ།
 བཙེ་བ་ སྒྲངས་པས་ བདག་ཉིད་ བྲང་གི་འོ་མ་འཛིན།
 གཉིས་པོ་ ཉི་བར་གདད་ནས་ ཀྱན་དུ་མ་འབྱུང་འོ། ॥ ༢༠

सभा सुराणामबला विभूषिता गुणैस्तवारोहि मृणालनिर्मलैः ।
 स भासुराणामबला विभूषिता विहारयन्निर्विश सम्पदः पुराम् ॥५८॥

སྒྲ་རྣམས་ འདུན་ས་ ལྷོབས་མེད་བྱུང་བདག་གནས་པ་ན།
 ཁྱོད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ བད་ཅ་ ཇི་མ་མེད་པས་ འཛོགས།
 དེ་ནི་ འོད་འབར་ བྱོང་བཟང་རྣམས་ཀྱི་ ཕན་སུམ་ཚོགས།
 བསྐྱེད་པའི་ བྱད་མེད་རྣམས་ དང་ རྣམ་པར་ཅེ་ཞིང་སྒྲོད་ ॥ ༢༡

कलङ्कुमुक्तं तनुमध्यनामिका स्तनद्वयो च तद्वते न हन्त्यतः ।
न याति भूतङ्गणेन भवन्मुखे कलङ्कुमुक्तं तनुमध्यनामिका ॥५६॥

।'स'स्त्र'द' लु'स'क्षे'द'द' कु'ग'क्ष'स'स' ।
स्रि'द'ल'स' ग'क्ष'द' सु'क्षि'ग' स'व'क्ष'स' द'य'स्रि' ।
द'स्र'द' लु'स'क्ष' सु'क्ष'ल'स'स्रि'द'स' स्रि'द'ल'स'स' ।
स'स्र'द'स' ल' स' स'स'स' स'स'द'स'स'स'स' ॥ ५७

यशश्च ते दिक्षु रजश्च सैनिका वितन्वतेऽजोपम दंशिता युधा ।
वितन्वतेजोपमदं शितायुधा द्विषां च कुर्वन्ति कुलन्तरस्त्रिनः ॥६०॥

स्र'द'ल'स' स'स' स्रि'द'ल'स'स'स'स' स'स'स'स' ।
स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स' ।
स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स' ।
स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स'स' ॥ ६०

विभर्त्ति भूमेर्वलयं भुजेन [42a] ते भुजंगमोमा स्मरतो मदञ्जितं ।
भृणूक्तमेकं स्वयमेत्य भृधरं भुजंगमो मा स्म रतो मदञ्जितं ॥६१॥

བློ་ལྡན་ བདག་ལ་ གན་པའི་ཆོག་ གཅིག་ གསན་པར་སངོད་ །
 ཁྱོད་ཀྱི་ ལག་པ་ དཔལ་ དང་ ལྷན་ཅིག་ ལག་འགྲོ་ཡིས་ །
 ས་ཡི་དཀྱིལ་འཁོར་ རྣམ་འཛིན་ དེ་གྱིར་ ས་གཞི་འཛིན་ །
 རང་ལག་ རིག་ནས་ རྒྱགས་པ་ རྒྱས་པར་ ཡོངས་ས་བྱེད་ ॥ ༤༡

स्मरानलोमानविवर्धितो यः स निर्वृतिं ते किमपाकरोति ।
 समन्ततस्तामरसेक्षणे न समन्ततस्तामरसे क्षणेन ॥६२॥

འདོད་པའི་ མི་གང་ ཁེངས་པས་ རབ་བསྐྱབས་པ་ །
 ལྷན་ཅིག་དང་སཉམ་རྒྱས་དེས་ བསྐྱའི་མིག་ །
 རོ་མེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ བདེ་བ་ དེ་དག་ མི་ །
 ཀྱན་ནས་ ཉམས་པ་ ཉིད་དུ་ ཅིས་མི་བྱེད་ ॥ ༤༢

प्रभावतो नामन वासवस्य प्रभावतो नाम नवासवस्य ।
 प्रभावतो नाम न वा सवस्य बिच्छित्तिरासोत्त्वयि पिष्टपस्य ॥६३॥

མ་དུད་ ཁྱོད་ནི་ འཛིག་རྟེན་ བདག་གྱུར་ ཆོ་ །
 མཐུ་ཡེས་ མཐུ་ལྡན་ རོར་ཅན་ འདུད་བྱེད་པ་ །

དེ་ཕྱིར་གསར་བའི་བདུང་ལྷན་མཆོད་སྦྱིན་ནི།
 དེས་བཞིན་དུ་ཆད་པར་མ་གཏུང་རོ། ॥ ༤༢

परम्पराया बलवा रणानां धूलीषिलीव्योन्नि विधाय रुन्धन् ।
 परम्पराया बलवारणानां परम्परायाबलवारणानां ॥६४॥

དབུང་གི་སྒྲང་པོ་རྣམས་ནི་གཞན་དང་གཞན།
 སྦྱོབས་ལྷན་སྒྲོགས་རབ་དུ་བརྒྱད་པ་ཡིས།
 ཐང་ལ་དུལ་བསྐྱབས་ནས་མཁའ་འགོག་བྱེད་ཅིང་།
 གཡུལ་གྱི་སྦྱོབས་བརྒྲོག་མཆོག་དང་གཞན་ལ་ཀླག། ॥ ༤༣

न श्रद्धये वाचमलज्ज मिथ्या भवद्विधानामसमाहितानां ।
 भवद्विधानामसमाहितानां भवद्विधानामसमाहितानां ॥६५॥

ཁྱེད་ལྷ་མཉམ་པར་མ་བཞག་སྤྱིད་པར་ནི།
 རྣམ་གཉིས་མི་མཉམ་པན་པ་མེད་རྣམས་ཆོག།
 འོག་པར་གཏུང་བ་སྐྱབ་བྱེད་མི་མཉམ་པ།
 སྐྱལ་བགོད་མཚུངས་ལ་མི་དད་ངོ་ཚ་མེད། ॥ ༤༤

सन्नाहितोमानमराजसे[42b]न सन्नाहितोमानम राजसे न ।
सन्नाहितो मानम राजसेन सन्ना हितोमानमराजसेन ॥ ६६ ॥

དག་ཡི་ མཛོས་ འཛོས་ རྒྱལ་པོ་འེ་སྡེ་ཡིས་བདུད །
ཡམ་མས་ ཡན་པ་ དབལ་ལྷ་ མེད་མིན་སྡེ །
མི་འདུད་ གོ་བགོས་ མཚོད་ཐོབ་ རྒྱལ་མེད་པ །
སྡེས་མཚོག་ རྗེ་བོ་དམ་པ་ མི་མཛོས་མིན ॥ ५६

सहृद्विस्त्रिभ्य योऽभ्यासः पादस्यैवं प्रदर्शितः ।
श्लोकद्वयन्तु युक्तार्थं श्लोकाभ्यासः स्मृतो यथा ॥ ६७ ॥

དེ་ལྟར་ ཀང་པ་ ལན་གཅིག་དང་ །
གཉིས་དང་ གསུམ་ ཡང་ བརྒྱས་པ་ བཟུན །
ཆོགས་བཅད་ གཉིས་དང་ལྷན་པའི་དོན །
ཆོགས་བཅད་ བརྒྱས་པ་ ཡིན་ཏེ་ དཔེར ॥ ५७

विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना ।
स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वीयमनुलाश्रिता ॥६८॥

ལྷམ་ཞིང་ ལྷམ་པའི་ ལག་པ་ཅན་ ।
 ལྷམ་མིན་ རབ་ད་འཛོམས་བྱེད་པ་ ।
 རྣམ་འཛིན་ ཁྱོད་ཀྱི་ བསྟན་པ་ཡི་ ।
 མི་མཚུངས་ ས་ འདི་ འཛིགས་པ་མེད་ ॥ ༤༤

विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना ।
 स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वी यमतुलाश्रिता ॥६६॥

འཛིན་པ་ དག་ དང་ བྲལ་བྱུང་ཅིང་ ।
 ལག་པ་ ལྷམ་ཁང་ ཉེ་བྱུང་པ་ ।
 རབ་ལྷམ་ཀྱིས་ བདང་ དག་ཡིས་ནི་ ।
 མི་མཚུངས་ ས་ འདི་ མཛོན་པར་བསྟན་ ॥ ༤༥

एकाकारचतुष्पादं यन्महायमकाङ्क्ष्यं ।
 तस्यापि दृश्यतेऽभ्यासः सा परा यमकक्रिया ॥७०॥

ཀྱང་བཞི་ རྣམ་པ་ གཅིག་པ་ གང་ ।
 རྒྱང་ལྷན་ ཆེན་པོར་ བཞེད་པ་ ཡིན་ ।

དེ་ལ་འང་ བཟླས་པ་ མཐོང་མྱེ་ དེ །
 ཟུང་ལྷན་ བྱ་བ་ གཞན་ ཡིན་ནོ ॥ ༧༠

समानयास मानया समानयासमानया ।
 समानया समानया समान या समानया ॥७१॥

མཉམ་མེད་ དཔལ་ལྷན་ མཚུངས་མེད་མ །
 ཁེངས་ལྷན་ ངལ་བ་ དག་དང་ནི །
 ཁེངས་པ་མཉམ་ལྷན་ ཚུལ་མིན་དག །
 རོར་བའི་ཚད་འདིས་ འགྲོགས་སྤྱུ་རྒྱལ་ ॥ ༧༡

घराघराकारघरा घराभुजां भुजा महीं पा[43a]तुमहीनविक्रमाः ।
 क्रमात्सहन्ते सहसा हतारयो रयोद्धुरा मानघुरावलम्बिनः ॥७२॥

འཛིན་མ་ འཛིན་པའི་རྣམ་འཛིན་ འཛིན་མ་སྤྱོད་རྣམས་ཀྱི །
 ལག་པ་རྣམ་གཞོན་ མི་དམན་ འཕྲལ་ལ་ དག་འཛོམས་པ །
 སྤྱུར་བ་དང་ལྷན་ མཚོན་པའི་ ཁྱུར་ནི་ བཟླུན་པ་ ཡིས །
 ས་གཞི་ དག་ནི་རིམ་བས་ བསྐྱང་བར་ བཟོན་ པ་ཡིན ॥ ༧༢

आवृत्तिः प्रतिलोम्येन पादार्धश्लोकगोचरा ।
यमकं प्रतिलोमत्वात् प्रतिलोममिति स्मृतं ॥७३॥

ཀང་ཕྱེད་ རྟོགས་བཅད་ སྟོད་ལུལ་ཅན །
ལུགས་ལས་ བརྟོག་བ་ བསྟར་བ་ ཅི །
རྩང་ལྷན་ ལུགས་ལས་ བརྟོག་བའི་ཕྱིར །
ལུགས་ལས་ བརྟོག་བ་ ཞེས་བར་ བཤད ༥ ७३

या मताश कृतायासा सायाता कृशता मथा ।
रमणारकता तेऽस्तु स्तुतेताकरणामर ॥७४॥

གང་ལ་ འབད་བྱས་ ལ་མོ་ ཉིད །
དེ་ནི་ བདག་གིས་ ཐོབ་ མཛའ་བ །
རོ་འདོད་མེད་པས་ ཕྱེད་མེད་ལྟ །
བསྟོད་བ་ ཐོབ་ ཁྱོད་ འགྲོ་བྱུར་ཅིག ༥ ७४

नादिनोऽमदनाधी स्वा न मे काचन कामिता ।
तामिका न च कामेन स्वाधीनादमनोदिना ॥७५॥

རྒྱ་ད་ལྷན་ བདག་ རང་གི་ རྫོང་།
 རྫོང་མིན་ འདྲི་བ་ འགའ་ ཡང་མེད་ །
 དུལ་བ་ འཛེམས་པའི་ འདྲི་བ་ ཡིས་ །
 རང་དབང་ གཏུང་བ་ དག་ཀྱང་ མེད་ ॥ ༧༥

यानमानय माराविकशो नानजनासना ।
 यामुदारशताधीनामायामयमनादि सा ॥७६॥

ཡིད་འགོ་ བདུད་རྫོང་ ལྷག་མི་དྲམན་ །
 གང་ཞིག་ དབང་གུར་ རྫོང་པོ་ འཛེམས་ །
 གང་ལ་ བདག་སོང་ རྫོང་པོ་ བརྒྱའི་ །
 དབང་གུར་ དེ་ལ་ རྩོན་ ཞེས་ རྫུས་ ॥ ༧༦

सा दिनामयमायामा नाधीता शरदामुया ।
 नासनाजनना शोकविरामायनमानया ॥७७॥

རྩོན་ འདྲི་ ཡིས་ནི་ གཟུང་གུར་ཅང་
 རྩོན་མི་ ཤེས་མ་ དེ་ཡིས་ ཅི་ །

ཉིན་མེདི་ ནང་དག་ མ་ཐོབ་ མེན །

བྱ་ངན་ འབྲེལ་ སྤྲད་ ཁེངས་མ་བྱེད ༥ ༡༡

वर्णानामेकरूपत्वं यद्येकान्तरमर्थ[43b]योः ।

गोमूत्रिकेति तत्प्राहुर्दृष्करं तद्विदो यथा ॥७८॥

གཡ་དེ་ བྱེད་ ཀྱེ་ཡི་གེ་ རྣམས །

གཅིག་གིས་ བར་ཚོད་ གཟུགས་གཅིག་ཉིད །

དེ་ནི་ བྱ་དྭགས་ དེ་ཉིད་ རིག །

བ་ལང་ གཅིན་ ཞེས་ སྤྲ་ སྤེ་ དཔེར ༥ ༡༢

मदनो मदिराक्षीणामपाङ्गाखोजये दयं ।

मदेनो यदि तत् क्षोणमनङ्गायाञ्जलिं दधे ॥७९॥

ཆང་འདྲའི་ མིག་ལྡན་ ཟུར་མིག་གི །

མཚོན་ གྱིས་ འདོད་བ་ འདི་གྲུལ་ དེ །

གཡ་དེ་ བདག་ཀྱང་ སྤྲིག་ཟད་ ན །

འདོད་བ་ ལ་ནི་ ཐལ་མོ་ སྦྱར ༥ ༡༣

आहुरर्धभ्रमं नाम श्लोकार्धभ्रमणं यदि ।
तदिष्टं सर्वतोभद्रं भ्रमणं यदि सर्वतः ॥८०॥

གཡ་དེ་ རྟོགས་བཅད་ ཟུང་ འཁོར་ན།
ཟུང་དུ་ འཁོར་བ་ ཞེས་པར་ བརྗེད།
གཡ་དེ་ ཀུན་དུ་ འཁོར་བ་ན།
ཀུན་དུ་བཟང་པོ་ ཞེས་པར་ འདོད། ॥ ༨༠

मनोभव तवानीकं नोदया य न मानिनी ।
भयादमेयामामावावयमेनोमया न ते ॥८१॥

ས་དུད་ ཡོད་བྱུང་ ཁྱེད་ དར་ ཟུར་
སྡེ་ནི་ ཁྱེད་སྡེ་ནི་ ས་ཡིན་ མིན།
ཡང་ན་ ཚད་ དཔག་མེད་ ཉད་ཀྱི།
འཛིགས་ ལས་ བདག་ཅག་ སྡིག་པའི་དངོས། ॥ ༨༡

सामायामामायामासामारानायानारामा ।
यानावाराराधानायामायारामामारायामा ॥८२॥

ནད་རིང་མིན་པའི་དགའ་ས་གང་།
 བདུད་བརྒྱར་ས་ལྗང་བཤོད་བརྒྱུག་ས།
 ལྷ་མེད་ལྷོབས་ལྷན་སྐྱུ་གནས་ཏི།
 ལྷ་དང་ལྷན་ཅིག་འཆི་སྤྲད་དུའོ། ༥༩

यः स्वरस्थानवर्णानां नियमो दुष्करेष्वसौ ।
 इष्टश्चतुःप्रभृत्येष दृश्यते सुकरः परः ॥८३॥

དབྱངས་དང་གནས་དང་ཡི་གེ་རྣམས་།
 ཇིས་པ་གང་འདི་བྱ་དགའ་ལ།
 བཞི་ལ་སོགས་པ་རབ་བསྟན་འདི།
 བཞུག་ནི་བྱ་སྤྲ་དག་ཏུ་འདོད་། ༥༩

आम्नायानामाहान्त्या वाग्गीतीरोतीर्भीतीः प्रीतीः ।
 भोगो रोगो मोदो मोहो ध्येये धेच्छे देशे क्षेमे ॥८४॥

རིག་བྱེད་རྣམས་མཐར་སྤྲས་པའི་ཆོག་།
 ལྷ་དང་ཡམས་ནད་འཇིགས་དགའ་ཡིས་།

ལོངས་སྤྱོད་ ཉན་དང་ དགའ་དང་ མོངས་ །
 དག་བའི་ ཡུལ་དྲ་ སེམས་ འདོད་རྩེང་ -- ' --

क्षितिर्विजितिषितिर्विहिति [44a]व्रतरतयः परगतयः ।
 उरु रुधुर्गुरु दुधुबुः स्वमरिकुलं युधि कुरवः ॥८५॥

ས་ལས་ རྣམ་རྒྱལ་ བདམ་པ་ སྐྱབ་བྱེད་པའི་ །
 བདུལ་ཞུགས་ལ་དགའ་ མཆོག་ རྟོགས་ ཀྱ་རྩ་བས་ །
 གཡུལ་དུ་ རང་གི་ དག་ཡི་ རིགས་རྣམས་ནི་ །
 ཆེ་བར་ བཀག་ཅིང་ ལྷི་བར་ འདར་བར་བྱས་ ॥ ८५

श्रीदीप्ति ह्रीकीर्ती धीनीती गीःप्रीतीः ।
 पथेते द्वे द्वे ते ये नेमे देवेशे ॥८६॥

དཔལ་གཟི་ རོ་ཆ་ གྲགས་ དང་ །
 སྒོ་ལྷགས་ ཆོག་ དང་ དགའ་དག །
 བྱོད་ལ་ འཕེལ་བ་ གཉིས་གང་ །
 འདི་གཉིས་ ལྷ་དབང་ལ་ མེད་ ॥ ८६

सामायामामाया मासा मारनायायानारामा ।

यानावारारावानाया माया रामा मारायामा ॥८७॥

ནད་རིང་ མིན་པའི་ དགའ་ མ་གང་ ।

བདུད་ཀྱང་ མ་ལྡང་ བཤོད་ བཞེག་མ།

སྒྲ་མེད་ ལྷོབས་ལྷན་ སྒྲ་གནས་ཏེ།

ཁྲི་དང་ ལྷན་ཅིག་ འཆི་སྤྲད་དུའོ ॥ ८७

नयनानन्दजनने नक्षत्रगणशालिनि ।

अघने गगने दृष्टिरङ्गने दीयतां सकृत् ॥८८॥

འདྲེན་བྱེད་ ཀྱན་དགའ་ སྤྲེད་བྱེད་མ།

ཀྱུ་སྒར་ཚྲོགས་ནམས་དག་གི་གནས།

སྤྲིན་མེད་ མཁའ་ལ་ ལུས་ཅན་མ།

ལན་ཅིག་ མིག་ནི་ སྤྲིན་པར་མཛོད་ ॥ ८८

अलिनीलालकलतं कम्प हन्ति घनस्तनि ।

आननं नलिनच्छायनयनं शशिकान्ति ते ॥८९॥

ཉ་ལྷག་ ཁྱིད་ གདོང་ལན་བྱ་ཡི།
 འཁྱི་ཤིང་ བྱང་བ་ ལྷར་ སྤྱོ་ཞིང་།
 འདྲན་བྱེད་ བསྐྱའི་གཟུགས་ བརྟན་ཅན།
 རྒྱ་ལྷར་ མཛེས་བས་ སུ་ མ་བཅོམ། ॥ ༥༧

अनङ्गलङ्घनालम्बनानातङ्गु सदङ्गना ।
 सदानघ सदानन्दनताङ्गासङ्गसङ्गतः ॥६०॥

དག་དྲུ་ སྤྱིག་མེད་ ཀྱན་དགའ་ མཛོག།
 ལུས་ དུད་དག་ དང་ འགྲོགས་ལ་ ཆགས།
 བཅུན་མོ་ ལུས་མེད་ཀྱིས་ འགོངས་དེ།
 འཛིགས་པ་ དུ་མས་ དེག་པར་གྱུར། ॥ ༥༩

अगा गाङ्गाङ्गकाकाकगाहकाऽधककाकहा ।
 अहा[44b]हाङ्ग स्वगाङ्गागकङ्कागखगकाक ॥६१॥

དུ་དྲུ་མི་ སྤྱོགས་ མཁའ་ འགྲོས་ མཛོན།
 རི་འགྲོ་ དབང་ འཁྱོག་ལྷན་ མ་ཆགས།

འབྲོག་ རྒྱོགས་ བདུ་འེ་ ལུང་འཇུག་ རྟིག །

བྱ་རྒྱུ་ རྒྱུ་ལ་ མཐོང་རྒྱུ་ རྒྱུ་ ॥ ༣༩

रे रे रोरुरुरोरुगागोगोऽगांगगोऽगगुः ।

किङ्केकाकुकः काको मामा मामम मामम ॥६२॥

ཀྱེ་ཀྱེ་ བུ་ལོགས་ ཅ་ཅའི་ བང་།

འཛེམས་ སྒྲིག་ ཡི་ ཡི་ རུ་ འཕྲོ་

ང་ཅན་མ་ རེང་ བདག་གི་བ །

བྱ་རྟེན་ མ་བྱའི་ ལྷ་ལྷན་ཅི ॥ ༢༥

देवानां नन्दनो देवो नोदनो वेदनिन्दिनः ।

दिवं दुदाव नादेन दाने दानवनन्दिनः ॥६३॥

ལྷ་རྣམས་ དགའ་བར་བྱེད་པའི་ ལྷ། .

རིག་བྱེད་ལ་ མྱོད་ འགོག་པ་པོས།

ལྷ་མིན་ དགའ་བྱེད་ བཅོམ་པ་ན།

སྐྱ་ཡིས་ མཐོ་ངིས་ འབྲུག་པ་པར་གྱུར་ ॥ ༧༩

सूरिः सुरासुरासारिसारः सारससारसाः ।
ससार सरसीः सीरी ससूरुः स सुरारसी ॥६४॥

མཁས་པ་ ལྷ་ དང་ ལྷ་མིན་ལ།
འགྲོ་ སྟོབས་ལྷན་པའི་ སྤྱིན་ལེགས་ཅན།
ཅང་གི་རོ་ལྷན་ གཤེལ་འཛིན་ དེ།
བཞད་ཀྱི་སྐྱ་ལྷན་ མཚོ་རུ་ རྫོང་ ॥ ༦༥

नूनं नुन्नानि नानेन नाननेनाननानि नः ।
नानेना ननु नानूनेनैनैनानानिनो निनीः ॥६५॥

འདི་ཡིས་ བདག་ཅག་རྣམས་ཀྱི་ བཞིན།
བཞིན་གྱིས་ དེས་པར་ མ་ བཅོམ་ མིན།
བདག་སྟོག་ མི་དཔན་ འདི་དང་ སྟོར།
རྩེ་པོ་ སྐྱེས་མིན་ རྩིག་ཅན་ དེས། ॥ ༦༦

इति दुष्करमार्गेऽपि किञ्चिदादर्शितः क्रमः ।
प्रहेलिकाप्रकाराणां पुनरुद्दिश्यते गतिः ॥६६॥

རི་ལྷ་ར་ བྱ་ རྟའི་ལམ་ལ་ ཡང་ །
 རིས་པ་ རྩང་ཟད་ ཀྱན་ཏུ་ བཟུན་ །
 བཟ་ཆོག་དག་གི་ རྣམ་པ་ ཡི་ །
 ལྷགས་ ཀྱང་ རབ་ཏུ་བཟུན་པར་བྱ་ ॥ ༢༩

क्रीडागोष्ठीविनोदेषु तज्ज्ञैराकीर्णमन्त्रणे ।
 परव्यामोहने चापि सोपयोगाः प्रहेलिकाः ॥६७॥

རྩད་མེདི་ འདུན་ སར་ བཞད་གང་དང་ །
 དེ་ཤེས་ ཆོགས་སུ་ བསང་ སྤྱོད་ དང་ །
 པ་རེལ་ ཀྱན་ཏུ་ མེངས་བྱེད་ལ་ །
 བཟ་ཆོག་དག་ རི་ ཉེར་མཁོ་ལྷན་ ॥ ༣༠

आहुः समागतां नाम गूढार्थां पदसन्धिना ।
 वञ्चि[45a]ताऽन्यत्र रुढेन यत्र शब्देन वञ्चना ॥६८॥

ཆོག་མཚསས་ སྤྱར་བས་ དོན་སྤྲས་པ་ །
 ཀྱན་ཏུ་ ཆོགས་པ་ ཞེས་པར་ བཟྱེད་ །

གཞན་ལ་ བྲགས་པའི་སྒྲ་དག་གིས།

གང་དུ་ བསྐྱ་བ་ སྒྲ་བྱེད་ཉིད། ॥ ༩༥

व्युत्क्रान्तातिव्यवहितप्रयोगान्मोहकारिणी ।

सा स्यात्प्रमुषिता यस्यां दुर्बोधार्था पदावली ॥६६॥

སྒྲོར་བ་ གིན་དུ་ འབྲུགས་པ་ ཡིས།

སྒྲོངས་བྱེད་ རིས་པ་ བྲལ་བ་ ལྟེ།

གང་ལ་ རོན་ རྟོགས་ དཀའ་བ་ ཡི།

ཆོག་སྤང་ རེ་ནི་ རབ་བཅོས་ཡིན། ॥ ༩༦

समानरूपा गौणार्थारोपितैर्ग्रथिता पदैः ।

पठया लक्षणास्तित्वमात्रव्युत्पादितश्रुतिः ॥१००॥

བདགས་པའི་རོན་ བཞེད་ ཆོག་དག་གིས།

བསྐྱེབས་པ་དག་ནི་ མཐུན་པའི་གཟུགས།

མཚན་ཉིད་ ཡོད་ཅས་ རེས་ཆོག་ དང་།

ལྡན་པའི་ཆོག་ བེ་ རྒྱབ་སྐོང་། ॥ ༡༠༠

संख्याता नाम संख्यानं यत्र व्यामोहकारणं ।

अन्यथा भासते यत्र वाक्यार्थः सा प्रकल्पिता ॥१०१॥

གང་དུ་ བྱངས་ཀྱིས་ ཀུན་སྤངས་པར །

བྱེད་པ་ གངས་ཉིད་ ཅེས་བྱ་ཏེ།

གང་དུ་ རག་དོན་ རྣམ་པ་ གཞན་ །

སྐུང་བ་ རེ་ནི་ རབ་བཏྲགས་ཉིད ॥ ༡༡

सा नामान्तरिता यस्यां नाम्नि नानार्थकल्पना ।

निवृत्ता निवृत्तान्यार्था तुल्यधर्मस्पृशा गिरा । १०२॥

གང་དུ་ མིང་ལ་ སྐ་ཚེགས་ དོན །

བདག་པུ་ དེ་ མིང་དུ་ རྟུམ་པ་ཉིད།

རྟོག་ནི་ རྟོས་ བརྒྱུངས་ལ་ རིག་པས །

དེཅ་ གཞན་ བསྐྱེདས་པ་ བསྐྱེདས་པ་ལེ ༥ ༡༣

समानशब्दोपन्यस्तशब्दपर्यायसाधिता ।

संमूढा नाम या साक्षान्निर्दिष्टार्थापि मूढये ॥१०३॥

རྣམ་གྲངས་ སྒྲ་ནི་ བཀོད་པ་ ཡིས།
 བསྐྱབས་པ་དག་ནི་ མཐུན་པའི་སྒྲ།
 བཤ་ཞིག་ མངོན་སུམ་ རོན་བཟུན་ ཡང་།
 མྱོངས་ ལྷིང་ དེ་ནི་ མྱོངས་ ཞེས་བྱ། ༥༠༣

योगमालात्मकज्ञानं यस्याः सा परिहारिकी ।
 एकच्छन्नाश्रित व्यज्य यस्यामाश्रयगोपनं ॥१०४॥

བཤ་ལ་ སྒྲོང་མྱོང་ བདག་ཉིད་ཅན།
 དེ་ནི་ ཡོངས་སུ་འབྲོག་ ཅས་ བྱ།
 བཤ་དུ་ ཉིན་ནི་ སྒྲས་བྱས་དེ།
 བདེན་པ་ བསལ་པ་ བཞིག་ བསྐྱབས་པའོ། ༥༠༤

[45b]सा भवेदुभयच्छन्ना यस्यामुभयगोपनं ।
 र्सकीर्णा नाम सा यस्यां नानालक्षणसंकरः ॥१०५॥

བཤ་དུ་ བཞིག་ སྒྲས་བྱུང་པ།
 དེ་ནི་ བཞིག་ བསྐྱབས་པའོ།

གང་ལ་ མཚན་ཉིད་ སྒྲ་ཚོགས་, འདྲེས །

དེ་ནི་ ཡོངས་སུ་འདྲེས་ ཞེས་བྱ ། ༡༠༣

एताः षोडश निर्दिष्टाः पूर्वाचार्यैः प्रहेलिकाः ।

दुष्टप्रहेलिकाश्चान्यास्तैरधीताश्चतुर्दश ॥१०६॥

འདི་དག་ གཤམ་ཚོགས་ བཅུ་དྲུག་སྟེ །

སྒྲོན་གྱི་སྒྲོབ་དཔོན་རྣམས་ཀྱིས་ བསྟན །

གཤམ་ཚོགས་ ངན་པ་ གཞན་དག་ ཀྱང་ །

བར་བཞི་ དེ་དག་རྣམས་ཀྱིས་ བརྗོད ། ༡༠༥

दोषानपरिसंख्येयान् मन्यमाना वयं पुनः ।

साध्वीरेवामिधास्यामस्ता दुष्टा यास्त्वलक्षणाः ॥१०७॥

ངན་པ་ མཚན་ཉིད་མེད་ གང་དེ །

སྒྲོན་གྱིས་ ཡོངས་བབྱང་བྱ་མིན་པར །

དེག་ནས་ སྒྲར་ ཡང་ བདག་ཅག་གིས །

ལེགས་པ་ ཁོ་ན་ བརྗོད་པར་བྱ ། ༡༠༧

न मयागोरसामिहं चेतः कस्मात्प्रकुप्यसि ।
अस्थानतुं दितैरेभिरलमालोहितेक्षणे ॥१०८॥

བདག་གིས་ བ་ལང་ རོ་སེས་སྒྱིས་ །
ཤེས་པ་ མེད་ལ་ ཅི་སྒྲན་ ཁྱོེ།
གནས་མིན་དུ་བ་ འདི་ཡིས་ བློ།
ཅི་ཕྱེད་ ཀྱན་དུ་ མིག་དཔར་ས ॥ १०८

कुब्जामासेवमानस्य यथा ते वर्धते रतिः ।
नवं निर्विशतो नारीममरस्त्रीविडम्बिनीः ॥१०९॥

ཀྱུང་བཤེན་པ་ ཁྱོད་ཀྱི་ བློ།
དགའ་བ་ ཇི་ལྟར་ འཕེལ་གྱུར་བ།
འཆི་མེད་བྱ་མེད་ ཅི་འདྲི་ས།
མི་མོ་ སྒྲོད་པས་ དེ་ལྟ་མིན་ ॥ १०९

दण्डे चुम्बति पद्मिन्या हंसः कर्कशकण्टके ।
मुखं घल्गुरवं कुर्वन्मुण्डेनाङ्गानि घट्टयन् ॥११०॥

ཡུ་བར་ འོ་བྱེད་ བད་ཅན་ གྱི །
 ངང་བ་ མོར་མ་ རྒྱ་བོ་ཅན །
 བཞིན་ལ་ སྒྲ་སྒྲན་ སྒྲོགས་བྱེད་ཅིང་ །
 ལུས་ནི་ འདར་བ་བྱེད་ཅིང་ བརྒྱས ། ॥ १०

व्यातयः कनि काले ते स्फातयः स्फीतवल्गवः ।
 चन्द्रे साक्षाद्भवन्त्य[46a]त्र तायवो मम धारिणः ॥११॥

བྱ་མོ་ མཛོས་མ་ ཁྱོད་ ཀང་བར །
 ཀང་བདུབ་ བྱས་བ་ སྒྲ་སྒྲན་ སྒྲོགས །
 མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་གྱར་བ་ འདིར །
 བདག་གི་སྒྲོག་ནི་ བདྟན་ མ་ཡིན ། ॥ ११

अत्रोद्याने मया दृष्टा वल्लरी पञ्चपल्लवा । .
 पल्लवे पल्लवे चार्द्रा यस्याः कुसुममञ्जरी ॥१२॥ .

གང་གི་ ཡལ་འདབ་ ཡལ་འདབ་ལ །
 མེ་དོག་ སྒྲམ་བའི་ དོག་བ་ཅན །

འཁྲི་ཤིང་ ཡལ་འདབ་ ལྔ་བ་ རྟི །

སྤྱིད་མེས་ཚལ་ འདིར་ བདག་གིས་ མཐོང་ ॥ ११३

सुराः सुरालये स्वैरं भ्रमन्ति दशनाच्चिषेण ।

मज्जन्त इव मत्तास्ते सौरे सरसि संप्रति ॥११३॥

ཆང་མ་རྣམས་ རྟི་ ཆང་ཁང་དུ །

སྤྱི་ཡི་འོད་ཀྱིས་ ཅེ་ དགར་ འབྱུངས་ །

ད་རྟི་ སྤྱིས་བར་བྱས་ དེ་རྣམས་ །

རང་གི་རྫོང་བྱར་ བྱིང་བ་ བཞིན་ ། ११३

नासिक्यमध्या परितश्चतुर्वर्णविभूषिता ।

अस्ति काचित्तुरी यस्यामष्टवर्णाह्वया नृपाः ॥११४॥

སྒྲ་ལྔ་ན་དབྱས་གནས་ གསལ་བྱེད་ བཞིས་ །

ཡོངས་སུ་རྣམ་བར་བརྒྱན་བ་ཡི །

གྲོང་ཁྱིམ་ འགའ་ ཡོད་ འགའ་ཞིག་ན་ །

མི་བདག་ ཡིག་ བརྒྱད་མིང་ཅན་ ཡོད་ ॥ ११४

गिरा स्वलन्त्या नम्रेण शिरसा दीनया दृशा ।
तिष्ठन्तमपि सोत्कम्प्य वृद्धे मां नानुकम्पसे ॥११५॥

ऊर्णः कस्य स वः दुःखं प्रपन्नं नृप ।
मर्त्ये च दुःखं विना नृप नृप नृप ।
नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप ।
नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप ॥ ११५ ॥

आदौ राजेत्यधीरास्त्रि पार्थिवः कोपि गीयते ।
सनातनश्च नैवासौ राजा नैव सनातनः ॥११६॥

मर्त्ये च दुःखं विना नृप नृप नृप ।
नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप ।
नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप ।
नृप नृप नृप नृप नृप नृप नृप ॥ ११६ ॥

हनद्रव्यं जनं त्यक्त्वा धनवन्तं व्रजन्ति काः ।

[46b] नानाभङ्गि शताकुष्ठलोका वैश्या न दुर्धराः ॥११७॥

རྩས་བྲལ་ མི་ནི་ བཏང་བྱས་ནས །
 བོར་ལྷན་ནམས་ཀྱི་ བགོད་པ་ གང་ །
 སྤྲོ་ཚོགས་ཀྱོག་བཀུས་འཛིག་དྱིན་འགྲུགས །
 གཟུང་དགའ་ སྤྲོ་འཚོང་ས་ ཡིན་ནོ ॥ ༡༡༡

जितप्रकृष्टकेशाख्यो यस्तवाभूमिसाह्वयः ।
 स मामद्य प्रभूतोत्कं करोति कलभाषिणि ॥११८॥

ཁྱེད་ཀྱི་ ས་མིན་ མིང་ འཕྱན་གང་ །
 རབ་གྱུར་ སྤྲོ་ མིང་ཅན་ལས་ཀྱལ་ །
 དེ་ཡིས་ དེང་ བདག་ མཚོག་དྱིན་ །
 སྤྲོད་ལྷན་བྱེད་དོ་ ལྷན་སྤྲོགས་ས་ ! ༡༡༢

शयनीये परावृत्त्य शयितौ कामिनौ रुषा ।
 तथैव शयितौ रागात् स्वैरं मुखमचुम्बताम् ॥११९॥

འདོད་ལྷན་དག་ནི་ མལ་སྤྲོད་ལ་ །
 མྱོ་བས་ སྤྲིར་ བསྐྱོག་ ཉལ་བར་གྱུར་ །

ཆགས་པས་ རེ་བཞིན་ཉིད་ ཉལ་དེ །
 དལ་བྱ་ཡིས་ནི་ ཁ་དག་ སྤྱོར ༥ ॥ ११०

विजितान्नभवद्वेषिगुरुपादहतो जनः ।
 हिमापहामित्रधरैर्व्याप्तं व्योमाभिनन्दति ॥१२०॥

བྱ་ཀྱལ་ ཟས་སྤྱོས་ དབྱ་ཡི་ནི །
 སྤྱོ་མའི་འདྲ་ཀྱིས་ བཅོམ་ སྤྱོ་བོ །
 ཁ་འཛོམས་ སྤྱོགས་མིན་ འཛོན་པ་ཡིས །
 སྤྱབ་པའི་མཁའ་ལ་ མའོན་པར་དགའ ༥ ॥ ११०

न स्पृशत्यायुधं जातु न स्त्रीणां स्तनमण्डलं ।
 अमनुष्यस्य कस्यापि हस्तोयं न किलाफलः ॥१२१॥

ནམ་ཡང་ མཚོན་ དང་ བྱད་མེད་ཀྱི །
 རྒྱ་མའི་ དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ མ་རེག །
 མི་མ་ཡིན་པ་ འགའ་ཞིག་གི །
 ལག་ནི་ འབྲས་མེད་ མིན་ནོ་ ལོ། ॥ १२१

केन कः सह सम्भूय सर्वकार्येषु सन्निधिं ।
लङ्घ्वा भोजनकाले तु यदि दृष्टो निरस्यते ॥१२२॥

शु'बि'म' म'द' द'द' र'म'म'स'स' व' य'स ।
सु'व' स'स'स'उ'द' उ'व'र'र' ।
स'व' उ'द' उ'स'ग'ि' द'स'द'न'द' ।
म'ल'र' स'स'उ'द' र'र'र'र'र'र' ॥१२३॥

सहया सगजा सेना समटेयन्न चेज्जिता ।
अमात्रिको[47a]यं मूढः स्यादक्षरक्षश्च नः सुतः ॥१२३॥

र'य' म'द' स'र'उ' ।
स' र'र' म'ल'र' स'स'स' ।
स'र'र'र' र'r'g'i' ।
र'r'r' y' s' s' ॥१२४॥

सा नामान्तरितामिश्रा वञ्चितारूपयोगिनी ।
एवमेवेतरासामप्युन्नेयः संकरक्रमः ॥१२४॥

རེ་ནི་ མིང་དུ་ འདུས་པ་ བསྐྱེས།
 བསྐྱེས་པ་ཡི་ནི་ གཞུགས་དང་ལྷན།
 རེ་བཞིན་ཉིད་དུ་ གཞན་ གྱི་ ཡང་།
 འདྲེས་པའི་ རིས་པ་ ཤེས་པར་བྱ། ॥ ༡༥

अपार्थं व्यर्थमेकार्थं ससंशयमपक्रमं ।
 शब्दहीनं यतिभ्रष्टं भिन्नवृत्तं विसन्धिकं ॥१२४॥

རན་ཉམས་ རན་འགལ་ རོན་གཅིག་པ།
 བེ་ཚོས་ཅན་ དང་ རིས་པ་ཉམས།
 སྒྲ་དམན་ ངལ་བསོ་ ཉམས་པ་ དང་།
 སྒྲེབ་སྒྲོར་ཉམས་ དང་ བཚམས་སྒྲོར་བྲལ། ॥ ༡༥

देशकालकलालोकन्यायागमविरोधि च ।
 इति दोषा दशैवैते वर्ज्याः काव्येषु सूरिभिः ॥१२६॥

ཡུལ་དུས་སྒྲུ་ཅལ་ འཛིག་དེན་ དང་།
 ལུང་རིགས་དག་ དང་ འགལ་བ་སྒྲེ།

སྒྲོན་ བཅུ་ དེ་བག་ སྒྲོན་ངག་ལ།

སྒྲོན་ངག་མཁན་གྱིས་ སྤང་བར་བྱ། ॥ १९७

प्रतिष्ठाहेतुदृष्टान्तहानिर्दोषो न *चेत्यसौ ।

विचारः कर्कशः प्रायस्तेन लीढेन कि फलं ॥१२७॥

དམ་བཅའ་ གཏན་ཚིག་ དཔེ་ ཉམས་བ།

ཞེས་པ་ འདི་ ཡང་ སྒྲོན་མིན་ནམ།

ཕལ་ཆེར་ དབྱད་པ་ དཀའ་བ་ཉིད།

སྤང་བ་ དེ་ཡིས་ འབྲས་བྱ་ ཅི། ॥ १९८

समुदायार्थशून्यं यत्तदपार्थमितीष्यते ।

तन्मत्तोन्मत्तबालानामुक्तेरन्यत्र दुष्यति ॥१२८॥

ཚིགས་པའི་ཐོན་ གྱིས་ སྤང་པ་ གང་།

དེ་ནི་ ཐོན་ ཉམས་ ཞེས་པར་ འདོད།

སྒྲོན་པ་ སྒྲོན་པ་ གྱིས་པ་ཡིས།

བརྗོད་ ལས་ གཞན་ལ་ དེ་ སྒྲོན་ནོ། ॥ १९९

समुद्रः पीयते सोयमहमद्य जरातुरः ।

अमी गर्जति जी[47b]मूता हरेरैरावतः प्रियः ॥१२६॥

འདི་ནི་ གྱུ་མཚོ་ འཕྱང་བྱེད་དེ།

བདག་ རི་ དེ་རིང་ ག་བས་ གཞིར །

ལྷན་ འདེ་ རབ་ཏུ་སྒྲིགས་ཐེང་ དེ།

འབྲོག་བྱེད་ ས་སྤངས་ དག་ལ་ དགའ ॥ ༡༥༧

इदमस्वस्थचित्तानामभिधानमनानन्दतम् ।

इतरत्र कविः को वा प्रयुञ्जीतैवमादिकं ॥१३०॥

འདི་ སེམས་ རྟལ་དུ་ མ་གནས་པའ

མངོན་པར་བརྗོད་པ་ ལྷན་ གིན་དེ།

གཞན་དུ་ དེ་ལྟ་བུ་ ལ་སྟོན།

སྒྲུབ་པ་མཁན་པོ་ སྤུ་ཞིག་ སྤྱོད་ ༥༥༥

एकवाक्ये प्रबन्धे वा पूर्वापरपराहतं ।

विरुद्धार्थतया व्यर्थमिति दोषेषु पठ्यते ॥१३१॥

རག་གཅིག་ གམ་ནི་ རྒྱན་ལ་ ཡང་ །
 སྒྲ་མ་ སྒྲི་མ་ གཞན་ འཛོམས་པ་ །
 འགལ་བའི་ རོན་ཅན་ ཉིད་ཀྱི་སྒྲོན་ །
 རོན་ འགལ་ ཞེས་པར་ རབ་དུ་བཞེད་ ॥ १३१

जहि शत्रुकुलं कृत्स्नं जय विश्वंभरामिमां ।
 न च ते कोपि विद्वेष्टा सर्वभूतानुकम्पिनः ॥१३२॥

དག་ རིགས་ མགའ་དག་ འཛོམས་པ་ དང་ །
 རྒྱ་ཚོགས་ ཁར་ འདི་ རྒྱལ་གྱུར་ཅིག་ །
 འགྲུང་བོ་ རྒྱན་ལ་ བརྟེ་བ་ཅན་ །
 ཁྱོད་ལ་ དག་ནི་ སྒྲ་ ཡང་ མེད་ ॥ १३२

अस्ति काचिदवस्था सा सामिषंगस्य चेतसः ।
 यस्यां भवेदभिमता विरुद्धार्थापि भारती ॥१३३॥

མངོན་པར་ཆགས་ལྡན་ མེས་པ་ལ་ནི་ །
 སྒྲ་བས་ དེ་ འགའ་ཞིག་ ཡོད་པས་ན་ །

གང་ལ འགལ་བའི་ རོན་ཅན་ གྱི །

ཆོག་ ཀྱང་ མངོན་པར་འདོད་པར་འགྱུར ༥ ༡༣༢

परदारामिलाषो मे कथमार्यस्य युज्यते ।

पिबामि तरलन्तस्थाः कदा नु दशनच्छदं ॥१३४॥

གཞན་གྱི་ བུད་མེད་ལ་ མེད་པ །

འབགས་པ་དག་གི་ ག་ལ་ རིགས །

དེ་ཡི་ སོ་སྒྲིབ་ གཡོ་བ་ དག །

བདག་ནི་ ཉམ་ཞེག་ འགྱུང་འགྱུར་རམ ༥ ༡༣༣

अविशेषेण पूर्वोक्तं यदि भूयोपि कीर्त्यते ।

अर्थतः शब्दतो वापि तदेकार्थं मतं यथा ॥१३५॥

རོན་ཅིད་ དམ་ནི་ སྒྲ་ལ་ ཡང་ །

ཁྱད་པར་ མེད་པ་ སྒར་ བརྗོད་པ །

གཡ་ནི་ སྒར་ཡང་ རབ་བསྐྱགས་པ །

དེ་ ཉི་ རོན་ གཅིག་པར་ འདོད་ དཔོར ༥ ༡༣༤

उत्का[48a]मुन्मनयन्त्येते बालां तद्वलकत्विषः ।
अम्भोधरास्तडित्वन्तो गम्भीराः स्तनयिजवः ॥१३६॥

शेद'प' शेद'शेद' सु'खे'क'स' ।
दे'यी' ल'क'सु'दे' दे'दे'दे'क' ।
कु'दे'दे' सु'दे'दे'दे'दे'दे' ।
दे'दे'दे' सु'दे'दे'दे' दे'दे'दे'दे' ॥ १३७

अनुकम्पाद्यतिशयो यदि कश्चिद्विषयते ।
न दोषः पुनरुक्तोपि प्रत्युतेयमलंकृतिः ॥१३७॥

दे'स'सु'दे'दे' दे'दे'दे' दे'दे'दे' ।
दे'दे'दे' दे'दे'दे'दे' दे'दे'दे' दे'दे'दे' ।
दे'दे'दे' दे'दे'दे'दे' दे'दे'दे'दे' ।
दे'दे'दे' दे'दे'दे' दे'दे'दे'दे' ॥ १३८

हन्यते सा वरारोहा स्मरेणाकाण्डवैरिणा ।
हन्यत वारसर्वाङ्गी हन्यते मञ्जुभाषिणी ॥१३८॥

འདོད་པ་ སྐབས་ མིན་ ཁན་པ་ཡིས།
 བྱད་མེད་ མཆོག་ དེ་ བཅོམ་པར་གྱུར།
 ཡན་ལག་ཀྱན་མཛེས་ བཅོམ་པར་གྱུར།
 འཇམ་པར་སྒྲོགས་མ་ བཅོམ་པར་གྱུར ॥ 232

निष्कर्णार्थम्युक्तानि संशयं जनयन्ति चेत् ।
 वचांसि दोष एवास्मै ससंशय इति स्मृतः ॥१३६॥

ཇེས་པའི་དོན་དུ་ རབ་སྐྱར་བའི།
 ཚོག་རྣམས་ཉིད་ཀྱིས་ གཤམ་ཏེ་ན།
 བྲེ་ཆོམ་ སྒྲིད་པར་བྱེད་ ཅ་ འདི།
 བྲེ་ཆོམ་ཅན་ ཞེས་ རབ་དུ་བཤད་ ॥ 233

मनोरथप्रियालोकरसलोलेश्वरे सखि ।
 आराद्धृत्तिरसौ माता न क्षमा द्रष्टुमीदृशं ॥१४०॥

རེ་འདོད་ དགའ་བ་ ལྷ་བ་ ཡི།
 རོ་ལ་ མིག་གཡོ་ སྒྲོགས་མོ་དང་།

གྲང་ན་ འདྲག་མ་ནི་ ས་མ་ འདིས་ ।
 འདི་འདྲ་ བཟ་བར་ བཟོད་ས་ཡིན ॥ ༡༠

ईदृशं संशयायैव यदि जातु प्रयुज्यते ।
 स्यादलंकार एवामो न दोषस्तत्र तद्यथा ॥१४१

འདི་འདྲ་ བྱེ་ཆོས་ སྤྲད་ ཉིད་དུ་ ।
 གཤམ་དེ་ འགའ་ཞིག་ རབ་སྤྲར་ན་ ।
 འདི་ནི་ གྲན་ ཉིད་དུ་ འགྱུར་གྱི་ ।
 རེ་ལ་ སྤྱོན་མེད་ འདི་ལྟ་སྟེ ॥ ༡༡

पश्याम्यनङ्गजातङ्कलङ्घितां तामनिन्दिताम् ।
 कालेनव क[48b]ठोरेण ग्रस्तां कि नस्त्वदाशया ॥१४२॥

ལྷས་སྤྱེས་ མིན་པའི་ གདུང་བ་ཡི་ ।
 རྩལ་གྱིས་ མཉན་ཅིང་ ཏུས་ རྩབ་མོས་ ।
 རྩོས་པའི་ མ་སྤྲད་ས་ རེ་མཐོང་ ।
 ལ་ བདག་གི་ རེ་བས་ ཅི ॥ ༡༢

འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱི་ གནས་པ་ དང་ །
 སྤྱལ་དང་ འཇིག་རྒྱུ་ མ་སྦྱིས་པ་ །
 བདེ་འབྱུང་ སྤེང་མེད་ རྩ་སྦྱིས་ཀྱི་ །
 སྦྱི་གནས་ཅན་ གྱིས་ བྱིད་རྣམས་ སྤངས་ ॥ ༡༮༥

यत्नः सम्बन्धविज्ञानहेतुः कोपि कृतो यदि ।
 क्रमलङ्घनमप्याहुर्न दोषं सूरयो यथा ॥१४६॥

འབྲེལ་པ་ ཇིས་པར་ཤེས་པའི་ རྒྱུར་ །
 བཤང་ཡང་ བཤེད་ འབད་ བྱས་ན་ །
 རིས་པ་ འདས་ ཀྱང་ སྦྱོན་མེན་པར་ །
 མཁས་པ་རྣམས་ རི་ སྦྱ་སྦྱེ་ དཔེར་ ॥ ༡༮༦

बन्धुत्यागस्तनुत्यागो देशत्याग इति त्रिषु ।
 आद्यान्तावायतक्लेशौ मध्यमः क्षणिकज्वरः ॥१४७॥

བཞེན་གཏོང་བ་ དང་ ལུས་གཏོང་དང་ །
 ཡུལ་གཏོང་ ཞིས་པ་ བསྐྱུམ་པོ་ ལ་ །

དང་པོ་ མཐའ་མ་ ཉན་མོངས་ རིང་ །
 བར་མ་ སྐད་ཅེག་ གཏུང་བ་ལོ ༥ ༡༧

शब्दहीनमनालक्ष्यलक्ष्यलक्ष्यणपद्धतिः ।
 पदप्रयोगो शिष्टेष्टो न शिष्टेष्टस्तु दुष्यति ॥१४८॥

མཆོད་བྱ་ མཚན་ཉིད་ ལས་ ས་མཆོད་ །
 ཆོག་སྒྲོང་ སེམས་གིས་ མི་འདོད་པ་ །
 སྒྲ་ཉམས་ ཡིན་ཏེ་ སེམས་རྣམས་ དག །
 འདོད་པ་ ཉིད་ནི་ སྒྲོན་ མ་ཡིན ༥ ༡༨

[49a] अवते भवते बाहुर्महीमणवशकरीं ।
 महाराजन्नजिज्ञासौ नास्तीत्यासां गिरां रसः ॥१४९॥

ས་གཞི་ གྱ་མཆོའི་ སྒྲེ་རགས་ཅན །
 གྱལ་ཆེན་ བྱིད་ལ་ དབྱང་བ་ སྒྲུང་ །
 ཞེས་པ་ ཤེས་འདོད་ མེད་བས་ན །
 ཆོག་ འདི་ལ་ བློ་ ཉམས་ ཡིན་མིན ༥ ༡༩

दक्षिणाद्वैरूपसरन् मारुतश्चूतपादपान् ।
कुरुते ललिताधूतप्रबालांकुरुशोभिनः ॥१५०॥

ह्येयं रीत्यस्य त्रैवर्ग्यं च ।
ह्रस्वस्य ह्रस्वस्यैव ह्रस्वस्यैव ।
ह्रस्वस्य ह्रस्वस्यैव ह्रस्वस्यैव ।
ह्रस्वस्य ह्रस्वस्यैव ह्रस्वस्यैव ॥ १५०

इत्यादिशास्त्रमाहात्म्यदर्शनालम्बेनसां ।
अपभाषणवद्भाति न च सौभाग्यमुज्झति ॥१५१॥

तेन सौभाग्यं वदन् वदन् वदन् ।
ह्रस्वस्य ह्रस्वस्यैव ह्रस्वस्यैव ।
ह्रस्वस्य ह्रस्वस्यैव ह्रस्वस्यैव ।
ह्रस्वस्य ह्रस्वस्यैव ह्रस्वस्यैव ॥ १५१

श्लोकेषु नियतस्थानं पदच्छेदं यतिं विदुः ।
तदपेतं यतिभ्रष्टं श्रवणोद्वेजनं यथा ॥१५२॥

ཚོགས་བཅད་རྣམས་ལ་ ཇེས་བཞི་གནས།
 ཚོག་གི་གཅོད་སའྲམས་ ངལ་བསོ་ རིག།
 དེ་ཉམས་ གཅོད་སའྲམས་ ཉམས་བ་ ལྷེ།
 ཉན་བ་ དགའ་མིན་ སྦྱོད་དེ་ དཔེར ॥ ༡༥

स्त्रीणां संगीतविधिमयमादित्यवंशो नरेन्द्रः
 पश्यत्यङ्घ्रिष्टरसमिह शिष्टैरमेत्यादि द्रुष्टं ।
 कार्याकार्याण्ययमविकलान्यागमेनैव पश्यन्
 वश्यामुर्वी वहति नृप इत्यस्ति चौष प्रयोगः ॥१५३॥

བྱད་མེད་ རྣམས་ཀྱི་ ཡང་དག་བཅོད་བཞི་ཚོག་ རོ་ཉམས་
 མེད་བ་འདིར།
 སའྲམས་རྣམས་ དང་ འགྲོགས་ མི་དབང་ ཉི་མའི་རིགས་
 འདིས་ ལྷ་བྱེད་ ལ་སོགས་ སྦྱོན།
 བྱ་དང་ བྱ་མིན་ སའྲམས་མེད་ལ་ ལྷང་ ཉིད་ཀྱིས་ནི་
 ལྷ་བྱེད་ཅིང་།
 མི་བདག་ འདི་ཡིས་ དབང་གྱུར་ ས་འདོན་
 ཅེས་བ་ དེ་ལྟར་ སྦྱོར་བ་ཡོད། ॥ ༡༥

लुप्ते पदान्ते [49b]शिष्टस्य पदत्वं निश्चितं यथा ।
तथा सन्धिविकारान्तं पदमेवेति वर्ण्यते ॥१५४॥

है'ङ्'र' कौ'म'स'र' श्रु'स'व'य ।
श्रु'म'स' कौ'म'र'र'र' र'स'व ।
र'व'र'र' म'र'म'स'र'र' क'म'र'र'र' म'स'र ।
कौ'म'र'र' र'स'र'र' म'र'र'र'र' ॥ १५५ ॥

तथापि कटु कर्णानां कवयो न प्रयुज्यते ।
ध्वजिनी तस्य राक्षः केतूदस्तजलदेत्यदः ॥१५६॥

रै'ङ्'र' य'र' क'म'र'र'र'र' ।
श्रु'म'स'र'र' क'म'स'र' म'र'र'र'र' ।
श्रु'म'र' र'य'र' श्रु'म'म'र'र'र' ।
रै'ङ्'र'र'र' क'म'र'र'र' म'र'र'र'र' ॥ १५७ ॥

वर्णानां न्यूनताधिक्ये गुरुलघ्वयथास्थितिः ।
यत्र तद्भिन्नवृत्तं स्यादेष दोषः सुनिन्दितः ॥१५८॥

གང་དུ་ ཡི་གེ་ཆད་ལྷག་དང་ །

ལྷ་ཡང་ ཇི་ལྷ་བཞིན་ མི་གནས་ །

དེ་ནི་ སྒྲེབ་སྒྲོར་ ཉམས་པ་ ལྟེ་ །

སྒྲོན་ འདི་ ཡིན་དུ་ སྒྲད་བའོ་ ॥ १७५

इन्दुपादाः शिशिराः स्पृशन्तीत्यूनवर्णता ।

सहकारस्य किसलयान्यार्द्राणीत्यधिकाक्षरम् ॥१५७॥

ལྷ་བའི་འོད་ཟེར་ བསིལ་བས་ །

རིག་ཅས་ ཡི་གེ་ ཉུང་བ་ཉིད་ །

ས་ཏ་ཀླ་རའི་ལོ་འདབ་ གསར་བ་རྣམས་ །

སྒྲུམ་ཞེས་ ཡི་གེ་ ལྷག་བའོ་ ॥ १७६

कामेन बाणा निशिता वियुक्ता मृगेक्षणास्त्रित्ययथागुह्यं ।

मदनबाणा निशिताः पतन्ति मृगेक्षणास्त्रित्ययथालघुत्वं ॥१५८॥

འདོད་བས་ མདའ་རྣམས་ རི་དགས་མིག་ཅན་ལ་ །

རྣམས་པར་འཕངས་ཞེས་ ལྷི་བ་ ཇི་བཞིན་མིན་ །

མཛེས་པའི་མིག་ཅན་ རག་ལ་ ཟློས་བྱེད་གྱི །
 མདའ་སྟུན་ ལྷུང་ ཞེས་ ཡང་བ་ཇི་བཞིན་མིན ༥ ༡༣༤

न संहितां विवक्षामीत्यसन्धानं पदेषु यत् ।
 तद्विसन्धीति निर्दिष्टं न प्रगृह्यादिहेतुकं ॥१५६॥

བསྟུས་པ་ བརྗོད་པར་ མི་འདོད་ཅེས །
 རྟོག་ལ་ མཆོས་ས་སྟོར་མེད་པ་ གང་ །
 ཡ་ལྟེས་ ལ་སྟོགས་ རྒྱ་མེད་པ །
 དེ་ནི་ མཆོས་ས་སྟོར་བྲལ་ ཞེས་ བསྟུན ༥ ༡༣༥

मन्दानिलेन चरता अङ्गनागण्डमण्डले ।
 लुप्तमुग्धेदि [50a]धर्माभ्यो नभस्यस्मन्मनस्यपि ॥१६०॥

མཁའ་ རང་ བདག་གི་ཡིད་ལ་ ཡང་ །
 ལྷུང་ནི་ དལ་བྱ་ རྒྱ་བ་ ཡིས །
 བྱད་མེད་ འགྲམ་པའི་ དགྱིལ་འཁོར་ལ །
 རལ་གྱི་ཐུ་རྒྱས་ མེལ་བར་བྱེད ༥ ༡༥༠

[मानेष्ट्ये इह शीर्यते स्त्रीणां हिमऋतौ प्रिये ।]

आसु रात्रिष्विति प्राश्नैरक्षातं न्यङ्गमीदृशं ॥१६१॥

1

མཚན་མོ་ འདི་ལ་ ཅེས་ འདི་འདྲ།

མཁས་པས་ ཉམས་པར་ རིག་མི་བྱེད ༥ ༡༩༩

देशोऽद्रिवनराष्ट्रादिः कालो रात्रिन्दिवर्त्तवः ।

नृत्यगीतप्रभृतयः कला कामार्थसंश्रयाः ॥१६२॥

རི་ནགས་ ཡུལ་འཁོར་ ལ་སོགས་ ཡུལ །

ཉིན་ མཚན་ ཏུས་ཏུག་ ལ་སོགས་ ཏུས་ །

འདོད་པའི་ རོན་ལ་ བསྟེན་པ་ ཡི།

གར་དང་སྐུ་སོགས་སྐུ་ཙམ་དེ ༥ ༡༩

चराचराणां भूतानां प्रवृत्तिलोकसंक्षिता ।

हेतुविद्यात्मको न्यायः सस्मृतिः श्रुतिरागमः ॥१६३॥

འབྲུང་པོ་ གྲུ་ དང་ མི་གྲུ་བའི།
 འཇུག་པ་ འཇིག་རྟེན་ མིང་ཅན་ནི།
 རིགས་པ་ གཏན་ཚིགས་ རིག་ བདག་ཉིད་།
 བློས་ བཅས་ གསུངས་པ་ ལུང་ ཉིད་དེ ॥ ༡༩༢

तेषु तेषु यथारूढं यदि किञ्चित्प्रवर्त्तते ।
 कवेः प्रमादाद्देशादिविरोधीत्येतदुच्यते ॥१६४॥

དེ་དེར་ ཇི་ལྟར་ གསུགས་པ་ བཞིན།
 མིན་པར་ གལ་ཏེ་ རབ་བྱུགས་ན།
 ལྷན་ངག་མཁན་པོ་ བག་མེད་ ལས།
 འདི་ནི་ ཡུལ་ སོགས་ འགལ་ཞེས་ བཞིན་ ॥ ༡

कर्पूरपाद्मपास्पशीं सुरभिर्मलयानिलः ।
 कलिङ्गवनसंभूता मृगप्रायमतंगजा ॥१६५॥

ག་ཏུར་ ཀླང་འབྲུང་ལ་ རིག་པའི།
 མ་ལ་ལ་ ལྷང་ རི་བཟང་ཅན།

ཀ་ལྷོ་ཡི་ རྒྱལ་སྤྱོད་པའི།

སྤྱང་པོ་ དག་ནི་ རི་དགས་ མང་ ॥ ༡༤༧

चोलाः कालागुरुश्यामः कावेरीतीरभूमयः ।

इति देशविरोधिण्या वाचः प्रस्थानमीदृशम् ॥१६६॥

ཙོ་ལ་ཀུ་བོ་རི་ རྒྱལ་སྤྱོད་པའི།

ཨ་ཀ་རུ་ རི་དག་པོ་སྤྱོད་ ॥

ཞེས་པ་ ཡུལ་ དང་ རྒྱལ་པ་ཡི།

ཆོག་གི་ རྒྱལ་པ་ རི་དག་ སྤྱོད་ ॥ ༡༤༨

पद्मिनी नक्तमुज्जिद्रा स्फुटत्यह्नि कुमुद्वती ।

मधुरस्फुल्लनिचुलो निदाघो[50b]मेघदुर्दिनः ॥१६७॥

པདྨ་ཙན་ནི་ མཚན་མོ་ སྤྱོད་ །

ཉིན་པར་ ཀུ་སྤྱང་ལྷན་པ་ གསལ།

དབྱིད་ནི་ རི་ཙུ་ལ་ རབ་སྤྱོད་ །

སོས་ཀ་ དག་ནི་ སྤྱོད་ གྱིས་ གཏིབས་ ॥ ༡༤༩

श्रव्यहंसगिरो वर्षाः शरदामत्तवर्हिणी ।

हेमन्तो निर्मलादित्यः शिशिरः श्लाघ्यचन्दनः ॥१६८॥

ངང་པའི་ སྒྲ་ནི་ དབྱར་ མཉན་འོས། ।

ཕྱོད་ ནི་ མ་བྱ་ཕྱིས་པ་ སྟེ།

དབྱན་ཕྱོད་ ཉི་མ་ གི་མ་མེད། ।

དབྱན་ནི་ ལ་ཕྱན་ བསྐྱལ་པར་འོས། ॥ ༡༥༨

इति कालविरोधस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।

मार्गः कलाविरोधस्य मनागुद्दिश्यते यथा ॥१६९॥

ཞེས་པ་ འདི་འདྲ་ ཏུས་ དང་ནི།

འགལ་བའི་ལྷགས་དག་ བསྐྱར་བ་ཡིན། ।

སྒྲ་ཙམ་ དག་ དང་ འགལ་བའི་ལམ། ।

ཅུང་ཟད་ བསྐྱར་པར་བྱ་སྟེ་ དཔེར། ॥ ༡༥༩

वीरशृङ्गारयोर्भावौ स्थायिनौ क्रोधविस्मयौ ।

पूर्णसत्तस्वरः सोयं भिन्नमार्गः प्रवर्तते ॥१७०॥

དཔལ་ རང་ གླེག་བའི་ཡིད་བྱེད་ཀྱི།
 གནས་ཅན་ ཁྱོད་ རང་ ཡ་མཚན་ནོ།
 དབྱངས་ བདུན་ རྩོགས་པ་ འདི་དག་ནི།
 བ་དད་ ལས་དུ་ རབ་དུ་འཇུག། ॥ १७०

इत्थं कलाचतुःषष्टौ विरोधः साधु नीयतां ।
 तस्याः कलापरिच्छेदे रूपमाविर्भविष्यति ॥१७१॥

འདི་ལྟར་ སྐྱུ་རྩལ་དུག་ཅུ་བཞིར།
 འགལ་བ་ ལྷགས་པར་ རྟགས་པར་བྱ།
 སྐྱུ་རྩལ་ ཡོངས་སུ་བཅད་བ་ལས།
 དེ་ཡི་རང་བཞིན་ གསལ་བར་འགྱུར། ॥ १११

आधृतकेशरो हस्ती तीक्ष्णशृंगस्तुरंगमः ।
 गुरुसारोयमेरण्डो निःसारः खदिरद्रुमः ॥१७२॥

སྤང་པོ་དག་ནི་ རལ་བ་ གཡོ།
 རྟ་ཡི་རྩ་ནི་ རོ་བ་ ཡིན།

ཨེ་རཏྲ་འདི་ ལྷིང་པོ་ ལྷུ།

སྤང་མྲེང་ ལྷོན་པ་ ལྷིང་པོ་མེད ༥ ॥ १११

इति लौकिक एवायं विरोधः सर्वगर्हितः ।

विरोधो हेतुविद्यासु न्यायाख्यासु निदर्श्यते ॥१७३॥

ཅས་པ་ འདི་ནི་ འཇིག་རྟེན་པ།

ཉིད་ དང་ འགལ་པ་ ཀྱན་གྱིས་སྦྱང །

རིགས་པ་ ཞེས་བྱ་ གཏན་ཚིགས་ཀྱི།

རིག་པ་དང་འགལ་ བཤད་པར་བྱ ༥ ॥ ११२

सुगतैः संस्कृताभङ्गः सत्यमेवोदितोऽपिचेत् ।

तथापि सा चकोराक्षी स्थितैवाद्यापि मे हृदि ॥१७४॥

བདེ་གཤེགས་ འདུས་བྱས་ འཇིག་པར་ནི།

གསུངས་པ་ བདེན་མེད་ དེ་ལྟ་ནའང་།

ཙ་ཀོ་ར་ཡི་མིག་ཅན་ དེ།

བདག་གི་ ལྷིང་ལ་ ད་དུང་ གནས ༥ ॥ ११३

कापिलैरसदुद्भूतिः [5।a]स्थान एवोपवर्ण्यते
असतामेव दृश्यन्ते यस्मादस्माभिर्दुद्भवाः ॥१७५॥

सि०'सु०'व'कृ०स'सि०'कृ०स'गु० ।
सु०'व' ग'कृ०'व'०'०'०' व००० ।
०'सु०' व'ग'०'ग'कृ०स'गु०' ० ।
सि०'कृ०स' व'०' सु०'व' व००० ॥ १७५ ॥

गतिन्यायविरोधस्य सैषा सर्वत्र दृश्यते ।
अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते ॥ ॥१७६॥

सि०'स'०'०' ०' ०'ग'०'व'०' ।
सु०'स' ०'०' ग'०'०'०'०'०' ।
०'०' ०' ०' ०'ग'०'व'०' ।
०'ग'०'०'०' ०' ०'०'०'०'०' ॥ १७६ ॥

अनाहिताग्नयोप्येते जातपुत्रा वितन्वते ।
विप्रा वैश्वानरीमिष्टिमह्निष्टाचारमूषणाः ॥१७७॥

མེན་གྱི་བཞག་པ་མ་ཡིན་ཡང་།
 བྱ་སྒྲིམ་བྱ་མ་ཟེ་མ་ཉམས་པའི་
 སྒྲིང་པས་བརྒྱན་པ་འདི་དག་ནི།
 བོ་ཤུན་རྩི་མཚོད་སྒྲིན་བྱེད་॥ ༡༧༧

असावनुपनीतोपि वेदानधिजगे गुरोः ॥
 स्वभावशुद्धः स्फटिको न संस्कारमपेक्षते ॥१७८॥

འདི་ནི་ཚོག་མ་བྱས་ཀྱང་།
 མ་མ་དག་ལས་རིག་བྱེད་བཟུགས།
 རང་བཞིན་དག་པའི་ཤེལ་དག་ནི།
 འདྲ་བྱེད་གཞན་ལ་ལྷོས་པ་མེད་॥ ༡༧༨

विरोधः सकलोप्येष कदाचित्कविकौशलात् ।
 उत्क्रम्य दोषगणानां गुणवैरिथिं विगाहते ॥१७९॥

ནི་མཐའ་དག་འདི་ལ་ཡང་།
 དེས་འགའ་སྟུན་ངག་མཁན་མཁས་པས་

སྒྲིན་གྱི་གྲངས་ ལས་ རབ་འདས་ནས
ཡོན་དན་ ལས་ནི་ རྣམ་པར་འཛིན་ ॥ ११०

तस्य राज्ञः प्रभावेन तदुद्यानानि जह्विरे ।
आर्द्रांशुकप्रबालानामास्पदं सुरशाखिनां ॥१८०॥

ཀླུ་པོ་ དེ་ཡི་ མཐུ་ཡིས་ རི་ ।
དེ་ཡི་ སྒྲིང་རྩལ་ ལྷ་རྣམས་གྱི་ ।
ལྷོན་པ་ ཡལ་འདབ་ གོས་སྒྲུམ་ དང་ ।
ལྷན་པ་དག་གི་ གནས་སུ་གྱར་ ॥ १२०

राज्ञां विनाशपिशुनश्चचार खरमारुतः ।
धुन्वन्कदम्बरजसा सह सप्तच्छदोद्गमान् ॥१८१॥

ཀླུ་པོ་ འཛིག་པ་ གསལ་བྱེད་པ་ ।
དག་པོ་ཡི་ རི་ རྒྱང་དག་གྱི་ ।
འདབ་ བདུན་ལས་ འཁྲུངས་ སྒྲིང་བྱེད་ཅིང་ ।
ཀ་དམུ་ཡི་ རྩལ་དང་ འབྲོགས་ ॥ १२१

दोलातिप्रेरणत्रस्त[51b]बधूजनमुखोद्गतं ।
कामिनां लयवैषम्याद्वेयं रागमवर्धयत् ॥१८२॥

- त्रिंशत् श्रिंशत् रचंश्रुत् श्रृणं च यी ।
श्रुंषो सुदंशेदं षसं वद्वेदं श्रु ।
श्रुवसं शिंश्रुशं चसं अद्वेदं श्रु ।
श्रुणं च दंशं शिं अद्वेदं च सुदं ॥ १८३

ऐन्दवादूर्चिषः कामी शिशिरं हव्यवाहनं ।
अबलाविरहद्वेशविह्वलो गणयत्ययं ॥१८३॥

- श्रुं वद्वेदं अद्वेदं चसं वसिं च ।
वसिं च सुदं अद्वेदं चसं अद्वेदं श्रुं शिं ।
सुदं शिं दं च सुदं श्रुं शिं चसं श्रिंशत् ।
अश्रुणं च अद्वेदं चसं श्रुं च सुदं ॥ १८४

प्रमेथोप्यप्रमेथोसि सकलोप्यसि निष्कलः ।
एकस्त्वमप्यनेकोसि नमस्ते विभ्वमूत्तये ॥१८४॥

གནལ་བྱ་ ཡན་ ཡང་ གནལ་བྱ་མིན།

ཆ་ལྷན་ཡིན་ ཡང་ ཆ་ལྷན་ མིན།

གཅིག་ཉིད་ཡིན་ ཡང་ གཅིག་ཉིད་མིན།

སྒྲ་ཆོགས་ གཞུགས་ བྱིད་ལ་ ཕྱག་འཆེལ། ॥ ༡༨=

पञ्चानां पाण्डुपुत्रानां पत्नी पाञ्चालकन्यका ।

सतीनामग्रणीश्चासीद्वैवो हि विधिरिदृशः ॥१८५॥

སྒྲ་བསེང་བྱ་ལྔ་ དག་ གི་ནི།

རྒྱང་མ་ ལྔ་ལེན་ བྱ་སྟེ་སྟེ།

དག་པ་ནས་སྒྲི་ མཆོག་ཏུ་ བྱུང་།

འདི་འདྲ་ ལྔ་ཡེ་ སྒྲ་བ་བྱེད་པོ། ॥ ༡༨=

शब्दार्थालंक्रियाश्चित्रा मार्गाः सुकरदुष्कराः ।

गुणा दोषाश्च काव्यानामिति संक्षिप्य दर्शिताः ॥१८६॥

སྒྲ་དོན་ རྒྱན་ རི་ བཟ་བ་ དང་།

བྱ་སྒྲ་ བྱ་དཀར་ དག་གི་ལས།

སྒྲིན་ངག་ནམས་ཀྱི་ ཡོན་ཏན་ སྒྲིན་ ।

དེ་ལྟར་ མདོར་བསྡུས་ རབ་དུ་བསྡུན་ ॥ ༡༥

व्युत्पन्नबुद्धिरमुना विधिदर्शितेन

मार्गेण दोषगुणयोर्वशवर्त्तिनीभिः ।

वाग्भिः कृताभिसरणो मद्दिरेक्षणाभि

र्थन्यो युवेव रमते लभते च कीर्त्तिम् ॥ १८७

སྒྲུབ་ཤེད་ བསྡུན་བའི་ལམ་འདིས་ སྒྲིན་ དང་ ཡོན་ཏན་དག།

རབ་དུ་རྟོགས་བའི་རྩོུན་ སྐལ་བཟང་དབང་གྱུར་བའི་ ।

མོག་ དང་ མདོར་བར་འགྲོགས་བྱས་ རང་མིག་མ་ དག་དང་ ।

ལང་མོ་ཏན་ བཞིན་ དགའ་དང་ གྲགས་པ་ ཐོབ་བར་འགྱུར་ ॥ ༡༨༧

इत्याचार्यदण्डिनः कृतौ काव्यालंकारे दुष्करदोषविभागो नाम

तृतीयः परिच्छेदः समाप्तः ॥

ཞེས་པ་སྒྲོབ་དཔོན་དབྱག་པ་ཏན་གྱིས་ མཛད་པ་ སྒྲིན་ངག་གི་སྒྲིན་ལས་

བྱ་དགའི་ནམ་པར་བཅད་པ་ རྩེ་ ཡེའུ་ གསུམ་པ་ རྩོགས་སོ་ ॥

CORRIGENDA

Chap. I. 17^b *वर्णनैः for व*र्णनैः ; 27^o ཡ་ཤུ་སའི for ཡ་ཤུ་སའ ;
 39^a साम्या (?) for शाम्या in Tib. transliteration ; 85^d विद्यते for *सुम् ;
 86^b भवाद्दश for भवादश ; 98^b स्तनुन्यो for स्तनन्यो.

Chap. II. 14^c དབེ for དབྱེ ; 37^b གཤོང for གཤང ; 40^o स्पर्श for
 स्पर्श ; 45^d मौस for मौस ; 66^b नखाचिषः for नखाचिषः ; 77^a इदमार्द्र for इद-
 माद्र ; 9^o नतिते for नतिते ; 86^a राजहंसो for राजहंसा ; 86^c बह्ना for बह्ना ;
 86^b སྒྲོད for སྒྲུད ; 91^b निर्दहति for निदहति and निर्दयं for निदयं ;
 125^a འིན་ཏུ for འིན་ཏ ; 142^b གཡ་ཏེ for གཡ་ཏ ; 182^b མན་སྒྲུ
 for མན་སྒྲུ ; 206^d सोयं for सायं ; 207^d རྩེད for རྩེད ; 233^b ཅུ་ཅུ་ for
 ཅུ་ཅུ་ ; 234^o *द्विष्टं for द्वष्टं ; 237^a विकार्ये for विकार्य ; 279^b སྒྲེལ for
 སྒྲེལ ; 282^o रमवत्त्व for रसवत्त्व ; 287^d གྲུར་བ for གྲུར་བ ; 306^b दशिता
 for दशिता ; 312^d དབེར་བཟློད for དབེར་བཟློད ; 313^b གསལ་བར་སྒྲོན for
 གསལ་བ་སྒྲོན.

Chap. III. 17^a བྱོད for བྱོད ; 19^o वर्यन्ते for वरयन्ते ; 13^d स्पृशोद्दशां
 for स्पृशोद्दशां ; 31^o རྒྱུང for རྒྱུང ; 39^o སྒྲུ for སྒྲུ ; 54^a वज्यः for वज्यः ;
 68^b རབ་ཏུ for རབ་ཏ ; 69^a གྲུར for གྲུར ; 80^o གྲུན་ཏུ for
 གྲུན་ཏ ; 83^d དབེ་ཏུ for དབེ་ཏ ; 158^o बाणा for वारण ; 184^a विश्वमूर्तये
 for विश्वमूर्तये ; 185^a पाण्डुपुत्राणां for पाण्डुपुत्राणां.

